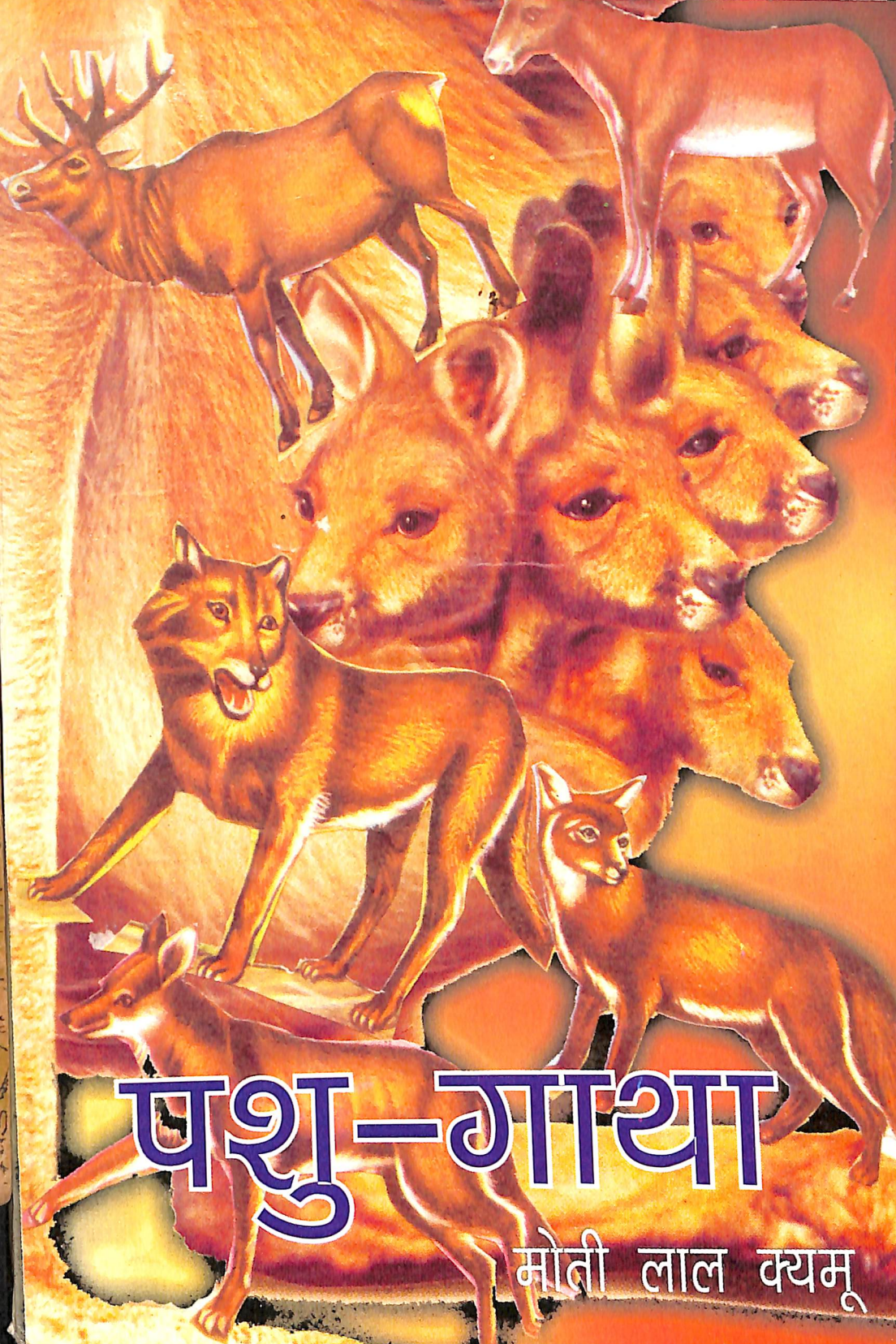

पशु-गाथा

मोती लाल क्यमू

पशु-गाथा

लेखक :
मोती लाल क्यमू

PASHU-GATHA BY MOTI LAL KEMMU

© मोती लाल क्यमू
5– अपना विहार, कुंजवनी तालाब,
जम्मू–180010, फोन 480439

प्रथम संस्करण : 2002-03

प्रकाशक : **मोती लाल क्यमू**
5– अपना विहार, कुंजवनी तालाब,
जम्मू–180010, फोन 480439

प्रतियां : 500

मुद्रक : जे० के० आफसेट प्रेस, दिल्ली।

मिलने का पता : 1- **मोती लाल क्यमू**
5– अपना विहार,
कुंजवनी, जम्मू–180010

2- **किताब घर**
कनाल रोड, जम्मू–180001

सवार्धिकार लेखक द्वारा सुरक्षित

आभार: *पुस्तक-प्रकाशनार्थ जम्मू कश्मीर कला संस्कृति-भाषा-अकादमी द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहकार-हेतु आभार। विषय वस्तु के लिये उत्तरदायी स्वयं गाथाकार है, किसी त्रुटि का उत्तरदायित्व अकादमी पर नहीं।*

मूल्य : तीस रूपये *Rs. 30/-*

अपने पोते पोतियों के लिये

आमुख

आशा थी आज़ादी के बाद अपने जम्मू-कश्मीर प्रदेश में तरक्की का दौर शुरू हो जायेगा। पर सीमपवर्ती देश को यह मंजूर नही और इस प्रदेश को हड़पने के हेतु रोज़ गड़बड़ी फैलाने के षड्यंत्र रचता गया। यहां प्रगति की गुण-गाथा रोज़ गाई जाती यदि षड्यंत्रों की राजनीति ने प्रदेश को वहां ला खड़ा न किया होता जहाँ विचार धाराएं मनुष्यता का मुखौटा पहन कर कूटनीतिक खुंखार पशु-पन दर्शाती हैं। आज़ादी और भाई-बन्धुवाद के नाम पर बरबर्तता और आतंक का खूनी साम्राज्य, अलगाववाद, विस्थापन, रिश्वतखोरी और कठमुल्लापन के सिवा क्या दिखाई दे रहा है।

इसी पृष्ठ-भूमि पर पशु-गाथा लिखी गई- एक व्यंग्य कृति।

जो इस प्रदेश में रहकर पिछले कई दशकों की गतिविधियों का साक्षी रहा हो, वह घटनाओं को स्वाभाविक रूप से समझ सकता है। हम में कितने मानव-स्वभाव छोड़ कर पशु-स्वभाव अपना कर जनता को दुःखी और संकटमय देखने में गर्व महसूस करते हैं। नारों पर ज़िंदा रख कर आदमी का शोषण करना और निजी जीवन सुखमय बनाना उनका आदर्श है।

मैं मुख्यतया नाटक लिखता-खेलता हूँ। अहिन्दी भाषी हूं। इस गाथा को हिन्दी में लिखकर कहीं-कहीं कश्मीरी का मुहावरा दिखता हो तो पाठक अन्यथा न समझें बल्कि कथ्य के सम्प्रेषण हेतु मेरी मजबूरी।

गाथाकार

पशु-गाथा

सांझ ढल चुक थी। सभी पशु पक्षी अपनी-अपनी कंदराओं और नीड़ों की ओट में छुप गए थे। अचानक कहीं एक गीदड़ और सियार का मिलाप हुआ। दोनों एक झरने के किनारे पहुंचे। "कहो सियार भाई, आजकल दिखाई नहीं देते। क्यों, पाप कमा कर पेट नहीं भरा। वैसे तेरे मुंह पर बुढ़ापे की झुर्रियां दिखाई नहीं देतीं।" गीदड़ ने दुम हिला कर कहा। अब इस पर भला सियार चुप कैसे रहता। गांव के मेमने उठा कर ले जाने वाले सियार को उलहना सहन कैसे हो सकता है। "दिखाई नहीं देता अंदर अंदर से कोई ग़म मुझे खाए जा रहा है। आजकल नींद भी नहीं आती है।" "भला ऐसा क्यों?" गीदड़ ने उत्सुकता से पूछा। "बताता हूँ। अब केवल एक आसरे की तलाश में हूं, जिससे मेरे पाप धुल जाएं। किसी प्रकार कुछ पुण्य कमा सकूं।" सियार ने दार्शनिक की भांति कहा।

"वाह वाह पुण्य कमाने की लालसा और तुम में, यकीन नहीं आता। मुझे देखो, बुढ़ापा आन पड़ा। पिछली टांगों में बल नहीं रहा, कहीं पर भी लड़खड़ा सकता हूं। उस पर मौत का भय। ईश्वर के पास जाना हुआ तो कौन-सा मुंह लेकर जाऊंगा। महा पापी जो ठहरा।" गीदड़ ने रूआनी सूरत बना कर कहा।

"क्या कहते हो। अभी तुमने गांव का माल खाया ही क्या है। सुना नहीं कल ही राजस्थान से तीन ट्रक भेड़-बकरियों से लद कर आ पहुंचे हैं। उनमें कितनी ज़बह होंगी।" सियार ने लार टपकाते हुए कहा।

"न भई न।" अब दांतों और जबड़ों में शक्ति नहीं रही। गीदड़ बोला।

"तो फिर ज़रा बतिया लें घड़ी भर। सोचो अब हम बूढ़े होने को आए।

किसी भी समय ईश्वर को प्यारे होने की वेला आएगी। हमारे पाप-पुण्य का हिसाब लिया जाएगा, और....."

"बस यही गम मुझे खाए जा रहा है ..... पर सुना है, खुदा बड़ा बखशनहारा है।" गीदड़ सियार की बात काट कर बोला।

"है-है, पर क्या वह हमारे पापों को क्षमा कर सकता है।" सियार ने दो आंसू बहाते हुए गम प्रकट किया। "इसलिए गीदड़ भैया, मैं गम में डूबा हूं।"

"अच्छा यह बता, कोई पाप क्षमा योग्य नहीं?" गीदड़ ने प्रश्न किया।

"हैं क्यों नहीं। छोटे-मोटे, जो हमारे स्वधर्म के विरूद्ध नहीं।" सियार समझ गया।

"ऐसा! तो बता तुमने ऐसा कौन-सा महापाप किया जिसे खुदा बखशेगा नहीं।" गीदड़ ने सियार से पूछा।

"हाय। क्या बताऊं। इस गांव में एक बुढ़िया रहती थी। उसकी आंखों की रोशनी भी चली गई थी। बाल बच्चे सभी चल बसे थे। अपने झोपड़े में अकेली रहती थी। ज़मीन जायदाद खो चुकी थी। गुज़ारे के लिए उसके पास केवल एक मुर्गी थी। वह मुर्गी दिन भर गांव के मुर्गों के संग घूमती-फिरती और बुढ़िया को अंडे दे जाती थी। मुर्गी के अंडों पर बुढ़िया की जीविका चलती थी। बार-बार उस मुर्गी को देखकर मेरा जी ललचाता था। बार-बार जुबान मुंह से निकल कर मेरे होंठों पर फिर जाती थी। लार भी टपकती थी। पर बुढ़िया का हाल देखते ही मैं दयालू बनकर चला जाता था। फिर झाड़े के दिन आए। बर्फ ने सब कुछ ढक लिया था। बीसों चक्कर लगाने के बाद भी गांव में खाने को कुछ नहीं मिला। भूख बहुत सता रही थी फिर मैंने बुढ़िया की मुर्गी उठा ली और पेट भर कर भोजन किया। हाय! तब से यही गम खाए जा रहा है कि खुदा के पास कौन-सा मुंह लेकर जाऊंगा। वह मुझे इस पाप के लिए नहीं बखशेगा। कभी नहीं।" सियार रोने लगा।

"अबे रोता काहे को है। बुज़दिल। तू मुर्गी नहीं खएगा तो क्या घास खाएगा। मुर्गी तुम्हारा शिकार है। और शिकार खाना तुम्हारा स्वधर्म है। रोता है, फ़ज़ूल।" गीदड़ ने ढाढस बंधाया।

"अच्छा तो मैंने कोई महा पाप नहीं किया है?" सियार ने पूछा।

"बिल्कुल नहीं।" गीदड़ ने कहा और ऊंची आवाज़ में ओऊं-ओऊं चिल्लाता रहा।

सियार ने आंसू पोंछ लिए। लंबी सांसें ली। फिर गीदड़ से पूछा,"अरे भाई अब तू बता, क्या किया है पाप ऐसा जिसे खुदा नहीं बखशेगा।"

गीदड़ ने कुछ देर आंखें बंद कीं, दुम हिलाई फिर मुंह अपनी अगली टांगों के पंजों पर रखकर बोला, "क्या बताऊं, दोस्त! इस गावं का ही नहीं इस सारे वन का लाभदायक पशु हूँ। जो भी पशु यहां मरा, उसका मांस मैं रात को चोरी छुपे खाया करता हूं। पर पाप, ज़ोर ज़बरदस्ती कभी नहीं, छीना झपटी कभी नहीं।"

"तो फिर तुमने कोई महापाप नहीं किया है।" सियार ने निराशाजनक स्वर में कहा।

"तुम से कया छुपाऊं। तेरे और मेरे वैर से कौन वाकिफ नहीं। यह तो आज गांव और वन में कोई छोटा-मोटा पशु मरा नहीं। जो हम दोनों को कुछ क्षण बतियाने को मिले। पर यार। एक महापाप एक घोर अनर्थ मैंने भी किया है .....बस उसी का दुःख अब इस बुढ़ापे में दिल को चीर रहा है। खुदा इस महा पाप के लिए नहीं बखशेगा।" गीदड़ निश्वास छोड़कर चुप हुआ। आंखें भी बंद की थोड़ी-सी।

"आखिर मैं भी तो सुनूं तूने किया क्या है।" सियार ने दुम हिलाकर पूछा।

"भाई, नगर के बाहर एक विधवा रहती थी। सदैव बीमार रहती। उसके दो छोटे-छोटे बच्चे थे। गुजारा खास कुछ नहीं था। घर की सम्पत्ति बेच-बेच कर चावल-पानी पर निर्वाह करते थे। विधवा के पास एक बकरी थी जिसको दिन भर उसके बच्चे चराने ले जाया करते थे। और सुबह शाम उसका दूध पी लिया करते थे। बकरी को देखकर मेरा मन ललचाता था पर छोटे बच्चों का हक नहीं मारना चाहता था। बड़ी बर्फबारी के बाद जब ख़ाने को मुझे कई दिन तक कुछ भी नहीं मिला मैंने एक रात उस बकरी को घसीट लिया और एक पखवाड़े तक निश्चिंत होकर आहार करता रहा। बकरी का दुःख बुढ़िया बरदाश्त न कर पाई। मर गई। बच्चे अनाथ हो गए। अब तुम ही बताओ क्या खुदा इस नापाक गुनाह से मुझे नजात देगा, बखशेगा?"

"कभी नहीं, कभी नहीं।" सियार ने हामी भरी और दुम झुलाने लगा।

"क्या कहा।" गीदड़ उठ खड़ा हुआ। उसकी आंखों में गुस्सा झलक रहा था।

गीदड़ का गुस्सा देखकर सियार समझ गया कि खुशामद करने में ही खैर है, वह बोला, "यह भी कोई गुनाह है। अपना पेट भरना तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। बकरी को नहीं खाओगे तो क्या शेर को खा सकते हो। छोड़ दो गम और अपनी नसों में बल लाओ।" सियार के वचन सुन कर गीदड़ ने लम्बी जमहाई ली। और प्रश्न किया, "तो हमारे पाप?"

"पाप ही नहीं है। हमारा कर्म है। पेट भरना, जिंदा रहने के लिए। घास-फूस खा कर तो जिंदा नहीं रह सकते। मांस खा कर ही जीवित रहेंगे" सियार ने वाक चातुर्य दिखाया। अपना मन हल्का करके अब वे दोनों चलने को ही थे कि वातावरण में 'ढीचूं-ढीचूं' की ध्वनि गूंज उठी। गधे की चिल्लाहट सुन कर उन दोनों के कान खड़े हो गए। "साला गधा कैसा भौंकता है सब्रों की नींद हराम करता है" गीदड़ गुर्राया।

"अबे ओ गधे। आ जा। बोल कैसे कटते हैं तेरे दिन"। सियार गधे के समीप जाकर पूछने लगा। गधे ने अपना मुंह खोलकर दोनों जबड़ों का प्रदर्शन करके कहा। "खाने को कम मिलता है। कभी-कभी कुछ भी नहीं, काम ज़्यादा लिया जाता है। शरीर सूख कर कांटा हो गाया है।"

"अच्छा यह बता, अगर मर गया और खुदा के घर पर तुमसे तेरे कर्मों का हिसाब मांगा गया तो..... तो तेरे पापों में कौन-सा बड़ा पाप तूने किया है।" गीदड़ ने गधे से पूछा।

"मैं गधा और पाप! सब की लताड़ खाता हूँ मैं। किसी से कुछ मांगता नहीं। सबसे अलग-थलग और दूर रहता हूँ। कूड़े के ढेर पर पड़ी सड़न और जूठन से पेट पालता हूं"। आत्मकथा कहने के अंदाज़ में गधा बोल रहा था। उसकी बात काट कर गीदड़ बोला- "लेकिन कोई पाप तो किया ही होगा जिसे खुदा बखशेगा नहीं, बोल।"

गधा सोच में पड़ गया। दोनों कानों को झुका कर कहना शुरू किया। "क्या बताऊं। एक बार गांव से घास का गट्ठर पीठ पर लाद कर शहर आ रहा

था। तीन दिन का भूखा था। चला नहीं जाता था। मालिक कोड़े बरसा रहा था। मैं कभी टूटे कदमों चलता था तो कभी हिम्मत बटोर कर चलता था। पेट की भूख बढ़ती जाती थी। फिर मालिक से कुछ आगे निकल कर एक जगह अपनी गर्दन मुड़ा कर घास को ज़ोर से खींच लिया। न चाहते हुए भी वह घास खानी पड़ी। इसी पाप से दुखी हूं। ज़ो मालिक पालता है उसकी ही घास खा गया- बस इस पाप को खुदा नहीं बखशेगा।" यह कह कर गधा ज़मीन पर बैठ गया।

"क्या कहा", सियार गरज कर बोला। "तूने घास चुरा कर खाई और वह भी अपने ही मालिक की।" गधे से कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर सियार और गीदड़ भौंकने लगे। "महा पापी गधे! अब हम तुझे कहां छोडेंगे। कच्चा चबा जाएंगे।" गधे ने अपने दोनों कान अकड़ाए फिर ढींचूं-ढींचूं की पुकार से सारे वातावरण में अपनी हाज़िरी अनुभव कराई।

गीदड़ सियार से बोला, "चुप कर, इससे कुछ ने बोल। यह गधा उन्हीं में से एक है जिनके कल्याण और विकास के लिए वन प्रमुख से हमें नकदी माल-मुत्ता मिला था।"

"ठीक कहते हो, वह सब माल तो हमने अपनी दशा सुधारने पर लगा दिया और यह गधे का गधा ही रहा।" सियार ने हामी इन शब्दों में भरी।

"चुप कर यह हमारी बातें सुन रहा है। चल भाग चलें।" गीदड़ ने सियार के कान में कहा।

"ठीक है, कई महीनों से वन-प्रमुख के पास भी नहीं गए। हाथ भी खाली हो गया, चल कर कोई नई चाल चलें, कुछ मांगें।" सियार ने भौहें तरेर कर कहा।

गधा उन दोनों की बातें सुन कर आश्चर्य चकित हो गया। उसे पहली बार अपने अस्तित्व का अहसास हुआ। गीदड़ों और सियारों की प्रगति का राज़ मालूम हुआ। उसमें वन प्रमुख से मिलने की इच्छा हुई अतः वह चुपके-चुपके उन दोनों के पीछे-पीछे हो लिया।

☆☆☆

अब रात का अंधेरा बढ़ रहा था। गधे को यह देखने में कठिनाई हो रही थी कि सियार और गीदड़ कहां जा रहे हैं, पर उसने धैर्य से काम लिया, गीदड़ पर आंखें जमाए रखीं। वह चुपके से उन्हीं के पीछे पीछे जा रहा था। तभी सियार रास्ता बदल कर गीदड़ को चकमा दे कर कहीं चला गया। गीदड़ थोड़ी देर रुक कर शायद सियार को ताकने की कोशिश करने लगा। उसे सियार का छुप जाना अच्छा नहीं लगा। वह जान गया कि सियार की नीयत में खोट है। कुछ देर के बाद गीदड़ ने आगे को कदम बढ़ाए। गधा भी कदम बढ़ाने लगा।

दूर से रोशनियां दिखाई दे रही थीं। गधा जान गया कि वह नगर के समीप पहुंच गया है। उसने अपने चारों ओर नज़रें घुमाईं और देखा कि अभी भी वह सुंदर वन के किसी भाग में ही है। अब आगे-आगे गीदड़ दुम हिलाते हुए बड़ी सावधानी के साथ जा रहा था ताकि उसे पहचाना ना जा सके।

वन के एक छोर पर चरागाह रोशनियों के बीचों बीच दिखाई दिया। सारी रोशनियां एक विशालकाय आदमी पर केंद्रित थीं। सूरजमुखी फूल की भांति उसका चेहरा गोलाकार था पर था श्वेत। उसने बहुत बड़ा 'फिरन' पहन रखा था। उसके पैर भी उस फिरन में छुपे थे। पैरों के ऊपर उसके फिरन में खिड़कीनुमा आकार थे। उसकी बाहें लंबी थीं। बाहों में गोल्फ खेलने के लिए स्टिक थी। क्या यही वह वन प्रमुख है जिसके बारे में सियार और गीदड़ बातें करते थे या यह पुरुष वह है जिसे लोग पादशाह कहते हैं। गधा कुछ भी नहीं समझ सका।

गधा गीदड़ पर आंखें टिकाये था। इतने में किसी ओर से दौड़ कर आया सियार और वन प्रमुख के आगे झुक गया। दुम हिलाई। कमर से सारी धरती साफ की और कुछ ऊंघने के बाद कहने लगा, 'हे वन प्रमुख! अब हमारी हालत फिर बिगड़ गई। इसका प्रमुख कारण गीदड़ और उसकी जमात है। आजकल लोगों में इंतिशार फैला रहा है। वन का अमन-चैन बरबाद हो जायेगा। लोक-कल्याण के सारे काम आजकल ठप्प हो कर रह गए हैं। सब ठेकेदारों से अपना हिस्सा वसूलते हैं। जो कुछ भी आपने पिछली बार गधों की बहबूदी के लिए रकम दी थी सब समाप्त हो गई। उसमें बचा ही क्या। मेरी हालत देखो, खिदमत करते करते नंगा रह कर गुज़ारा करना पड़ रहा है। और वह गधे हैं, कि पिछड़े ही रहना चाहते हैं।' वन-प्रमुख खामोशी के साथ सुनता रहा और

थोड़ा-सा मुस्कराया। फिर दायें हाथ की गोल्फ स्टिक से एक कार्ड सियार को सौंप दिया। सियार ने क़ार्ड हाथ में लेकर देखा और बोला, 'किचन में वाज़वान खाने का कूपन, वाह, क्या बात है।' वह दौड़ कर किचन की ओर भागा और वन-प्रमुख ठहाके के साथ हंसा। गधा हैरानी के साथ यह सब देखता ही रहा।

गधे में उत्सुकता जगी कि इसी समय वन-प्रमुख के पास दौड़ कर जाए पर उसकी नज़र गीदड़ पर पड़ी जो अपनी विशेष वाणी में कुछ बोल रहा था। गधे की समझ में कुछ नहीं आया। न जाने वह गीदड़ से क्यों डरता था। गीदड़ दौड़ कर वन प्रमुख के पास पहुंचा और उसके पैरों पर पड़ा, अपनी आवाज़ को लचीली बनाकर बोला, 'हे अन्न दाता। आपसे क्या छुपाऊं अब हमारे वन में शांति नहीं रहेगी। मैं क्या करूँ दूसरे वन के वासियों पर कोई नियंत्रण नहीं रह पाता। सभी आपकी छत्रछाया में नहीं रहना चाहते। सारी बदमाशी की जड़ सियार है जो सबको मेरे विरुद्ध भड़काता है। सारा माल-मुत्ता जो भी आपने गधों के कल्याण के लिए बखशा था, वह खर्च हो गया। अब मैं खाली जेब मारा-मारा फिरता रहता हूँ। गुज़ारा करना मुश्किल हो गया है, इसलिए आप का आसरा चाहता हूं। 'ओऊं ओऊं' करके गीदड़ गिडगिड़ाया। वन-प्रमुख ने अपने बायें हाथ की गोल्फ स्टिक से एक पर्ची गीदड़ के हाथ में थमा दी। 'वाह, पूरा वाज़वान खाने की दावत, वाह' गीदड़ उछल-उछल कर किचन की और दौड़ा।

अब गधा धीरे-धीरे वन-प्रमुख के पास गया और कुछ क्षण अपनी टांगों को फैलाकर धरती पर बैठ गया। फिर धीरे से दो कदम आगे आकर आंखे नीचे करके बोला, 'हे वन प्रमुख! लगता है तू केवल उनकी सुनता है जो तेरे पास अनाप-शनाप बातें कह कर वाज़वान खाने की चेष्टा करते हैं। मेरी बहबूदी की सारी रकम, लगता है, इस सियार और गीदड़ ने हज़म कर ली है, देखता नहीं मेरी कितनी दयनीय दशा है। मुझे कभी कुछ नहीं मिला। यही लोग सारे ठेकेदारों से अपना कमीशन खा-खाकर मोटे हो गए हैं। दोष हमारा है, हम गधे नारों पर ध्यान देते हैं, और सड़कों पर आकर हंगामा करते हैं। बस।' इस पर वन प्रमुख अपनी गंभीर वाणी में बोला, 'आप पराये मुल्क के प्रमुखों के उकसाने पर ऐसा करते हो और उन्नति से वंचित रहते हो। बहरलाल, अपने में लीडरशिप पैदा करो और एक हो जाओ," ऐसा कह कर वन प्रमुख ने फिरन के नीचे से एक शाल

निकाल कर गोल्फ स्टिक से गधे की पीठ पर फैलाया। दूसरी गोल्फ स्टिक से फिरन के नीचे से रस्सी के साथ लटकती एक हांडी निकाली उसे गधे के गले में डाल कर कहा, 'जाओ हांडी का अन्न तुम्हारी भूख मिटाएगा और शाल सर्दी से तुम्हारी रक्षा करेगा। हां अपने अधिकारों के प्रति होशियार रहो।' गधा फूले नहीं समाया, वह झूम-झूम कर नाचने लगा और थोड़ी देर के लिए सियार और गीदड़ की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ देर बाद सियार किचन से बाहर आ गया। लगता था उस ने इतना खाया था कि उससे चला नही जाता था। फिर भी भारी कदमों से वह वन-प्रमुख के सम्मुख पहुंचा। 'वाह क्या स्वादिष्ट वाज़वान था। हे वन प्रमुख! आपको मैं सूचित करता हूं कि गीदड़ की चालाकी से सावधान रहें। भाईचारा छोड़ कर जाति भेद और सांप्रदायिकता फैला रहा है। आज कठमुल्लाओं के प्रभाव में आकर साज़िशें रच रहा है।' सियार ने पूर्ण अपनापन जतलाते हुए कहा। इस पर वन प्रमुख ने अपने फिरन का एक छोर ऊपर उठा लिया और सियार को अदंर आने का संकेत दिया।

सियार फिरन में जैसे गायब हो गया। गधा यह देख कर अचंभे में आ गया। उसे वन प्रमुख के विशालकाय होने का कोई अंदाज़ा ही नहीं था। एकदम गधे की नज़र गीदड़ पर पड़ी। वह अपने जबड़ों पर अपनी जीभ बार-बार फिरा रहा था। जैसे वाज़वान का सारा मज़ा उसके जबड़ों पर अब भी हो। वह भी बड़े चाव के साथ वन प्रमुख के समीप पहुंचकर आत्मीयता के साथ बोला- 'इस समय यहां कोई नहीं है, इसलिए कहता हूं कि सियार और उसके हम-जमातियों पर कोई भरोसा न करना। आजकल नवयुवकों को शत्रु के प्रदेश जा कर अस्त्र-शस्त्र लाने की प्रेरणा दे रहा है। उनको बाहर के प्रदेशों में भिजवाने के लिए धन इकट्ठा कर रहा है जो आपको रिश्वत के रूप में दिया जाएगा। अवश्य आपको धोखा देगा। साज़िश रच रहा है।'

वन प्रमुख ने फिरन का दूसरा छोर ऊंचा करके उसे अपने आसरे मे ले लिया। गधा हैरान रह गया। उसे अपनी आंखों पर विश्वास ही न रहा। कुछ ही क्षणों में फिरन के गवाक्षों से दो अलग-अलग चेहरे दिखे। एक सियार का और दूसरा गीदड़ का। 'वाह क्या दृश्य है। महा-मानव का महा लिबास और उसमें छुप गए दो विरोधी जानवर।' गधा देख कर डर सा गया। वह मुड़कर वापस जाने को

हुआ। चलते-चलते उसे लगा कि वह उस शानदार गधे के बराबर है जिस पर लोग वर को बिठाते हैं। उसे नशा-सा आ गया। उसे अपनी शान की अनुभूति हुई। लेकिन गले में लटकती हांडी का भार उसे दुखी करता था। वह किसी तरह उस हांडी से पिंड छुड़ाना चाहता था। वह आगे चलता गया। किस रास्ते से आया था उसे होश नहीं था। सियार और गीदड़ वाज़वान खा कर मस्त थे, लेकिन उस के पेट में एक लुकमा भी नहीं गया था। इसलिए वह हांडी तोड़ने की सोचने लगा। वह उस स्थान की तलाश में था जहां पर वह हांडी तोड़ सके। कुछ दूर चल कर उसे एक बड़ा देवदार दिखाई दिया। गधे ने आव देखा न ताव झट से हांडी देवदार के साथ ज़ोर से टकराई। हांडी टूट गई पर रस्सी उसके गले में ही लटकी रह गई। हांडी में रखे बासमती चावल ज़मीन पर फैल गए। गधे ने झट से चावल चट कर लिए। भूख दूर हुई पर शरीर पर रखा हुआ शाल जैसे उसे सूइयां चुभा रहा था। पर उसे अपनी शान का एहसास होता था जैसे वह ज़िन्दगी में पहली बार कोई शान्दार जीव है। इसलिए कदम हाथी की भांति उठा-उठा कर चल रहा था। आगे जा कर उसे अनुभव हुआ कि जैसे उसके सामने दो खूंखार पुशाओं की आंखें चमक रही हैं। उसने ढींचू-ढींचूं की आवाज़ से सोए हुए सारे पशुओं को जगाया पर सामने थे सियार और गीदड़ जो बाकी जानवरों से डरने वाले नहीं थे। एक अवाज़ में बोले, 'अब हम तुम्हें जीवित नहीं छोड़ेंगे। तू हमारे रहस्य का भेदी हो गया है। वाह क्या शाल ओढ़ के जा रहा है जैसे यह भी तेरे मालिक का माल है'। गीदड़ ने ओऊं ओऊं का शोर मचा कर उछल कर शाल का एक छोर मुंह में लिया और सियार ने दूसरा छोर और दोनों ने दौड़ कर वापिस घने वन की राह ली। गधा ढीचूं-ढीचूं की आवाज़ से रात की शांति को भंग कर रहा था। वह शाल से भी गया। अब केवल उसके गले में रस्सी लटक रही थी। शायद गुलामी की रस्सी। उसे महसूस हुआ कि वह अपने ही वनप्राणियों द्वारा गुलाम बनाया गया है।

☆☆☆

गधा शर्मसार था। उसे अपनी मूर्खता का एहसास हो रहा था। जब कोई गधा कभी वन प्रमुख के पास नहीं गया तो उसे जाने की क्या ज़रूरत थी। जैसे-तैसे गुज़ारा होता था। वह इन ही विचारों में डूबा था कि उसने अपने सामने

एक वयोवृद्ध हांगुल को देखा। यह हांगुल उसकी चिल्लाहट सुन कर अपने झुंड से अलग हो कर आया था ताकि जान जाए कि कहीं हांगुल जाति पर कोई विपत्ति तो नहीं आने वाली। उस सारे सुंदर वन में केवल हांगुल जाति की आबादी सब पशुओं में कम थी। इसलिए सियार और गीदड़ जाति के चालबाज़ों से सतर्क रहने की हर संभव कोशिश करते थे। वे उनके हंगामों के भी आदी बन गए थे। उनकी एक ही कमज़ोरी थी कि वे अपने सुंदर वन से प्रेम करते थे और जहां-तहां उसके गीत गाते थे।

हांगुल ने जिज्ञासा के साथ गधे से उसकी चिंता का कराण पूछा। गधा अपनी गरदन हिला-हिला के बोला, 'देखते नहीं हो, मेरे गले में यह नई प्रकार का फंदा' हांगुल ने अपनी मोटी-मोटी आंखों से गोर से देखा, "अरे हां, यह क्या रेश्मी रस्सी, किस ने पहनाई? ताज्जुब है इस पर हर इंच के बाद तीन-तीन अंक लिखे हैं जिन का जोड़ दस होता है।"

'क्या कहते हो, तुम्हें अंधेरे में कैसे दिखाई देता है।' गधे ने सवाल किया।

'वाह, क्या मैं इतना भी नहीं देख सकता कि रस्सी मुलायम है और लिखे हुए अंक चमक रहे हैं। अरे गधे यह अंक उस सियाही से लिखे गए हैं जो अंधेरे में ही चमकती है' हांगुल ने उसे कहा।

'क्या बताऊं आज सियार और गीदड़ के चंगुल में फंसा। जानते हो वह दोनों वन-प्रमुख से हमारी भलाई और बेहबूदी के लिए धन लेते आए हैं और उसे अपनी निजी बेहबूदी पर लगाते आए हैं' गधे ने नथनों से ढेर सारी सांस छोड़ते हुए कहा।

'जब मैं यही बात कहता था तो क्या तुम विश्वास करते थे? मुझे नहीं मालूम, पर मुझे अल्प संख्यक जान कर तुम सभी वन प्राणी मेरी अवहेलना ही करते रहे। यदि मैंने वन प्रमुख के पास शिकायत भी कभी कभार की तो वह मुझे चुप रहने को ही कहता था। इसीलिए मैं देखता और असह्य होकर सहता रहता हूं। सियार और गीदड़ केवल मेरी सहनशीलता और सहिष्णुता की तारीफ करके मुझे केवल शब्दों से खुश रखते हैं।'

'पर मेरे गले में पड़ा यह मुलायम रेशमी फंदा!' गधा चीख उठा।

'क्यों परेशान होते हो, तेरा मालिक क्या इसे तेरे गले में रहने देगा?' सुबह होते ही वह इसे लूट लेगा और तू केवल दो झापड़ खाकर छुटकारा पाएगा। काहे को चिंतित होता है रे।' हांगुल ने उसे अनुभव की बात कही। गधा बात समझ गया और हांगुल से कहने लगा- 'यह वन-प्रमुख सारे वन की दशा स्वयं क्यों नहीं देखता संभालता।' गधे ने पहली बार बुद्धिमता की बात की। वन में रहने के बाद भी उसे वन व्यस्वथा के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं। हांगुल उसे क्या समझाए और कितना समझााए।

'सुनो रात बहुत हो आई है। जा के आराम करो। यदि मुलाकात हुई तो किसी और दिन मिल बैठ के बातें करेंगे।' कहकर हांगुल अपने झुंड की ओर चल दिया।

गधा सचमुच सो जाना चाहता था पर उसके मन में न जाने क्यों ईर्ष्या हो रही थी। वह कुछ कदम चल कर दौड़ के वापस आया और हांगुल के समीप पहुंचा। उसका रास्ता रोक कर कहने लगा। 'हे बुद्धिजीवी हांगुल जी, मुझे यह बताओ, क्या वन-प्रमुख से बढ़ कर कोई और नहीं जिसे अपना हाल सुनाया जाए।' प्रश्न बड़ा गंभीर था और गधे ने पहली बार पूछा था, इसलिए हांगुल को समझना ही पड़ा। 'हां है जिसे वन-पाल कहते हैं। पर तुम्हारे संरक्षण-संवर्धन के सारे अधिकार वन-प्रमुख के ही हैं।' यह सुन कर गधा मायूस हुआ पर उसे जिज्ञासा हुई। वह हांगुल को 'खुदा हाफिज़' कह कर वापस लौटा। और मालिक के खुले आंगन की ओर चल दिया।

मालिक के आंगन में अपने सारे शरीर को लंबा करते हुए उसे गले में पड़ी माला जलन पैदा कर रही थी। वह उससे छुटकारा पाना चाहता था। पर कया करता। कोई उपाय सूझता नहीं था। धीरे-धीरे उसे नींद आने लगी और आंखों के सामने वह दृश्य आया जब वह छोटा था। जब मालिक और उसके तीन संबंधियों ने उसे पकड़ लिया था। एक ने कानों से पकड़ा था और एक ने गले की रस्सी को और तीसरे ने अगली दोनों टांगों को रस्सी से बांध लिया था। और उसके सामने लोहार अपनी धौंकनी गरम कर रहा था जिसमें उसने एक लाल पतला चक्कर निकाल कर उसकी छाती पर दागा था। उसे दो महीने तक पीड़ा

रही थी और वह घाव लाल रक्त-सा एक पखवाड़े तक खून के कण बहाता रहा। वह पीड़ा कितनी असह्य थी कि उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसे अहसास हुआ कि आज भी शायद उसे ऐसी ही जलन, दर्द और पीड़ा हो रही है। दर्द की इसी स्मृति को लेकर उसकी आंख लग गई और वह स्वप्न की दुनिया में विचरने लगा। वह खुले आकाश में कहीं स्वछंद विचर रहा था। धीरे-धीरे उसके कंधों से लंबे सुनहले पर निकल आए और वह गगन में ऊंचा उड़ने लगा। उसके गले में जैसे चमकती मणि माला शोभायमान थी। माला की चमक-धमक से वह धरती के सारे दृश्य भलीभाँति देख रहा था। उसने इतने सुंदर दृश्य कभी नहीं देखे थे। टिमटिमाते तारों जैसे महानगर। कहीं-कहीं झिलमिलाती न्यॉन लाइट रंगबिरंगी छटा छिटक रही थी। अचानक उसे लगा कि सारे दृश्य जैसे गायब हो गए और वह किसी रूई के सागर के मध्य उड़ रहा है। उसने महसूस किया कि उसे गंधक जैसी सुगंध अनुभव हो रही है। फिर भी वह खुश था क्योंकि उसने कई हवाई जहाज़ों को अपने से काफी नीचे उड़ते देखा। धीरे-धीरे उसने महसूस किया कि उसके पंख कमज़ोर होते जा रहे है। और एक-एक पर उसके पंखों से निकल कर धरती पर गिर रहे हैं और नीचे गिरते ही धड़ाम की आवाज़ उभरती हैं। वह भय से कांपने लगा। कहीं वह गिर गया और मर गया। कहीं उसका गिरता हुआ पंख किसी भवन पर गिरा और उसमें सोये प्राणी मर गए तो। सारे पंख गिरने के बाद उसे लगा कि वह धड़ाम से नीचे गिर रहा है कि उसके गले की रेशमी माला किसी चिनार की लंबी टहनी से अटक गई है। उसे ज़मीन पर गिरने का भय डरा गया और वह चीखने लगा। पहली चीख के साथ ही उसका स्वप्न टूट गया और वह पछताने लगा।

रात का अंधेरा अमावस्या का आभास देता था। गधा स्वप्न के बारे में सोचने लगा। उसने जीवन में पहली बार स्वप्न देखा था। वह इसे करामात समझने लगा। गले में लटकती माला के बारे में उसके मन में श्रद्धा उत्पन्न होने लगी। नहीं तो उसने कभी जवीनभर स्वप्न नहीं देखा था। वह चाहने लगा कि उठ कर गले में लटकती माला को चूम ले। उसने सुना था कि हर स्वप्न का फल निकलता है याने हर स्वप्न फलदायक होता है। शुभ और अशुभ। दोनों, पर फल

इस बात पर निर्भर करता है कि स्वप्न किस समय देखा गया हो। उसे रात के समय का ज्ञान नहीं था पर भांप गया कि यह रात्रि का अंतिम प्रहर है क्योंकि उसे कानों में मालिक के कदमों का भास हुआ। वह चाहता था कि उछल-उछल कर इस समय हांगुल के पास पहुंच कर उससे स्वप्न के फल के बारे में पूछ ले पर कहीं उसे मालिक पकड़ कर बोझा ढोने के काम में न लगाए इसलिए वह नींद में जैसे मस्त पड़ा है दीखता था।

पूरे दिन बोझ ढोने के बाद जब शाम को गधे को खुला छोड़ दिया गया। वह सब ओर से हांगुल की तलाश में निकला। उसके गांव में केवल दो हांगुल झुंड रहते थे। वह चुपके-चुपके उसी ओर चल दिया। उन के डेरे के पास पहुंचते ही उसे ताज्जुब हुआ। वन-प्रमुख दोनों झुंडों को संबोधित कर रहे थे। वह दूर से ही सुनने की चेष्टा करने लगा।

'हमें कोई भय नहीं होना चाहिए। हमें अपने आदर्शों पर पूरा भरोसा करना चाहिए। हम इस सुंदर वन के गुल हैं और यहीं खिलेंगे-फलेंगे। किसी दूसरे वन में जाकर बसने या आश्रय लेने के बारे में कभी नहीं सोचना चाहिए। हम सभी वासी समान हैं। चाहे स्वभाव भिन्न ही क्यों न हो। इसलिए सभी हांगुल भाई यहीं रहें। उन्हें राजनीति के छल की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि अपने झुंड की भलाई की ओर ध्यान देना चाहिए।' वह और भी प्रशंसा भरे शब्दों से उनकी तारीफ कर रहा था और गधा गहरी सोच में डूब गया। वह सोचने लगा कि वन-प्रमुख ने सियार और गीदड़ को वाज़वान खिलाया, उसे बासमती चावल की हांडी दी और हांगुल झुंड को केवल प्रशंसा के शब्द। गधे को लगा कि यदि वह इसी तरह सोचता गया तो वह अवश्य दार्शिनक बन जाएगा। फिर भी उसे इन बातों का अर्थ मालूम नहीं पड़ता था।

वन-प्रमुख की जय-जयकार करते हुए हांगुल उसके पीछे-पीछे गए। केवल वह हांगुल मायूस दीख रहा था जिसने कल ही गधे को कुछ बातें समझाई थीं और जिसके पास आज वह स्वप्न का फल पूछने आया था। वह चुपके से उसके पास आया और अपनी जीभ हांगुल के शरीर पर फेर ली। हांगुल ने कहा, 'मैं समझ गया। पूछो क्या पूछना चाहते हो।' इस पर गधे ने स्वप्न की बात की

और कहा कि उसे उसका फल बताएं। 'क्या करोगे जान कर। दुःखी हो जाओगे' हांगुल ने कहा। गधे के काफी आग्रह करने पर हांगुल बोला, 'देखो तुम स्वप्न में काफी ऊंचे उड़े हो इसलिए जल्दी ही तुम्हें किसी ऊंचे स्थान को जाना होगा। ऊंचा उड़ कर तुम्हें गंधक की बास सुंघी इसलिए जिस ऊंचे इलाके को जाओगे वहां वायु खुष्क होगी और तुझे सांस लेने में कठिनाई होगी'। यह सुनकर गधा मायूस लौट आया।

☆☆☆

वन के एक छोर में आज बड़ी रौनक देखी जा रही थी। मेहराबों और झंडियों से वन-छोर को बड़ी मेहनत से सजाया गया था और जब गधा मालिक का बोझ ढो रहा था उसे यह तमाशा देखने की ललक पैदा हुई। थोड़ी देर रुका, देखा और सोच में पड़ गया। 'किसका सम्मेलन हो रहा है। कौन नेता आ रहा है। किस का भाषण होगा।' इसी दम उसकी पीठ पर मालिक का लठ आन पड़ा और वह तेज़ गति से आगे निकल गया। 'सुअर कहीं का रुक-रुक कर चलता है, समय का अंदाज़ा ही नहीं।' मालिक गरज उठा था। पर गधा जैसे मस्ती में आ गया। उसका जी चाहा कि ज़ोर से चिल्लाहट करे पर मालिक के लठ का लिहाज़ उसे करना ही था। दुनिया केवल उसे 'गधा' कह कर हीन समझती है पर आज मालिक ने उसे 'सुअर कहीं का' कह कर जैसे शाबाशी दी। वह सोच ही रहा था कि आकाश में आवाज़ गूंज उठी 'सुअर सम्मेलन-जिन्दाबाद जिन्दाबाद'। आज तक गधे ने ऐसे कई नारें सुने थे पर यह नारा उसने आज पहली बार सुना। वह समझ गया कि आज इस वन छोर पर सुअर सम्मेलन हो रहा है। अब कई दिनों तक दुकानें बंद रहेंगी और सड़कों पर घास फूस कम होगी पर उसके घूमने-फिरने के दिन लौट आएंगे। वाह खाना-पीना कम पर घूमना, फिरना, उछलना, कूदना खूब मिलेगा। क्योंकि इस वन में ऐसा ही हमेशा होता आया है। जब भी दुकानें बंद होती थीं सड़कें सुनसान पड़ जाती थीं और गधे घूमते-फिरते दिखाई पड़ते थे। गधे ने चाहा कि वह कुछ क्षण रुक कर सम्मेलन की कार्यवाही देखे-सुने पर मालिक ने उसे गले की रेशमी माला से पकड़ कर आगे खदेड़ लिया। नारे आकाश में गूंजते रहे और वह दूर निकल गया।

वन में किसी भी पशु जाति का सम्मेलन हो और सियार और गीदड़ को मालूम न हो ऐसा कभी हो सकता है? 'कुछ गड़बड़ होने का अंदेशा है' सियार ने वन-प्रमुख को सूचित किया था। 'वन के काले और मटियाले सुअर कई दिनों से आपस में खुसर-फुसर कर रहे हैं।' 'हां! सुअर सम्मेलन हो रहा है। दूसरे वनों से श्वेत सुअर भी इस सम्मेलन में भाग लेने और स्वच्छता पर अपने विचार प्रकट करने के लिए आ रहे हैं।' वन प्रमुख ने कहा।

'ऐसा! आप ने आज्ञा दे दी?' सियार ने जानना चाहा।

'हां, नियमानुसार। वह कोई हंगामा नहीं करेंगे, उन्होंने आश्वासन दिया है।' वन प्रमुख ने कहा।

सियार मायूस हो गया। फिर भी साहस करके पूछ बैठा, 'मानो सारा वन स्वच्छ होगा तो सुअर खाएंगे क्या? आखिर गंदगी खाकर ही गुज़ारा करते हैं:' प्रश्न वाजिब था।

'वह अपने तन और मन की स्वच्छता पर विचार करेंगे।' वन प्रमुख ने सियार को बताया था।

'और जो धनराशि वन की और सुअरों की स्वच्छता पर खर्च होती है, क्या वह अब मिलनी बंद हो जाएगी' सियार ने अपने मन की शंका व्यक्त की।'

'हो सकता है। यदि सारे वन के सुअर सफाई और स्वच्छता का महत्व समझ जाएंगे और २१वीं सदी में अपने कदम स्वच्छ तन मन लेकर धरेंगे, वन में घूमेंगे-चरेंगे तो हमारी ही शोभा नहीं बल्कि अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर हमारी शान बढ़ेगी, मान बढ़ेगा।' वन प्रमुख ने सियार को नेता की भांति समझाया था।

'और हम भूखे रहेंगे, नंगे फिरेंगे।' सियार रोने लगा था। उस धन का क्या होगा जो वन की स्वच्छता पर खर्च होता है। उसे धन की नहीं अपितु अपने हिस्से की चिंता होने लगी। वन की बहबूदी के लिए जो भी रुपया पैसा खर्च होता था उससे सियार और गीदड़ अपना हिस्सा बटोर लेते थे और हिसाब किताब के लिए एक बूढ़े हांगुल का सहारा लेते थे। पर अब मुश्किल आन पड़ेगी जब धन खर्च ही नहीं होगा तो। सियार विचारने लगा कोई हल निकालना ही पड़ेगा। वह दौड़ कर गीदड़ के पास चला गया।

गीदड़ अपने आपे में नहीं था। पूर्व रात को वह इतना खाकर सो पड़ा

था कि तीन दिन तक उसे जगाने पर भी उसकी नींद नहीं खुल सकती थी। पर सियार यार की एक ही ऊंग से उसकी जाग खुल जाती थी। इसलिए सियार ने बे-मौके ही ऊंगना शुरू किया। ऊं ऊं ऊं ऊं।

गीदड़ टांगें फैलाये मस्त पड़ा था। जब उसने सियार की ऊंग सुनी तो अपनी गर्दन थोड़ी-सी ऊंची की और केवल एक आंख खोल कर सभी ओर घुमा कर भांप लिया सियार कुछ कहने आया है। 'क्यों काहे को बेसमय ऊंगता है रे!' गीदड़ ने जमहाई भी ली।

'अबे ओ गीदड़ फूहड़, अब तो भूखों मर जाएगा। जानता है क्या हो रहा है।' सियार ने चेतावनी दी। गीदड़ एकदम उठ खड़ा हो गया। उसकी आंखों से नींद और आलस्य जैसे तत्काल गायब हो गया। चारों ओर नज़रें घुमाने के बाद सियार ने पूछा, 'क्या मामला है। क्या खबर लाया है। बोल।'

सियार मौन मुद्रा में मौन साधने लगा। अब गीदड़ समझ गया कि उसका यार रूठ गया है, इसलिए मनाने से ही काम चलेगा। गीदड़ ने अपनी लंबी जीह्व बड़े सद्भाव से सियार के नर्म बालों भरे जिस्म पर फेरनी शुरू की। फिर भी सियार चुप रहा। जब बात न बनी तो गीदड़ अपनी अगले दो पंजों पर मुंह रख कर सियार को केवल प्यार भरी निगाहों से देखने लगा, बीच-बीच में वह अपनी आंखें झूठमूठ ही बंद करता था और सियार की प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगा।

अब सियार एक ही सांस में बोल उठा, 'सोता रह। भूखों मर जाएगा। नंगा घूमेगा। वन छोड़ के भागेगा। दूसरों का गुलाम हो जाएगा। सोता है, कुछ खबर भी रखता है।' इतना कह कर सियार ने मुंह दूसरी ओर फेर लिया।

गीदड़ भांप गया और समझ गया कि मामला गंभीर है। उसने अपने दोनों कान अकड़ाए और पूछा, 'आखिर मामला क्या है।'

'सुअर सम्मेलन हो रहा है। अपने तन-मन को स्वच्छ रखने की सोच रहे हैं। दूसरे वनों से श्वेत सुअर भी आ रहे हैं।'

गीदड़ खड़ा हो गाया। जैसे किसी ने उसके तन बदन में आग लगाई हो। 'सम्मेलन' और वह भी सुअरों का। क्यों मज़ाक कर रहे हो। उनमें ऐसी बुद्धिमत्ता कहां। साले गंदगी के ढेरों पर लुढ़कने-फिरने वाले, बिना रीढ की हड्डी घुमाए चरने वाले। जूठन चाटने वाले गलीज़ जानवर कहीं के, स्वच्छता का ढोंग रचाएंगे।

विश्वास नहीं आता।' गीदड़ ने अपनी बात तेज़ तेज़ कह डाली।

'तुम तव समझोगे जव पानी सिर के ऊपर बह चुका होगा।' सियार बोला। 'सफाई-फंड मिलना बंद हो जाएगा। न तुम्हारा हिस्सा ने मेरा हिस्सा।'

'अरे यह तो चिंता का विषय है, साली ऊपर की हराम की सारी कमाई खत्म।' गीदड़ बात समझ गया और अपनी राय स्पष्ट की।

'इसलिए गीदड़ अंकल, कोई तरकीब सोचो' सियार की आंखों में चमक आ गई और गीदड़ चिंता में डूब गया।

दोनों कुछ देर के लिए आंखें मूंद कर विचार मग्न हो गए। फिर एकदम सियार उछल कर चिल्लाया, 'आगई आ गई, तरकीब अकल में आ गई।'

'चुप कर, चिल्ला मत, कोई तरकीब जान लेगा तो?' गीदड़ ने धमकाया।

'हां ठीक है, चलो चलें, छुपकर कहीं पक्की योजना बनाएं'। सियार ऐसा कहकर गीदड़ के साथ किसी खुफिया स्थान की ओर चल दिया।

जब भी कोई सम्मेलन होता है तो चहल-पहल, साज़-सजावट, निराले रंग-ढंग देखने को मिलते हैं। यों इस सम्मेलन को कामयाब बनाने के लिए वन से सभी रंग के सुअरों ने कई रात और दिन काम किया था। उनमें दूसरे वनों से आने वाले श्वेत सुअरों से मिलने-जुलने और उनके विचारों को सुनने की उत्कट इच्छा थी। जव श्वेत सुअर आने लगे तो उनको देखकर काले, सुरमई और मटियाले सुअर दंग रह गए। 'वाह क्या श्वेत रंग के हमारे भाई हैं' उन श्वेत सुअरों को देख कर एकदम लगता था कि जैसे धोबी-घाट से नहा कर आएं हैं। प्रत्येक के पास एक-एक थाली, केतली, छोटी चटाई और दरी थी। कंधे पर अपनी इन वस्तुओं को उठाकर प्रत्येक श्वेत सुअर शामयाने के नीचे अपनी हाज़री लगवा कर स्थान ग्रहण करते थे। किसी के साथ कोई शिशु सुअर नहीं था। लगता था सभी परिवार नियोजन योजना का पालन करना सीख गए थे। इसके विपरीत काले, सुरमई और मटियाले सुअर अपने साथ छः-छः बच्चे साथ लाए थे। जिधर भी नज़र जाती थी अव्यवस्था का माहोल दृष्टिगोचर होता था। सबसे ज़्यादा चिंतित व्यवस्थापक थे जो इधर से उधर और उधर से इधर नाच रहे थे। रोटी व्यवस्थापक ने जब बड़ी तशतरी में सैकड़ों रोटियां लाईं वह सब की सब एक ही धक्के से नीचे गिर गईं और बीसों

सुअर शिशु लातों तले रौंद दिए गए। रोटियों की लूट देख कर कई संवाददाता सम्मेलन स्थल से उठ कर चले गए थे।

न जाने कहां से एक बूढ़ा श्वेत सुअर पंडाल पर आया था और भोंपा हाथ में लेकर, दांत निकाल कर पिगी-मुंह बनाकर वूं वूं की ध्वनि से स्वागत भाषण झाड़ रहा था। कुछेक सुअरनियां अपने मृत शिशुओं को रो रहीं थीं और सूं सूं की आवाज़ को भाषण की वूं वूं से मिला रही थीं। सूफी तबियत के सुअर अपने सिर हिला-हिला कर आनंदित हो रहे थे। अखबार वाले जानकारों से भाषण-रोदन क्रिया का अर्थ जान रहे थे।

सियार कब का पाकाशाला के पिछवाड़े में मारे कटे मुर्गों के पंख और आंतों पर अपना कब्ज़ा जमा चुका था। उसने पकवान बनाने वाले के साथ अपना याराना लगा रखा था। वह उसके गुण ऐसा गा रहा था:-

चांफ, कलेजी, गुशताबा, रान

बड़ी देग में पकते समान।

खा कर पाकीज़ा पकवान

खुश हो जाते हैं महमान॥

पाकशाला का उस्ताद पकवान की तारीफ सुन कर मुग्ध हुआ और सियार को विश्वासपात्र जान कर कुछ देर के लिए कहीं बाहर चला गया। यही समय लाभदायक जान कर सियार ने साथ लाई हुई पुड़िया उबलती देग में मिला दी और एक ओर जा कर पकवानों की रखवाली करने लगा। कुछ क्षणों के बाद जब उस्ताद ने सियार को एक हड्डी फेंक दी तो वह वहां से नौ-दो ग्यारह हो गया। जब पकवान आमंत्रित श्वेत सुअरों ओर महमानों में परोसा गया, उनकी अपनी थालियों मे तो चंद लुकमे खाने के साथ ही उन्होंने पाखाना जाने की उतावली जताई। सबके पेट में दर्द होने की शिकायत शुरू हुई। पाखाना छोटा पड़ गया इसलिए किसी ने न आव देखा न ताव, जहां जिसको स्थान मिला वहीं पर कै करने लगा। इस प्रकार स्वच्छता का संपूर्ण अभियान खटाई में पड़ गया। सियार की योजना रंग लाई। श्वेत सुअर अपना-सा मुंह लेकर वापस चले गए।

शाम को जब गीदड़ ने सियार का हाल पूछने के लिए उसकी कंदरा की ओर कदम बढ़ाए तो उसने देखा कि सियार भागदौड़ में घायल हुआ है। उसका

सिर पट्टियों से बंधा था।

'अरे! सियार यार, यह क्या मामला है। ज़ख्मी हुए हो क्या?' गीदड़ ने सहानुभूति भरे शब्दों में कहा।

'अपने हित के लिए कुर्बानी देनी ही पड़ती है। आखिर बड़ा पकवान खा कर आया हूं।' सियार ने शान से शेखी बघारी।

☆☆☆

दूसरे दिन सारे सुन्दर-वन और नगर ढगर में हड़ताल थी। सड़कें सुनसान थी। कारोबार ठप। इसलिए सारे के सारे गधे पूरी आज़ादी के साथ जहां-तहां विचर रहे थे। अखबारों की सुर्खियां यूं थीं:

"अचानक सांड की भगदड़ से बीसों सूअर-शिशुओं की मृत्यू"- *वन-टाइम्स।*

"सूअर सम्मेलन का सफाई-आंदोलन खटाई में पड़ गया। सौ से अधिक सूअर शिशुओं की मृत्यु और कई घायल"-*स्वच्छ पत्रिका।*

"सुअर सम्मेलन में १०० मरे और १०० घायल। जांच आयोग का गठन।"- *पशु कीर्ति।*

और भी कई अटकल भरे समाचार सारे नगर और वन में फैल रहे थे। वन-पाल के तबादले की सूचनाओं से सारा माहौल भर गया था। हांगुल झुंड मायूस था। शंकित था। उन्हें अपनी सुरक्षा की बहुत चिंता लगी। कहीं सारे वन पशु सामूहिक जलसे-जलूस द्वारा नगर और वन की शांति भंग न कर दें। फिर भी वे आश्वस्त थे क्योंकि वन आंचल की सीमाएं सुरक्षित थीं। पहरेदारों की चौकसी पर उन्हें पूरा भरोसा था।

गीदड़ सियार से मिलने गया पर सियार गायब था, शायद कहीं रोपोश याने अंडर-वन चला गया था और सियारन ऊंची अवाज़ में विलाप कर रही थी। "हाय-हाय मेरे सियार! घर छोड़ कर कहां बैठे रूठ के! वन के किस छोर पर जा कर बैठे बिना कुछ खाए पिए!"

"चिन्ता का विषय है। वह कभी ऐसा करने वाला नहीं। अवश्य किसी विशेष काम से कहीं गया होगा। मैं उसकी खोज में जाता हूँ।" गीदड़ ने सच्चे दोस्त की भांति सियारन को आश्वस्त किया। गीदड़ ने लंबी छलांगें मार लीं और

आंखों से ओझल हो गया। सियारन का घेराव किए हुए कई सियारनें आपस में दबी आवाज़ में कानों-कान बोल रही थीं:

"न जाने किस आपत्ति में फंसा होगा।"

"हर काम में बेजा दखलअंदाजी करता रहता है।"

"आज या कल, किसी दिन धर लेंगे उसे। किसी का नहीं मानता है।"

"दूसरों की सियासत में टांग अड़ाता है। साला! नेतागिरी करने जाता है! सो भी घायल हो कर।" एक बूढ़े सियार ने तेज़ मिज़ाज़ युवा सियारन से सुना और सुनते ही नौ दो ग्यारह हो गया।

कुछ क्षण ऐसा ही चलता रहा और गीदड़ दौड़ता हांफता अपने मुंह में एक अखबार दबा कर लाया। सियारन के सामने उसे फैला कर कहा, "देखो इसके मुखपृष्ठ पर वह तस्वीर। मेरा सियार यार अस्पताल में पड़ा है और पादशाह उसका हाल पूछ रहा है। शाम तक मैं भी किसी तरह अस्पताल जाकर उसका हाल पूछ आता हूं।" गीदड़ ने सियारन का ढाढस बांधा। और अलग से जाकर न जाने बड़े-सियारों और गीदड़ों से क्या कह रहा था। कुछ देर बाद सभी वन पशु रेडियो सुनने लगे। व्यवस्थापकों ने दुर्घटना की जांच के लिए जो आयोग बनाया था उसका मुखिया दुलर्भ-गति कृशकाय हिरन था। वह बड़ा ही ख्यातनाम था। उसने वन-पशुओं की ओर से कई मुकदमों की पैरवी की थी। वह सब पशुओं का विश्वास-पात्र भी था। उसका सहयोग करने के लिए कूबड़-बिलाव और चरबी वानर भी आयोग के सदस्य थे। यूं तो ऐसे आयोगों को अपनी रिपोर्ट कई वर्षों तक सौंपने की छूट होती है, पर मामले की गंभीरता को दृष्टि में रखते हुए आयोग का अपना सारा काम केवल एक सप्ताह में पूर्ण करने की सख्त हिदायत थी। गवाही देने के लिए सभी जानकार पशुओं से आग्रह किया गया था कि जांच आयोग के सामने हाज़िर हो जाएं। अपने बयान कलमबंद कराएं और व्यवस्था का हाथ बटाएं। समाचार सुन कर गीदड़ छलांगें मारता हुआ अपनी टोली से मिलने चला गया।

दरअसल दुर्घटना गंभीर थी। सूअर सम्मेलन में बांटे जाने वाले पदार्थों में मिलावट के कारण श्वेत सूअर बीमार पड़ गए थे और भगदड़ मच गई थी जिसके कारण सूअर शिशु पांव तले रौंद दिए गए थे। ऐसा अचानक

सारा कैसे हुआ? संशय का मामला था। कोई साज़िश ज़रूर थी? भगदड़ के पीछे किसका हाथ था? रोते-बिलखते सूअर रात गए तक चिल्लाते रहे "साज़िश को नंगा करो।"

कई पशु आयोग के सम्मुख उपस्थित हुए। चार दिन तक सभी के बयान कलमबंद हुए। आयोग जाए वारदात पर भी गया था। साथ में ऊंचे कद के विदेशी कुत्ते भी थे। सूंघ-सूंघ कर कुत्ते इधर-उधर घूमे थे। कुत्तों के पीछे-पीछे जाते हुए आयोग अचंबे और संशय में पड़ गया। जिस आंगन से सांड रस्सा तोड़ कर आया था उस ओर कुत्ते कई बार आए। फिर गीदड़ टीले की ओर जाने वाले रास्ते को भी कई बार उन्होंने सूंघा था।

सियार की गवाही लेने आयोग के सदस्य अस्पताल भी गए थे। गवाही देने के बाद दूसरे दिन ही सियार अपनी कंदरा को लौट आया। उसके सिर पर पट्टी भी गायब थी। उसके माथे पर किसी घाव का कोई निशान नहीं था।

जिस स्थान पर सूअर सम्मेलन हुआ था वहां पर नगर डगर और वनांचल के सभी गधे पूरी आजादी के साथ विचर रहे थे। जूठन जितनी भी थी उसे वे एक रात में ही चट कर गए थे। हड़ताल के कारण उनके मालिक बेकाम थे। अतः गधे भी अपनी मनमानी कभी उछलते हुए कभी दौड़ते हुए और कभी चिल्लाते-चीखते करते थे। जांच आयोग के लिए यह निश्चित करना मुश्किल हो गया कि किस विशेष स्थान से सारी गड़बड़ शुरू हुई थी। चूंकि विदेशी कुत्ते डौर-डंगर आंगन की आरे कई बार गए थे इसलिए सबसे पहले सांड के मालिक का बयान नोट कर लिया गया।

"ए सांड के मालिक! ब-हुकुम पादशाह हम आपसे सूअर सम्मेलन में हुई गड़बड़ के असली वाकात सुनना चाहते हैं। तुम्हारी जो भी सही वाकफियत है, बयान करो।" अपने काले चश्मे को नाक से थोड़ा ऊपर उठा कर दुर्लभ गति ने पूछा।

अपने घुटने पर ज़ोर से हाथ मार कर सांड के मालिक ने कहना शुरू किया, "इस घुटने के बराबर मेरा कुछ भी नहीं, इसी की कसम खा कर जो कहूंगा सच कहूंगा। दिन भर भोंपू की आवाज़ ने हमारा जीना हराम कर दिया था। सूअर सम्मेलन नारों और जिंदाबाद और मुर्दाबाद की आवाज़ों से आकाश सर पर उठा रहा था। शाम होने को आई तो गीदड़ झुण्ड दर झुण्ड आए और हमारे आंगन

के सामने समूह गान में ऊंगने लगे। उस आवाज़ से हमारे सांड को बेहद गुस्सा आया। साला बचपन से ही गुस्सैल है। जब इससे गीदड़ों का समूहगान बरदाश्त न हुआ तो रस्सा तोड़ कर मिट्टी की दीवार के साथ सींग मारने लगा। हजूर! फिर भी उसका गुस्सा कम नहीं हुआ। वह दीवार फांद कर ऐसा दौड़ा कि आगे पीछे किसी चीज की परवा नहीं की। भोंपू पर नारेबाज़ी ज़ोरों पर थी इसलिए शामियानों के बीचों-बीच छलांग मारता हुआ दौड़ा। दर्जनों सूअर इसके पीछे दौड़े पर वे अपने ही सूअर शिशुओं को अपने ही पांवों तले रौंदते गए। ताज्जुब की बात यह है कि गीदड़ इतने में ही वन की ओर भाग चले थे। बस इतना ही मैं जानता हूं हजूर।"

"तुम्हारे सांड को गुस्सा क्यों आता है?" कूबड बिलाव ने पूछा।

"हजूर, पशु है। सांड को साऊंड पोल्यूशन भाता नहीं।" सांड के मालिक ने उत्तर दिया।

"तुमने अपने पशु को काबू में क्यों नहीं रखा?" चर्बी वानर ने प्रश्न किया।

"बहुत आगे निकल गया था। मैं इसको काबू करने गया तो देखा कि सुअर अपना आपा खो बैठे थे। रात को बहुत देर के बाद सांड घर लौट आया था। हां, पहचाना नहीं जाता था कीचड़ से लथपथ। हजूर! सूअर शिशुओं के घायल होने का दुःख हमें भी है। वैसे हमारा सांड बड़ा दयालू है पर साऊंड और शोर बरदाश्त नहीं करता है।"

गीदड़ को बुलावा भिजवाकर आयोग के सामने यह प्रश्न पूछे गए।

"अरे गीदड़! हलफिया बयान करो कि तुम और तुम्हारे गीदड़ भाइयों ने सांड को क्यों उकसाया था?" दुलर्भ-गति का प्रश्न था।

"कसम उस रब की जिसने नर और मादा गीदड़ बनाया, सुन्दर वन में पशु-जगत बसाया, जो पूछोगे सच-सच बताऊंगा।" गीदड़ ने पेशेवराना गवाह की भांति कसम खाई। "अपने झुण्ड के साथ मिल कर ऊंगना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हम सांड को नहीं अपितु अपने समूह गान से सूअर भाइयों के दूसरे वनों से आए मेहमानों को अपनी गायकी की पहचान करा रहे थे पर वे कोई दाद नहीं दे रहे थे। हमें क्या पता कि सांड रस्सा तोड़ कर

आएगा और हम गीदड़ों में खलबली मचाएगा। हम सभी गीदड़ सांड को गुस्से में देख कर वन को लौट आए थे। हमें इसके आगे कुछ भी नहीं मालूम?"

तपाक से कूबड-बिलाव ने प्रश्न किया, "गीदड़ गायकी सुनाने के लिए किसी ने आपको न्यौता दिया था, क्या।"

"नहीं, पर हम अपनी परंपरा के अनुसार स्वभाव से ही गए थे, और स्वभाव वश ही सभी गीदड़ एकत्र होकर ऊंग उठे थे," गीदड़ ने सगर्व सफाई दी।

"क्या आप में से कोई गीदड़ था जो लौट कर न आया था"? चर्बी-वानर ने भी गीदड़ से पूछा।

"हाय! यही एक गलती हो गई कुछेक गीदड़ माताओं से। वे अपने पिल्लों को ढूंढने निकलीं जो अपने झुण्ड में वापस नहीं आए थे। आखिर मां का दर्द उन्हें अपने पिल्लों को तलाशने पर मजबूर करता था।"

"तुम जा सकते हो।" दुर्लभ-गति ने कहा।

पाकीज़ा पकवान के मालिक को बुलाया गया था पर उसने कह दिया जो भी पकवान उसने पकाया पूरी सावधानी और सफाई के साथ पकाया था पर पानी जिस इदारे ने सप्लाई किया था, उसमें यदि मिलावट रही हो वह उसके लिए उत्तरदायी नहीं। फिर भी जिन हांडियों और देगों में पकवान पके थे उनको लेबॉरटोरी को भेजा गया था।

अस्पताल जाकर सियार का बयान दर्ज किया गया जब सभी अस्पताल के कर्मचारियों को कमरे से बाहर किया गया।

"हाय दर्द ने मारा। कमर टूटी लगती है। मैं क्या बोल पाऊंगा।" सियार आयोग के सामने ऐसे गिडगिड़ाया।

"यह बताओ, तुम सूअर सम्मेलन में क्या करने गया था?" कूबड-बिलाव का प्रशन कमरे में गूंज उठा।

"क्यों मेरा पेट नहीं है? आखिर कितने मुर्गे ज़बह हुए! कितने भेड़ू मारे गए। क्या सियार जूठन भी नहीं खा सकते हैं? मैं ने कोई जुर्म नहीं किया। हां! पाकीज़ा पकवान के उस्ताद ने एक हड्डी मेरी और फेंक दी थी और वह खाकर उसके गुण गाने भोंपू के समीप पंडाल की ओर गया ही था कि भगदड़ मच गई

और किसी ने भोंपू की नली मेरे सिर पर मार दी और मैं घायल हो गया। अरे यदि गीदड़ माताएं अपने बच्चों को ढूंढने न आती मैं वहीं पड़ा रहता। वह मुझे अपनी कंदरा तक ले गईं पर दर्द इतना बढ़ गया कि किसी को सूचना दिए बिना ही मैं अस्पाल में एडमिट हो गया।"

"गड़बड़ किसने शुरू की।" कूबड-बिलाव ने पूछा।

"मैं बेहोशी के आलम में कुछ भी नहीं देख-जान पाया।" सियार ने कह दिया जो उससे बन पाया। "होश आने पर देखा कि सुअरनियां बिलख रहीं थीं और मादा गीदड़ अपने बच्चों को वन की ओर हांक रही थीं।"

तत्पश्चात आयोग के सदस्य जाय-वारदात पर गए। उन्होंने देखा कि सारे वन और नगर-डगर के गधे मस्त हो के घूम रहे हैं और सम्मेलन स्थल की सारी जूठन वे चट कर गए हैं। उन्होंने रेशम का रस्सा पहने हुए गधे को बुलवाकर पूछताछ की।

"बोल रे गधे, तुम सब यहां क्या करने आए हो?" चर्बी वानर ने पूछा।

"जब कभी नगर-डगर में हड़ताल हो, यातायात बदं हो, हमारे मालिक हमको खुला छोड़ देते हैं। हम भी मन मौजी बनते हैं। काश! हर रोज़ ऐसा ही होता।" गधे ने नथुने फैला कर कहा।

"यह बता गधों में से किसी ने कोई लाश देखी?" दुर्लभ-गति ने पूछा।

"लाश! बिल्कुल नहीं। हां! झंडियों का काग़ज, पंख और आंतें मुर्गों की, और लिद के सिवा कुछ भी नहीं देखा।" गधे ने गवाही दी।

"क्या कोई मरा हुआ सूअर का बच्चा कहीं पर पड़ा देखा?" चर्बी वानर ने अपने कंधे खुर्चते हुए कहा।

"ऐसा तो नहीं देखा! रात भर हम सभी अपने-अपने मालिक के पास थे, फिर रात भर भेड़िये भी तो घूमते रहते हैं। उनसे पूछ-ताछ करो?" गधे ने परामर्श दिया।"

अपनी गवाही देने के बाद गधा दूसरे गधों के संग उछलने कूदने मे मस्त हो गया। सारा मैदान सचमुच में गधों का मैदान लगता था। दूर जाकर गधे ने लंबी जम्हाई ली और फिर टांगें पसार कर धरती पर लेट गया।

☆☆☆

खुली फिज़ा में दिन भर टांगें पसार कर आराम करने के बाद सारे के सारे गधे खुले मैंदान में मौज मस्ती में निश्चिंत विचरने लगे। गधा वयोवृद्ध गधों से एक-एक कर मिलने गया और सबसे एक ही बात पूछता रहा-"अपने में लीडरशिप पैदा करने का अर्थ क्या होता है"?

सब गधे सुनके अनसुनी कर देते थे। गले में मुलायम रेशमी फंदा डाले हुए गधे ने प्रश्न पूछते हुए ही जैसे उत्तर हासिल किया हो। कुछ देर आंखें मूंद कर विचार मग्न होकर उनमें नई स्फूर्ति आ गई और ढींचू-ढींचू की आवाज़ से सभी गधों को अपने सामने एकत्र किया और कवि की भांति तरनुम में कहने लगाः

गधा गधा मिल के बैठें, मिल के करें मश्वरा
मालिक से छुटकारा पाएं, हक़ की लड़ें लड़ाई

बाकी गधे खामोश कैसे बैठ सकते थे, उन्होंने भी सुर के साथ सुर मिला लियाः

हक की लड़ें लड़ाई हक की लड़ें लड़ाई॥

गधा तैश में आकर फिर बोल उठाः

नारों का तुमुल नाद, पशु अंचल ज़िंदाबाद

गधे के सिर सजें ताज 'लीडरशिप' का यही राज़

बाकी गधों ने कोरस में उत्तर दियाः

लीडरशिप का समझे राज़ लीडरशिप का समझे राज़

गायन और नारेबाज़ी का हंगामा जारी ही था कि सभी गधों को बड़ी-बड़ी सिविल ट्रकों ने चारों ओर से घेर लिया। मैदान से बाहर आने का कोई रास्ता खुला नहीं छोड़ा गया था। सारे के सारे गधे सट कर मैदान के बीचों बीच आतंकित होकर नारे देने लगे। जिसको अपने बुद्धि बल से सींचा.... पशु अंचल हमारा है..... वह पशु अंचल हमारा है..... वह पशु अंचल हमारा है।

ट्रको सें मुस्तंड लठैत नीचे आए और सभी गधों को घेरे में लेकर एक-एक कर के ट्रकों में भरते गए। दस-दस पंदरह गधे एक-एक कर एक ट्रक में समा गए। न उनके नारे और न उनका शरीर उनको मुस्तंडों से बचा पाया। जब मैदान में कोई गधा नहीं रहा तो सारे के सारे ट्रक वहां से चल दिए। सारा

काम रात के अंधेरे में हुआ। चूंकि दो तीन दिवस सारे वन आंचल में कर्फ्यू लगा दिया गया था इसलिए किसी को यह पता न चला कि गधे कहां चले गए। कुछ दिनों बाद जब मालिक गधों की तलाश में निकले तो कहीं से किसी गधे की कोई निशानी भी नहीं मिली। पुलिस में रपट दर्ज कराने गए तो उनसे गधों का नाम, नक्श, उम्र और निशानी याने शनाखत पूछी गई तो सभी रिपोर्ट्स में समानता पाई गई और पुलिस किसी एक भी गधे को पशुआंचल व सुंदरवन से प्राप्त करने में नाकाम हो गई। सरकार ने सुझाव दिया कि गधों के मालिकों को घोड़ों द्वारा चलाई जाने वाली रेहड़ियां खरीदनी चाहिएं जिसमें दोनों-समय और धन का लाभ हो सकता है। साथ ही घोषणा की गई कि नई ट्रक खरीदने के लिए बैंक और सरकार कम ब्याज पर कर्ज़ा भी देगी। गधों को पूरी तरह भूल कर मालिकों ने घोड़े और रेहड़ियां खरीदीं। कुछेक ने ट्रक भी खरीदे।

स्कूलों के बच्चों की पाठ्य पुस्तकों के प्राइमर पर डी फार डंकी लिखा होता था और बच्चे अपने प्रिय मनोविनोदी पशु को पहचान कर डी फार डंकी याद किया करते थे, लेकिन गधों के गायब हो जाने से वह चित्र देख कर इस पशु को न पहचान सके इसलिए पुस्तकों में डी फार डेविल लिखा गया। डेविल की सूरत लंबे दाढ़ी वाले की सी बनाई गई। हर दाढ़ी वाले को डेविल कहना उचित नहीं था इसलिए पुस्तकों में चित्र बदलते गए और अब डी फार डनलप लिखा गया मिलता है। नहीं तो डी फार डारलिंग।

गधों के गायब होने की बात सारे वन में फैल गई और फिर भी सियार और गीदड़ खामोश थे। सभी पशु आपस में खुसर-पुसर करते रहे पर किसी ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि गधे कहां गायब हो गए। कुछ दिनों तक सारे सुंदरवन में मौत की-सी खामोशी छाई रही। न कोई हंगामा न कोई नारेबाज़ी। केवल गधों के मालिकों का एक शिष्टमंडल वन-प्रमुख से मिला। वन-प्रमुख ने कहा, "सारी सरकारी मशीनरी गधों को ढूंढ निकालने के लिए काम में लगाई गई है। यह एक साज़िश लगती है। ज़रूर इसमें किसी विदेशी ताकत का हाथ है। यदि सरकार गधों को ढूंढने में नाकामयाब रही तो मालिकों को मुआवजा दिया जाएगा।' इस आश्वासन से सभी मालिक खुश हो गए और कुछ ही दिनों में एक लंबी फेहरिस्त बन गई जिसमें असली मालिकों के नाम कम और नकली मालिकों के नाम ज़्यादा थे। गीदड़ और सियार का नाम भी सूची में दर्ज था। दोनों

एक-एक गधे के मालिक बताए गए थे। सूची में अपने नाम देख कर सियार ने गीदड़ से कहा, 'यार अब खुश रहना। शिकायत न करना। यदि खर-बेहबूदी फंड खत्म कर दिया जाएगा तो उस धनराशि को जनरल सबसिडी के साथ मिलाकर अन्न सस्ते दामों में मिला करेगा।"

गीदड़ ने जबड़े फैलाकर हामी भर दी। "आज तो तुमने सच्ची यारी निभाई। लेकिन यह तो बताओ, आखिर गधे गए कहां?"

"समय आने पर बताऊंगा, फिर अभी सरकार को भी कोई सुराग नही मिला। मैं क्या जान सकता हूं।" सियार ने नीतिज्ञ की तरह समझाया।

गीदड़ इतने में ही खुश था कि उसका नाम मुआवज़े की सूची में था और सियार इसलिए खुश था कि गीदड़ को सियार के विरुद्ध कुछ भी बोलने का साहस नहीं होगा।

ऐसा पुराने जमाने की लोकगाथाओं में होता था कि कोई मानस, पशु या राक्षस किसी भी समय कहीं भी गायब हो सकता था पर आज के ज़माने में नहीं। ट्रकों में भर कर गधों को रातों-रात सुंदरवन आंचल की सीमाओं से बाहर ले गए। बेचारा गधा! गले में रेशमी मुलायम माला पहने ही एक ट्रक में आठ-दस गधों के मध्य टांगों पर खड़ा लड़खड़ाता हिचकोले खाता सोच रहा था कि सियार और गीदड़ ने कोई साज़िश रच कर गधों को मरवाने की सोची है। नहीं तो गधों के नारों से वन-व्यवस्थापक डर गए हैं। या यह भी हो सकता है कि गधों के एकजुट होने से, लीडरशिप का अर्थ समझने से, उनको सज़ा मिल रही हो। या सब गधों को बंदी बनाकर बंदीगृह में धकेल दिया जाए। उसे मालिक की याद आई जो उसे लताड़ता था, पीटता था, पर पालता भी था। उसे खुला छोड़ देता था। पर कभी किसी ट्रक में उसे कहीं नहीं ले गया था। दूसरे गधों के धक्के खाकर उसे अच्छा नहीं लग रहा था। वह भयभीत होता जा रहा था। सारी ट्रक के ऊपर तरपोलिन ऐसे डाल दिया गया था कि अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। समय का भी कोई अंदाज़ा नहीं था। फिर भी उसे लग रहा था कि रात का सफर तो कब का कट चुका है और ट्रक की गड़गड़ाहट के सिवा उसे कुछ भी सुनाई नहीं देता है। उसे अपने किये पर अफसोस हो रहा था। क्यों वह सियार और गीदड़ से मिला था। क्यों वन-प्रमुख से मिला था क्यों बूढे हांगुल से मिला था। हाय! क्यों उसने स्वप्न देखा। क्यों नारेबाजी की। क्यों लीडरशिप

का अर्थ उसकी समझ में आया। न जाने अब उसकी किस्मत में क्या बंधा होगा, साथ में दूसरे गधों को भी फंसाया।

तपाक से ट्रक रुक गई और सभी गधे पहले एक ओर झटका खा गए और फिर दूसरे ही क्षण वापस झटके के साथ उन सबकी गर्दन भी एक ओर से मुड़ गई। सभी गधे संभल गए। कुछ समयोपरांत ट्रक का फट्टा खोल दिया गया। मुस्तंडों ने एक फट्टा ट्रक के साथ जोड़ा और ट्रक पर चढ़कर गधों को कानों से पकड़ पकड़ कर नीचे खुला छोड़ दिया। नीचे आकर कुछ गधे कुछ क्षण के लिए धराशायी रहे पर जल्दी ही संभल गए। एक मुस्तंड ने ज़ोर की सीटी बजाई और सभी गधों को नदी की ओर हांका।

जो गधा अभी भी ट्रक के समीप ही था उसकी ओर नज़र घुमाकर जब मुस्तंड ने देखा तो एक मोटी गाली देकर उसकी माला को पकड़ कर गुस्से में चिल्लाया, " वाह अपने मालिक के मजनू! क्या रेशम की डोरी गले में सजाई है आशिक मिजाज ने! सब चरबी उतर जाएगी अब गधे की। अरे वाह। इस डोरी पर तो बीच-बीच में अंक भी लिखे हैं। साला ज़रूर फंसायेगा। यह शिनाख्त के अंक तो नहीं?" फिर उसने चिल्लाकर किसी को पुकारा, "उस्ताद जी यह गधा शिनाख्ती है।"

"शिनाख्त मिटा दो।" उस्ताद ने दूर से ही उत्तर दिया। मुस्तंड ने चाकू से गधे की डोरी काट ली। इस अंधेरे में भी क्या चमक रहे हैं यह अंक! क्या अंक है-तीन सात शून्य! वाह फिर लंबी लकीर फिर तीन सात शून्य। क्या नंबर है। गधे का भी नंबर होता है क्या? या रोल नंबर!" फिर उसी डोरी से गधे को पीटते-पीटते हांक कर आगे ले गया। गधे को सारा स्थान अजनबी लगा। वह यहां कभी नहीं आया था। उसे ठंड महसूस हुई। शीतल ब्यार चल रही थी। नदी में बहता पानी झरने की भांति झर-झर ध्वनि से वातावरण को शरदकालीन ठंड बख्श रहा था पर गधा अंदर ही अंदर जल रहा था। जिस माला के लिए उसे मन में श्रद्धा पैदा हो रही थी वह उससे छीन ली गई। सब गधे नदी के किनारे ले जाए गए ताकि वह पानी पी सकें। फिर सबको खुली जगह पर साथ-साथ रखा गया। गधे को लगा कि रात का समय है और वह किसी ऐसे स्थल पर पहुंच गए हैं जो पर्वतों से घिरा है। यहां थोड़ा-सा ही आकाश दिखाई देता था।

धीरे-धीरे धरती पर टांगें फैला कर सोने लगे। गधा भी सो गया पर उसे देर तक नींद नहीं आई।

प्रातः आंख खुलते ही गधे को यह स्थान उसके सुंदरवन से अधिक सुंदर दिखाई दिया। ऊंचे-ऊंचे पहाड़। बहते झरने। सब्ज़ घास के मैदान। उसने भी घास चरनी शुरू की पर यह इतनी नर्म और ताज़ा थी कि उसे मतली होने लगी फिर भी जी कड़ा करके खाने लगा। आस-पास कहीं कूड़ा दिखाई नहीं दिया। इसलिए कुदरत की इस देन से ही पेट भरना पड़ा।

अचानक ट्रकों से पूं-पूं की आवाज़ आने लगी और मुस्तंडों ने गधों को एक-एक करके ट्रकों में बेदर्दी के साथ भरना शुरू किया। इस बार तरपोलीन ट्रकों पर नहीं फैलाया गया इसलिए गधे देख भी सकते थे कि उन्हें कहां ले जाया जा रहा है।

जब सभी गधे ट्रकों में भर दिए गए तो सारी ट्रक-कॉनवाय पर्वतों पर चढ़नी शुरू हो गई और गधे हिचकोले खाने लगे। कोई भी गधा अपना मुंह ट्रक से बाहर न निकाल सका। ट्रक के दीवार उनके क़द से ऊंचे थे। एक ही झटके में सभी गधे एक ओर जैसे ही लुढ़कने को होते थे तो दूसरे ही क्षण वे दूसरी ओर धक्के खा जाते थे। एक ही स्थिति में दिन भर रहने से उनकी टांगें शिथिल पड़ गईं। खुले पर्वतों, वृक्षहीन वातावरण को देखकर गधे जान गए कि उन्हें मौत की घाटी में ले जाया जा रहा है। बेचारा गधा इस सबके लिए अपने को दोषी मान रहा था। ऊबड़-खाबड़, ऊंचे-नीचे, टेढ़े-मेढ़े पर्वतीय रास्तों से चल कर मध्यान समय ट्रक कॉनवाय काफी ऊंचाई पर रुक गई और फट्टे नीचे करके मुस्तंड गधों को ट्रकों से नीचे उतारने लगे। बेचारा गधा नीचे आकर, टांगों में मोच महसूस कर रहा था। अतः खड़ा न रह सका, और पृथ्वी पर गिर पड़ा। सारा आकाश घूमता दिखाई दिया। और इधर की पर्वतमाला उधर की पर्वतमाला के साथ टकराती दिखाई दी। सांस लेने में भी कठिनाई हो रही थी।

☆☆☆

सात दिन के बाद जब दुलर्भ-गति अपनी रिपोर्ट वन प्रमुख को सौंपने गया केवल चरबी वानर उसके साथ था। तीन सौ पृष्ठों पर आधारित वृहद रिपोर्ट

को तैयार करने में केवल दुलर्भ-गति जैसे काबिल और अनुभवी न्यायप्रिय हिरन का अधिक योगदान था। पर व्यवस्थापक नाराज़ थे, क्योंकि कूबड़ बिलाव ने रिपोर्ट की कुछ बातें प्रेस को बता दी थीं। पशु-कीर्ति ने अपनी एक सुर्खी में लिखा था, 'सुअर सम्मेलन में सुअर पिल्लों की हत्या के ज़िम्मेदार भेड़िये हैं' पर पत्रिका में इससे अधिक वर्णन नहीं दिया गया था। इसलिए दुलर्भ-गति का घेराव करने के लिए सभी भेड़िये एकत्र हो गए थे।

'आज तक हम सभी भेड़िये शांतिप्रिय और सरकार के वफादार शहरी माने जाते थे लेकिन आज हमारे ऊपर कीचड़ उछाली गई है। इसलिए भाइयो एहतिजाज करने के लिए इक्ट्ठे हो जाओ। हमारा किरदार दागदार किया जा रहा है।' कालू भेड़िया, जो शकल से ही भयानक लगता था अपने साथियों को उत्तेजित कर रहा था। कालू के शब्द सुनते ही सभी भेड़िये गर्ज उठे और भयानक आवाज़ में नारे बुलंद करने लगे। 'दुलर्भ-गति सांप्रदायिक है। उसकी रिपोर्ट गलत है। बे-बुनियाद है।' आखिर में एक ही नारे को सभी भेड़िये आकाश में गूंजित करते रहे। 'हम पर लगे इलज़ाम को वापस लो, वापस लो।'

खूंखार भेड़ियों के सूमह को देख कर वन व्यस्थापक सतर्क हो गए। उन्होंने धारा-१४४ लगाकर जलसे-जलूस पर पाबंदी लगा दी और भेडियों के जलूस को तितर-बितर करने के लिए हल्का लाठीचार्ज भी किया, अश्रु-गैस का प्रयोग किया। कुछ भेड़िये घायल हो गए, कुछ चोट खाकर बेहोश हो गए पर अधिकतर भेड़िये भाग गए।

दूसरे दिन दुलर्भ-गति के घर के बाहर कई जाने-अनजाने वन पशु चेहरे एक दिन की भूख हड़ताल पर बैठ गए। उनके पीछे जो बैनर थे उन पर लिखा था, 'भेड़िया संप्रदाय पर लगे आरोपों को साबित करो। साज़िश को नंगा करो। दुलर्भ-गति आयोग की रिपोर्ट झूठ का पुलिंदा है। पशु एकता ज़िन्दाबाद' जो भी भूख-हड़तालियों को देखता था, घबरा जाता था पर प्रेस के कैमरे रोशनी चमका-चमका कर फोटो पर फोटो खींचे जा रहे थे। लाठी लेकर चंद पुलिसकर्मी भी भूख हड़ताली टेंट के समीप पहरा दे रहे थे। वास्तव में दो सो रहे थे और एक बीड़ी के चुस्के लगा-लगाकर आने-जाने वालों को देख रहा था।

वन-प्रमुख के सचिव ने संवाददाता सम्मेलन में घोषणा कर दी कि आयोग की रिपोर्ट पर अमल करने के बाद छापा जाएगा। आयोग पूरी तरह मृत

सुअर-पिल्लों की संख्या और उनकी लाशों के बारे में कोई विशेष ब्यौरा नहीं दे पाया था। सरकार कूबड़ बिलाव से नाराज हो गई थी। उसने आयोग की रिपोर्ट के कुछ अंश लीक-आउट किए थे। इसीलिए भेड़िये आंदोलन पर उतर आए थे।

पिछले हफ्ते तीन दिन कर्फ्यू में काटे गए थे और अब अशांति का वातावरण फैल रहा था। ऐसे में अल्पसंख्यकों अर्थात् हांगुल और हिरण जाति में भय छा जाना स्वाभाविक था। पवित्र पोखर के बड़े चिनार की छाया में कई हांगुल और हिरन बुजुर्ग आपस में मंत्रणा करने लगे। 'अब जो कुछ हमारे सुंदर वन में हो रहा है उससे मन आशंकित ही नहीं अपितु भय छाने लगता है। इसलिए विचार करना होगा कि हमें क्या करना चाहिए'। बुद्धिजीवी हांगुल ने कहा।

'क्या करना चाहिए। हम क्यों डरें। हमें अपने शृगों पर भरोसा करके अपने विरोधियों को हताहत करना चाहिए।' जोशीले युवा हांगुल ने ओजपूर्ण वाणी में कहा।

'हमारे सींग हमारे अपने निजी बचाव के लिए हैं, इसमें कोई शक नहीं पर हमारी चिंता का विषय हमारी संपूर्ण जाति है।' बूढ़े हांगुल ने ओजपूर्ण वाणी में कहा।

इसी समय ठंडी व्यार के तेज झोकों से जैसे वातावरण में शीतलता छा गई। बुद्धिजीवी हांगुल ने राय दी कि एक प्रपत्र लिख कर वन प्रमुख को अपनी समस्याओं और भय से आगाह करना होगा ताकि व्यवस्थापक समुचित कार्रवाई करें। अतः इसी आशय का प्रस्ताव पारित करके सभा विसर्जित हुई।

युवा भेड़िये जो दुलर्भ-गति के घर पर घेराव करने गए थे पकड़ लिए गए और थाने में बंद करवा दिए गए। उनमें से कुछेक को दो-चार दिन बाद छोड़ दिया गया और शेष को जेल भेज दिया गया। पुलिस गीदड़ के घर रात को छापा मार कर उसे उठा ले गई, जिस पर सियार परेशान हो गया। उसे डर होने लगा कि कहीं उसे भी पुलिस उठा न ले जाए। इसलिए वह रातों-रात वन-प्रमुख की रिहायश पर पहुंच गया।

'हाय! हाय! अब अपने वर्करों पर ही विपत्ति आने लगी। मैं अपने निवास पर कौन-सा मुंह लेकर बैठूं। क्या कहूं अपनी जात-बिरादरी से। क्यों मेरे

यार गीदड़ को पुलिस उठा कर ले गई। उसका दोष क्या हैं'? सियार एक ही सांस में बोल गया।

इस पर वन-प्रमुख ने शरबत का एक गिलास मंगवा कर सियार को पिलाया। ठंडा होकर जब वह कुछ कहने ही वाला था तो वन-प्रमुख ने कहा, 'पार्टी वर्कर को व्यवस्था के कामों में दखल नहीं देना चाहिए। गीदड़ ने सुअर सम्मेलन में गड़बड़ मचवाकर हत्याएं करवाईं। अब जब केस अदालत में जाएगा और यदि इल्ज़ाम साबित हुआ तो उसे सज़ा होगी नहीं तो.....'

'नहीं तो क्या', सियार भड़क कर बोला।

'छः महीनों में ही बरी हो जाएगा। अब तुम जा सकते हो।' यह कह कर वन प्रमुख ने सियार को विदा किया। लेकिन पुनः बुलवाकर कहा, 'सुनो वन-आंचल में किसी प्रकार की अशांति बरदाशत नहीं की जाएगी। सभी वन-पशुओं से कहना।'

सियार मायूस नहीं लौटना चाहता था। उसने अपने जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियों का सामना किया था। उसे वह दिन भी याद थे जब एकाधिपति नरसिंह के विरुद्ध विद्रोह किया गया था और उसे भी जेल की हवा खानी पड़ी थी। पूरा जलसा अपने जोवन पर था। हज़ारों की उपस्थिति में पशुनायक ने सुंदर वन के सभी पशुओं का आह्वान करके एकाधिपत्य को समाप्त करने का ऐलान किया था और सियार ने अपनी जोशीली वाणी में अपनी पहली तकरीर झाड़ी थी। नेता उप-नेता और दूसरों ने उसकी खूब तारीफ की थी। पर जब उसे जेल की काल कोठरी में बंद किया गया था दो-चार दिन तक जोश का प्रभाव रहा और पार्टी के कारिंदों ने खूब खबर अतर ली पर बाद में सब धीरे-धीरे ठंडा पड़ गया और उसके घर की आर्थिक दशा बिगड़ गई थी। उसकी मां भी अपने होठों पर उसका नाम लेते-लेते मर गई थी। इसलिए अब गीदड़ और उसके परिवार का क्या होगा, उसे यह चिंता होने लगी। चिंता का दूसरा कारण यह भी था कि कहीं गीदड़ उसका नाम न साज़िशों में ले। वह किस मुंह से थाने में जाकर गीदड़ का हाल पूछ ले। कहीं पुलिस वहीं पर उसे भी पकड़ ले और बंधक बना ले। सियार दुविधा में पड़ गया। वह चुपके से नदी के किनारे तीन पत्थर पहुंचा और नदी की प्रवाह धारा को निहारता रहा। तीन पत्थर वह स्थान था जिसके बारे में मान्यता थी कि किसी ज़माने में ऋषि वहां पर तपस्या किया करते थे। तीन पत्थरों का

आकार देख कर लगता था जैसे किसी कुशल मूर्तिकार ने तीन कमल के पत्र एक समतल पत्थर के गिर्द गाड़ दिए हों। समतल पत्थर पर बैठ कर सियार को लगा कि वह ऋषि परंपरा का सच्चा अनुयायी है। वह ज्ञान मुद्रा में बैठ कर जैसे गहरी सोच में लीन हो गया।

एक युवा हिरण ने जब सियार को तीन पत्थर पर आसन जमाये बैठ कर देखा तो वह आंधी की रफ्तार से दौड़ कर अपने झुंड की ओर चला गया और अपने से बड़े हिरन और हांगुल भाइयों को बताया कि सियार तीन पत्थर पर कब्ज़ा जमाये बैठा है। सभी हिरन-हांगुल जात के पशु एकजुट होकर तीन पत्थर की आरे छलांग मारते हुए कुछ क्षणों में ही पहुंच गए। 'वह भागा। वह भागा,' कई हिरन और हांगुल तीन पत्थर पहुंचते ही चिल्ला उठे। उन्होंने सियार को भागते हुए देखा था। सब के सब हांगुल और हिरन गुस्से में थे, यदि वह सियार को पकड़ लेते तो शायद जीवित न छोड़ते। एकत्र होने के बाद उनमें वीर भावना नस-नस में गरमी का संचार कर देती थी पर अकेले-अकेले वह कायर और डरपोक ही थे। शायद स्वभाव से। नदी से पानी लाकर तीन पत्थर को नहलाया गया। सारी अपवित्रता दूर कर दी गई। तीन पत्थर, अर्ध-खिला हुआ कमल, यूं तो सारे वन-आंचल का ऐसा स्थान था जिसे हांगुल हिरन जाति अपनी आस्थाओं के अनुसार पवित्र मानते थे। और इसी स्थान को कोई अन्य पशु जाति बुरी नज़र से देखे वह कैसे सहन कर सकते थे। पर आजकल जो हालात वन आंचल में दिनों दिन पनप रहे थे उनको दृष्टि में रखते हुए चुप रहना ही उचित समझा गया। यह सुझाव बुद्धिजीवी हांगुल ने नकारा। उसने साफ कहा कि अब सियार जात इस पवित्र स्थान को अपने कब्जे में लेने का यत्न करेगी, इसलिए उन्हें सतर्क रहना चाहिए। सुंदर युवा हिरन ने कहा हमें एक सांस्कृतिक कार्यक्रम करके अपनी पूरी जाति को निमंत्रण देकर बात समझानी चाहिए और अपनी एकता का परिचय भी देना चाहिए। इस से अन्य पशु जाति में तीन पत्थर की ओर टेढ़ी नज़र से देखने की भी जुर्रत न होगी। इस प्रस्ताव से सभी सहमत थे। यह भी प्रस्ताव पारित हुआ कि युवा हिरन और हांगुल रोज़ सांझ सवेरे आकर एक डेढ़ घंटा बैठकर खेला करेंगे। ऐसे में तीन पत्थर की निगरानी होगी।

घबराया हुआ सियार घर की ओर भाग गया और सारे मौहल्ले के माहोल को जानना चाहता था। उसे डर था कि कहीं पुलिस उसके घर के बाहर

पहरा देती उसे नज़र न आए। जब उसने वहां किसी को नहीं पाया तो वह पिछवाड़े से अपनी कंदरा में घुस गया। बेचारी सियारन अधमुई-सी उसका इंतजार कर रही थी। 'कहो, कहां थे अभी तक! मैं गम में डूबी थी और अब समझ बैठी थी कि पुलिस तुम्हें भी उठा कर ले गई है।' सियारन ने आसूं पोंछते हुए कहा।

'तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं। मैं अब वह पुराने ढंग के काम कहां करता हूँ जो तुम चिंता करती हो। पर सच कहता हूं डर मुझे सचमुच ही लगा था आखिर गीदड़ के साथ घूमता-फिरता देखा जाता हूं।' सियार ने यह कह कर सियारन को सांत्वना दी।

'गीदड़ ने कौन-सा जुर्म किया है, जो पुलिस उसे उठा कर ले गई।' सियारन ने पूछा।

'उस पर झूठा इल्ज़ाम लगा है। बेचारा दूसरों की भलाई करने के नतीजे से नावाकिफ है।' कह कर सियार ने लंबी सांस ली। सियारन उसे देखती ही रही और क्षण भर की चुप्पी के बाद उसने पूछा, 'तुम मुझसे कुछ छुपा रहे हो। बोलो सच क्या है, तुम पर कोई.....'

'अरी, प्यारी नखरे वाली मेरी बीवी! काहे को डर लागे रे। भला तेरे सियार के साथ कोई छेड़ कर सकता है जब तक वह अपनी बुद्धि से काम लेता रहेगा। अभी देखती जा क्या-क्या गुल खिलाता जाऊंगा। चल सो जा, दिन भर आंसू ही बहाए हैं।' ऐसा कह कर उसने उसे अपनी बाहों में ले लिया और दोनों सो गए।

☆☆☆

होश संभालते ही गधा अपनी टांगों पर उठ खड़ा हो गया। अपनी चारों ओर नज़र घुमाने के बाद उसे लगा कि उस के साथ सभी गधे कतारों में खड़े हैं। दूसरी ओर किसी भिन्न जाति के लोग। सब के बीच में एक बूढ़ा हांगुल आंखों पर चश्मा चढाए कागज़ पर कुछ लिख रहा है। लोग छोटे कद के थे और उन के माथे चौड़े थे। उन का पहनावा भी उसे उस पहनावे से भिन्न लगा जो उस ने सुन्दर वन के लोगों को पहनते देखा था। मुस्तण्डों ने सभी गधों का घेराव किया

था और ड्रायवर लोग हांगुल के इर्द-गिर्द खड़े-खड़े मशवरा कर रहे थे। उस के बाद बौने कद के लोगों में से एक-एक कर बौना आता गया हांगुल को रूपया पैसा दे गया और एक-एक गधा उन्हें सोंप दिया गया। कुछ देर के लिए गधे की समझ में कुछ नहीं आया कि क्या हो रहा है पर जब सात-आठ गधे नए मालिकों ने अपने साथ हांक लिए वह समझ गया कि उन्हें नए मालिक मिल गए और वह बेचे जा रहे हैं। जब उसकी बारी आई एक लठैत मुस्तण्ड ने उस पर लाठी का प्रहार किया और फिर कानों से पकड़ कर खींच कर हांगुल के सामने खड़ा कर दिया। एक बौना एक बण्डल रूपयों का दे कर उस का नया मालिक बन गया और उसे न जाने कितनी ढलानों और ऊंचाइयों से, नीचे छोटी-सी नदी के पास ला कर उसे पानी पिलाया गया, उसका नया मालिक उसे नई आवाज़ों से पुकारने लगा। पानी पिला कर उसे अपने घर ले गया और उसकी एक टांग में रस्सा डाल कर एक छोटे कद के पेड़ के साथ बांध दिया। दूसरे गधों का क्या हुआ उसे कुछ खबर नहीं रही। जब शाम होने को आई तो गधा दूर से एक बहुत ही छोटे चोपाये को अपनी ओर आते देखकर विस्मय में पड़ गया। न उस की आंखें दिखाई दे रही थीं न उस का पूरा मुखड़ा ही उसे दिखाई दिया। अपने लम्बे-लम्बे बालों में उस की सारी छवि छुपी हुई थी। चोपाया सामने आ के चंव-चंव की ध्वनि में भौंकने लगा और तब गधे ने महसूस किया कि वह पशु और कोई नहीं तो कुत्ता है। कुत्ता करीब रात भर भौंकता रहा और जब गधे ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो वह गधे को अपना ही समझ कर चुप हो गया।

दूसरे दिन सुबह जब मालिक उस का रस्सा खोल के उसे हांक कर ले गया तो वह जान गया कि उसे काम पर ले जाया जा रहा है। कुत्ता भी दोनों के पीछे-पीछे हो लिया। पानी पीने वाले स्थान अर्थात् नदी के किनारे उस पर रेत का बोझ उठा कर पगडंडियों के रास्ते टेढ़े मेढ़े पहाड़ पर चढ़ना पड़ा। दूसरे मालिक भी अपने-अपने गधे लेकर पहाड़ के ऊपर रेत कंकरी, बजरी इत्यादि माल ढो रहे थे। तब गधे की समझ में आया कि सभी गधे इस पर्वत पर सड़क बनाए जाने के लिए, बोझा ढोने के लिए पहुंचाए गए हैं। अब गधे का यह नित्य कर्म बन गया था। उसे खाने को पेड़ों के पत्ते और रूखी घास ही मिलती थी। अब कुत्ता उस पर भौंकता नहीं था।

गधे को जहां तक ट्रक में लाया गया था पहाड़ी सड़क केवल वहीं तक बनी थी। उस के आगे बनाने का ठेका किसी बड़े नामी गिरामी ठेकेदार ने लिया

था। इसलिए जहां-तहां से गधे चुरा कर, उठा कर, भगा कर, डरा धमका कर यहां लाए गए थे, मुफ्त का माल मान कर लाए गए और यहां पर बौने कद लोगों को महंगे दाम बेचे गए। लेकिन गधा यह समझता था कि उसे निष्कासन मिला क्योंकि वह अपने में लीडरशिप पैदा करने के लिए सभी गधों को समझदार बना रहा था। नहीं तो सियार और गीदड़ ने कोई चाल ऐसी चला दी कि अपना रूपया पैसा भी बना लिया और गधों को नए मालिकों के हाथ बिकवाया। क्या नीति अपनाई, गधों को निष्कासन ही नहीं अपना पैसा भी वसूला और जहां बेच दिया वहां से भी गधा वापिस नहीं जा सकता। दिन को दो या तीन बार ही नदी से पहाड़ की ऊंचाई तक वह जा पाता था। क्योंकि ऊंचाई सख्त हाथी के माथे जैसी थी। कभी-कभी रेत का बोझ लेकर लुढ़कं जाने का खतरा भी रहता ही था।

शाम को घर आकर एक दिन कुत्ते ने अब गधे को दोस्त जानकर पूछ ही डाला। "कहां के रहने वाले हो? यहां आकर लगता है तुम में पहली जैसी शक्ति नहीं रही। तुम्हारे शरीर से मांस कम होता जा रहा है, पहले दिन खूब मोटे मांसल प्राणी थे।"

"क्या कहूं, यहां की खुष्क वायु और खुष्क आहार मेरी जान लेकर ही रहेगा। था तो सुन्दर वन के वन आंचल का। अब....." गधे ने लम्बी जम्हाई ली और अपनी टांगों में अपना मुंह छुपाकर खामोश हो गाया।

"और अब हो गए पहाड़ों के वाहन।" कुत्ते ने व्यंग्य किया।

"कहो जो भी कहना चाहते हो अगर दोस्त हो तो यहां से भागने की तरकीब सुझाओ।" गधे ने बड़ी ही दर्द भरी आवाज़ में कहा।

"यदि भागोगे भी, कहीं पर पकड़े जाओगे। रास्ता दुश्वार है। पहाड़ी भी। जहां तक रेत ले कर जाते हो वहां तक केवल ट्रक आते-जाते हैं सो भी ठेकेदार के। वापसी पर वह लोगों को ले जाता है, गधों को नहीं। वैसे सच बताओ उन का जीवन भी मनुष्यों जैसा नहीं लगता। पूछो क्यों," कुत्ता सहानुभूतिपूर्वक बोला। "यहां से भागने का और कोई रास्ता नहीं। अब यदि तुम ने कोशिश की तो कई दिन तक चलते ही रहोगे और खाने को कहीं कुछ भी नहीं मिलेगा। न कोई बस्ती ही दिखाई देगी। इसलिए यही अपना सौभाग्य मान लो कि मालिक ने तुझे मोल ले कर रख लिया है। कई दिनों की दूरियों के बाद कोई-कोई गांव या बस्ती दिखाई देती है। लोगों के कारवान भी अधिकतर पैदल ही चलते हैं। सो भी केवल ग्रीष्म के महीने। सरदियों में न ठेकेदार दिखाई देता है न ही सड़क बनाने का कोई काम

ही होता हैं"

"ऐसा क्यों, मेरे दोस्त, ज़रा ठीक-ठीक समझाना, अकल का मोटा हूं ना" गधे ने विनति की।

"सीधी-सी बात है। बर्फ से सारे पहाड़ ढक जाते हैं और आर-पार जाना बंद हो जाता है। कुछ लोग तो पूरे छः महीने तक भूमिगत मकानों में रहते हैं।"

घबराकर गधे ने पूछा, "और माल मवेशी, पशु-गाय बैल, उन को कहां छोड़ आते हैं"? "उन को भी अपने साथ रखते हैं, ताकि बाहिर की ठंड से बचते रहें"। कुत्ते ने समझाया। खुद वाकिफ़ हो जाओगे यहां के रहन-सहन से, अभी क्या हुआ, आगे-आगे देखो एक ही स्थान पर बैठे-बैठे टांगे सुन्न हो जाएंगी।" कुत्ते ने बताया।

गधा सोच में पड़ गया। उसे लगा कि उस के शरीर में केवल सोचने की ताकत रह गई है और शरीर जैसे ठण्ड से बर्फ बन गया है। बुद्धिजीवी हांगुल की बातें सारी की सारी सच हो गई जब उस ने उस से स्वप्न का फल पूछा था। जो जो उस ने कहा था सब सच निकला। उस ने वह बूढ़ा हांगुल भी देखा जो ट्रक में ठेकेदार की ओर से उन को बेच कर रूपयों के बण्डल इकट्ठे कर रहा था उस में जैसे पशुओं के प्रति सारी सहानुभूति का स्रोत मन में सूख गया था। केवल रुपया ही उस का धर्म-कर्म बन गया था। काश वह वापस जा कर वनांचल के सारे पशुओं से कह पाता कि किसी ठेकेदार ने सारे गधे गुलाम बनवा दिए, बेच दिए। कहाँ बेच दिए, केवल वह एक जानता है—बूढ़ा हांगुल।

"कुत्ता दोस्त, क्या तुम लीडरशिप का अर्थ जानते हो।" गधे ने ऐसे ही उत्सुकता से प्रश्न किया।

"वह क्या होता है?" कुत्ते ने जानना चाहा। "मालिक से आज़ादी" गधे ने कहा।

"ना बाबा ना। अपने में वफादारी से बढ़कर और कोई धरम-करम नहीं। हां कभी पापी पेट के लिए दूसरों की जूठन खानी पड़ती है।" कुत्ते ने कहा। और एक दम उछल के थोड़े समय के लिए कहीं चला गया।

"चला गया! वफादार कहीं का। कुल वज़न तीन सेर से अधिक नहीं होगा और टांगें देखो क्या हैं! बस मेरे सुम की ऊंचाई के बराबर और मुखड़ा

इसका, दिखाई नहीं देता। कभी ही सिर के बाल बिखरने से चाकलेटी आंखें दीखती है।" क्या समझेगा वन प्रमुख ने मुझ से क्या कहा था, "अपने में लीडरशिप पैदा करो।" और फिर मेरा स्वप्न। वाह! गधा अकेले में सोचता रहा जब तक उस की आंख लग गई।

आंख लगते ही उस ने पुनः स्वप्न देखा। क्या देख रहा है कि उसे स्वर्णिम वस्त्रों से सजाया गया है। रात का समय है। वह एक शोभा-यात्रा के बीचों-बीच बड़े ही अन्दाज़ से कदम उठाते चल रह है। यात्रा के आगे हिरन अपने शृंगों में रंग-बिरंगी मशाल लिए हैं और उन के पीछे-पीछे हांगुल शहनाई बजाते हुए क़दम-क़दम चल रहे हैं। सियार लाल और हरी वर्दी पहने ब्रॉस बैण्ड बजाते हुए चल रहे हैं उन के बीचों-बीच सुशोभित गधा। गधे के पीठ पर एक बड़ा फ्रेम जिस के ऊपर एक सुनहला छाता। बैण्ड पर "गधा घर आया, गधा घर आया" की धुन बजाई जा रही है। इस धुन पर गधा झूम उठता है। सब के पीछे सूअर अपने दांतों में जलती अगरबत्तियां ले कर जा रहे हैं। शहनाई और ब्रास बैण्ड की धुन पर कुत्ता फुदक-फुदक के नाच रहा है। गधे को लगा कि शोभा यात्रा काफी दूर निकल गई है जहां एक अंध गुफा के सिवा कुछ भी नहीं और सारे पशु इस गुफा के अंधकार में गायब हो रहे हैं। अंधेरा देख कर गधा डर गया और मस्ती में झूमना छोड़ कर उस ने वापस आकर भागने की सोची कि उसे धड़ाम से ठोकर लगी और उस का स्वप्न टूट गया।

आज भी स्वप्न टूट कर जागते ही गधा पछताने लगा। वह अंधकार से क्यों डरता है? क्या और भी प्राणी डरते हैं? हाय! अब यह स्वप्न का फल किस से पूछने जाएं। काश उसका मिलाप बुद्धिजीवी हांगुल से होता।

गधा सोच ही रहा था कि कुत्ता धीमी गति से आ कर गधे के पास बैठ गया। "कहां गया था?" गधे ने कुत्ते से पूछा। लम्बी सांस खींच कर कुत्ते ने कहा। "क्या कहूं! मेरी प्यारी कुत्ती ने पांच बार चार-चार बच्चे जने। और आज उसके पास एक भी बच्चा नहीं है। उस दुखियारी का मनोबल रखने के लिए कभी-कभी उस के पास जाना पड़ता है।" कुत्ते ने अपना दर्द व्यक्त किया।

गधा यह सुन कर जैसे चकित हुआ और बोला, "तुम्हारे बच्चे कहां गए"? "जन्म के दस दिनों तक अपनी मां के साथ रहे और ज्यों ही उन की आंखें

निकल आईं, वह देखने समझने लगे, तो मालिक ने एक-एक कर पिल्लों को बेच डाला। बच्चे हमारे और कमाई उस की।" कुत्ते ने कह कर अपना मुंह अपने पंजों में छुपा लिया। ऐसा लगता था कि वह रो रहा है।

"तुम ने विद्रोह नहीं किया?" गधे ने राजनीतिज्ञ की भांति कहा "होशयारी, पहरेदारी और वफादारी के सिवा हमारा कोई गुण हमारे स्वभाव में नहीं।" कुत्ते ने सफाई दी।

"हमारे वन-आंचल के कुत्ते बिकाऊ नहीं। उन की संख्या जब बढ़ जाती है तो नगर-पालिका के कर्मचारी उन्हें विष मिला हुआ मांस खिला कर मार देते हैं।" गधे ने कहा।

"ऐसा। तो उन की संख्या बढ़ती ही नहीं होगी?" कुत्ते ने कहा। "वोट बैंक भी नहीं। वफादार की अब आवश्यक्ता भी नहीं रही।" गधा दार्शनिक की भांति बोला।

"तो सो जाओ अब! रात बहुत हो गई है। कल फिर बोझ उठा कर पहाड़ पर ऊपर ले जाना होगा।" कुत्ते ने राय दी और दोनों ने सो जाने की कोशिश की। गधे को नींद नहीं आ रही थी अतः बोल उठा, "कुत्ता दोस्त! तुम ने शोभा यात्रा देखी है?"

"नहीं मैंने केवल कारवान देखे हैं। जब विदेशियों के जत्थे यहां से गुज़रे हैं। घोड़े, सुरा-गाय, भेड़ बकरियां। हमारे सारे पिल्ले विदेशियों को ही बेचे गए।" कुत्ते ने कहा।

"तुम स्वप्न देखते हो?।" गधे ने पूछा।

"नहीं। स्वप्न देखना उन का काम है जिन की आशाएं हैं, मनोकामनाएं हैं, महत्वाकांक्षा है। मुझ में यह सारा खत्म हो चुका है। बस कुछ खाने-पीने की और दिन गुज़ारने की ही चिन्ता लगी रहती है। यहां वातावरण कुछ ऐसा है कि कई-कई दिन तक खाने को एक दाना भी नहीं मिलता। तो नींद नहीं आती। स्वप्न कैसे देखा जाए।" कुत्ता बोला।

"मैंने एक हसीन स्वप्न देखा। यदि मैं वन-आंचल में होता तो बुद्धिजीवी हांगुल के पास छलांगें मारता हुआ जाता और उस से स्वप्न का फल पूछ लेता।

वह सुन के एकदम फल कह देता है।" गधे ने यह कह कर दाएं-बाएं अपना सिर घुमाया जैसे दाद दे रहा हो। फिर वह उठ खड़ा हो गया और ढींचू-ढींचू की आवाज़ से चहुँ दिशाओं को हिला दिया। कुत्ता यह आवाज़ सुन कर भयभीत हुआ अतः वह भी खूब भौंकने लगा।

दोनों की चिल्लाहट से मालिक जाग गया और बाहर आ कर दोनों को गौर से देख कर, लट्ठ बरसाए जब तक कि दोनों पशु चुप हो गए।

☆☆☆

सूर्य उदय से पहले ही घर से निकल कर सियार सीधे बड़े ठेकेदार के घर पहुंच गया। पूछताछ के बाद मालूम हुआ कि कई दिनों से अपने सात सितारा होटल से घर नहीं लौट आया है। अतः सियार तेज़ रफ्तार से सरोवर के किनारे सबसे बड़ी इमारत, सात मंजिला सात सितारा होटल पहुंचा। बड़े गेट के सामने खड़े होते ही उसे अहसास हुआ कि उसने आज अपनी शान के मुताबिक कपड़े नहीं पहने हैं। " क्या समझ लेंगे यहां के नौकर लोग। न जाने किस नाम से पुकारा करते होंगे मेरी पीठ पीछे।" सियार सोच में पड़ गया। फिर भी अनुभवी सियासतदान की तरह उसने द्वार खटखटाया और चपटी नाक वाले चौकीदार से पूछ लिया कि उसे साहिब से मिलना है।

"साहिब अभी सोये हैं।" चौकीदार ने कहा।

"जाकर उनसे कहो सियार-यार-कलाकार आया है।"

सियार ने कहा और सारे सरोवर की ओर प्रातः कालीन नज़ारा देखने लगा। अब चौकीदार ने सियार को कुछ-कुछ पहचान लिया। क्योंकि वह इससे पहले भी आता-जाता देखा गया था।

"आप अंदर आइए ना और बैठक में इंतज़ार कीजिए।"

चौकीदार ने अपनापन जतलाते हुए कहा।

सियारः अंदर चला गया और आराम से हाथ-मुंह पौंछते हुए साहिब ने प्रवेश किया। "अरे ओ सियाका (सियार यार कलाकार) मैं कई दिनों से तुम्हारा इंतजार कर रहा था। तुम्हारी सुझाई स्कीम हंडरड प्रतिशत कामयाब हो गई।"

फिर वह सियार के पास आकर कान में कहने लगा, "अब यहाँ एक भी गधा नहीं दिखाई देता। तुमने सचमुच मुझे भारी खर्चे से मुक्त कराया।"

"साहिब मेरा हिस्सा।" सियार ने झिझकते हुए कहा।

"अरे हां, आजकल ज़रा हाथ तंग है, फिर भी थोड़ा इंतज़ार करना पड़ेगा जब तक कि बूढ़ा हांगुल दफ्तर में आ जाए। तुम्हें मालूम है ना कि मेरा सारा हिसाब-किताब वही रखता है। मेरे दो ही सलाहकार हैं एक वह बूढ़ा हांगुल और सियाका" साहिब ने खुशामदी लहजे में कहा और फिर अपने आप हंसने लगा।

"मेरा एक काम करवाइये।' मौका जानकर सियार ने कहा, "मेरा यार गीदड़ थाने में बदं है। शक की बिना पर। उससे मिलने को और हाल पूछने को जी चाहता है।"

"अरे यह कौन-सी बड़ी बात है। मैं चिट्ठी लिख देता हूँ एस. एच. ओ. के नाम, मिल लेना अपने यार से" साहिब ने लीडराना अंदाज़ में कहा और अंदर चला गया। इतने में एक बैरा प्लेट में मुर्गे की टांग और चाय लेकर आया और सियार के सामने रखकर चला गया। सियार मुर्गे की टांग को दोनों पंजों से उठाकर खाने लगा पर चाय का एक घूंट भी उसने नहीं पिया। साथ में पड़ी तौलिया से मुंह और हाथ उसने पौंछ लिए, शायद अपने जीवन में पहली बार। और फिर ऐसा अकड़ कर बैठा जैसे दस चूज़े खाने के बाद चील ऊंचे पेड़ की ऊंची टहनी पर बैठती है। कुछ समयोपरांत साहिब एक कागज़ सियार के हाथ थमाते ही बोला, "यह चिट्ठी लो। थानेदार के नाम। मिल लेना गीदड़ यार से और अब जाकर दफ्तर में बैठो, बूढ़ा हांगुल आता ही होगा और ले जाना अपना हिस्सा। बड़ा वफादार है वह। काले धन को सफेद बनाकर देता है। दाद देता हूँ मैं उसकी बुद्धि की।"

सियार ने पत्र लिया, अपनी मोटी दुम हिलाई और कमरे से बाहर चला आया।

बूढ़े हांगुल से एक थैले में नोटों के कई बंडल लेकर सियार सीधे घर चला गया और सियारन को कंदरा के अंधकार भरे कोने में ले जाकर थैला हाथ

में थमाते बेाला, "ले यह वह कमाई है जो बुढ़ापे में काम आने वाली है। ज़रा होशियारी से संभाल कर रखना, और हां किसी को पता न चले तेरे पास क्या है।"

"क्यों मुझे क्या समझता है, मैं न होती तो तुम कबके दूसरे पशुओं के आहार बन गए होते।" सियारन ने प्यार के साथ अहम भाव व्यक्त किया और सियार बाहर चला आया।

थाने के बाहर पहुंच कर सियार हालात का जायज़ा लेने लगा। सभी ओर से सब कुछ नारमल जानकर वह सीधे एस. एच. ओ. के कमरे में जा पहुंचा। सियार को देखते ही एस.एच.ओ. खुश होकर बोल उठा, "आइये-आइये सियार भाई। जी करता था आपसे खुद मिलने जाऊं।" यह शब्द सुनकर सियार का रंग बदल गया। वह जान गया कि मामला कुछ संदेहात्मक है। "क्यों भाई, मैंने कौन-सा जुर्म किया है। यह लीजिये पत्र अपने नाम। शक की बिना पर आपने बिचारे गीदड़ को धर लिया है। उसी का हाल पूछने आया हूं।" सियार ने अपनी कह डाली।

"बस उसी के बारे में पूछना था। जब उससे तफतीश की गई तो कहता था वह सूअर सम्मेलन में आपके कहने पर गया था।" थानेदार ने सियार से कुछ जानने के अंदाज में कहा।

"अरे साहब, हम सियार-गीदड़ जात के पशुओं में सौ झगड़े सही पर जब ऊंगने का समय आया तो बस न आव देखा न ताव लगे इकट्ठे ऊंगने जिसका नाम शास्त्रों में गीदड़ गायकी रखा गया है। बेचारा यूं ही फंसाया गया है। अब आप ही बताइये ना, उसका क्या दोष।" सियार ने सावधानी के साथ धीरे से कहा। "अब ऊंगना सबको नहीं भाता। इसी से कुछ गड़बड़ हो गई होगी और बिचारा फंस गया गीदड़।"

"तुम्हारा कथन उससे मिलता-जुलता ही है, पर वहां जाने के कारण," थानेदार ने पुनः पूछा।

"जब भी कोई सम्मेलन हो तो दो-चार सौ से अधिक मुर्गों के कटने-पकाने की बारी तो आती ही है। उनकी आंतें कौन खाता है। आप क्या सियार गीदड़ जाति से उनका निवाला भी छीन लेंगे।" सियार ने समझाई अपने मन की बात।

"अरे हां, बात तो सौ फीसदी सही लगती है, बहरहाल तुम मिल लो अपने गीदड़ से। हो सका तो मैं उसे छुड़वाने की कोशिश करूंगा। पर.....र"

"आप उसकी चिंता न कीजिए, चाय पक्की" सियार ने प्रसन्नता के साथ कहा और अपने गीदड़ यार से मिलने गया।

सलाखों वाले दरवाज़े के अंदर कमरे में कोने में गीदड़ दुबक कर बैठा था। अपना मुंह उसने अपनी चार टांगों और मोटे दुम के बीच छुपा लिया था ज्यों ही सियार ने कमरे के अंदर नज़र घुमाई तो क्या देखता है कि दो छोटे चूहे गीदड़ के आजू-बाजू खेल रहे हैं। कोई उनमें बीच-बीच में उसके ऊपर फिर जाता है। "बाप रे बाप! क्या गीदड़ इतना कमज़ोर और असहाय हो गया है। क्या बेहरकत-सा लगता है।" सियार ने दरवाजे का मोटा ताला खटखटाया तो धीरे से गीदड़ ने अपना मुंह दरवाज़े की ओर करके देखा कि कौन है। यह जानकर कि सियार उससे मिलने आया है, गीदड़ ने अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया।

सियार भांप गया कि गीदड़ नाराज़ है। दूसरे ही क्षण वह ज़ोर से बोला, "अरे यार मैं हूं तेरा यार सियार। ज़रा आगे आओ कुछ बात करें।" गीदड़ ने अनसुनी कर दी। "देखो मैं जानता हूं तुम नाराज़ हो, पर मेरी मजबूरी तुम जानते नहीं। मैं हस्पताल में पड़ा था किसी ने मेरी सुध भी नहीं ली। अब तुम खुद ही जानो कि मैं कैसे आ सकता था।" सियार दोस्ताना लहजे में कह गया। इसलिए गीदड़ धीरे-धीरे उठा, अपनी अकड़न को दूर करके मुंह लटकाए सलाखों के पीछे वाले दरवाजे के समीप आया और सियार के कुछ कहने का इंतज़ार करने लगा। ऐसा लगता था कि दोनों एक-दूसरे से आंखों से आंखें डालने में कतरा रहे थे। "देखो" सियार साहस जुटा कर बोला, "जल्दी ही यहां से छुड़ाने का प्रबंध करूंगा।"

"यहां क्या आराम नहीं है, जो छुड़वा के ले जाओगे?" गीदड़ ने रोषपूर्ण स्वर में कहा। "मुफ्त का खाना, न काम न काज, न किसी की निंदा, न किसी का पीछा करना।"

"अगर तेरे बदले मुझे धर लेते, क्या मैं भी तुमसे रूठ जाता?" सियार ने पूछा।

"कह नहीं सकता..... पर तुम पकड़े ही नहीं जाते। क्योंकि तुम सियार हो और मैं गीदड़। उर्दू-हिन्दी वालों की ऐसी की तैसी जो हम

एक-जात पशुओं को दो नामों से पहचान कराई।" गीदड़ ने कह कर मुंह दूसरी ओर किया।

"अरे और भी भाषाओं में एक पशु को कई नामों से पुकारते हैं। जैसे अंग्रेजी में गधे को 'डंकी' और 'ऐस' कहते हैं। और भी कई भाषाओं में..." सियार ने भाषाविद् की भांति समझाना चाहा पर गीदड़ ने अनसुनी कर दी। उसकी खीझ अभी भी कम नहीं हुई थी।

"सुनो, बस एक दो दिन के बाद तुम्हारा छुटकारा होगा और ऐसा स्वागत कराऊंगा जैसा सम्राट का भी न हुआ हो।" सियार ने खुशामद की पर गीदड़ दुम हिला कर फिर अपने कोने में जा कर दुबक कर बैठा। सियार ने कोई बात आगे न कह कर वहां से जाना ही उचित समझा। उसके जाते ही दूसरे सलाखों वाले द्वार से एक दर्जन के करीब जवान भेड़िये आंखें फाड़ कर सियार को निहारते ही भौंकने लगे। एसा शोर बरपा किया कि थाने के सिपाही आए और सलाखों के अंदर तक लाठियों के प्रहारों से भेड़िये चुप कराए गए।

सियार घर पहुंचते ही सियारन से कहने लगा, "वह रूपयों के बंडल.....।" "क्या करना है" सियारन ने पूछा। "एक बंडल लाकर दो।" सियार ने कहा "क्यों बुढ़ापे में क्या खर्चोगे। अभी तो एक दिन भी नहीं दिए हुए हुआ और खर्चने की नौबत आ गई।" सियारन ने खिझाते हुए कहा।

"तुम क्या समझोगी पोलिटिक्स। आधा खर्च करवाकर गीदड़ को छुड़वाकर लाऊंगा और आधा गीदड़ी को दे दूंगा।" सियार का इतना ही कहना था कि सियारन भड़क उठी, "क्या तुमने गीदड़ी के पास आना-जाना शुरू किया। आ गए अपने पशु स्वभाव पर। मैं क्या मर गई हूं। क्या लूली लंगड़ी हो गई हूं। बदसूरत हूं। गीदड़ी पर रूपए बरबाद कर दोगे, क्योंकि उसका मर्द थाने में पड़ा है।"

"तुम गलत समझ रही हो। वह अकेली पड़ गई होगी। मुसीबत के समय दोस्त ही काम आता है। अपना नारी स्वाभाव छोड़ दो। और लाओ एक बंडल।" सियार उसे रिझाने लगा।

एक बंडल लाकर सियार के मुंह पर मार कर गुस्से में कहने लगी सियारन, "लो जाकर बरबाद कर दो सारा रूपया, और रिझाओ उस गीदड़ी को-तुम्हारे दोस्त की चहेती! अभी उसमें बड़ा दम-खम है, बना लेगी नए-नए

ज़ेवर और दिखाएगी जवानी के तेवर।"

सियार खामोशी के साथ बंडल बगल में दबाए वहां से चला गया। उसे दूर भी ज़्यादा कहां जाना था, बस गीदड़-सियार की गली के भीतर। बेचारी गीदड़ी कृशकाय हो गई थी। विरह नायिका बेजान-सी पड़ी थी और समझ रही थी कि अब उसकी खबर भी कोई नहीं लेने आएगा। सियार को देखते ही उसकी जान में थोड़ी स्फूर्ति आई। "जानता हूं आप नाराज़ होंगी। यार एक दो दिन में छूट जाएगा। आप चिंता न करें। यह कुछ पैसे रख लीजिए। काम आएंगे।" सियार ने आधे बंडल का आधा लेकर गली के युवा और बाल गीदड़ों और सियारों को यह कहकर सौंप दिया। "कल परसों तक अपना गीदड़ थाने से छूट कर आ रहा है। उसकी शान में स्वागत की तैयारियां करो। सारी गीदड़-गली को झंडियों और महराबों से सजा दो। सभी द्वार तोरन सुसज्जित कर दो।"

यहां से सीधे थानेदार के घर गया और रूपयों का आधा बंडल उसको देकर आया, "साहिब यह आप की चाय। मैंने अपना वादा पूरा किया अब आप भी अपना वादा पूरा कीजिए।" थानेदार केवल मुस्कराता रहा और सियार के जाते ही कह गया "कल तक प्रतीक्षा कीजिए।"

दूसरे दिन गीदड़-गली में काफी चहल-पहल थी। सारा वातावरण सुशोभित था और ऐसा लग रहा था जैसे किसी नेता या राजा की सवारी निकलने वाली हो। शिशु सियार अपने नन्हें पंजों में छोटी-छोटी झंडियां लिए हुए थे और कुछ बाल सियार उन्हें नारों का उत्तर देना सिखा रहे थे। उधर सियार प्रातः काल से ही घर से निकल कर सीधे थाने के पास से चक्कर काट रहा था। थानेदार ने हाज़री लगाने के बाद कुछ कागज़ों पर गीदड़ का अंगूठा लिया और उसे रिहा किया। एक सिपाही गीदड़ के साथ सीढ़ियों के नीचे तक साथ आया। जब सियार ने अपने यार को देख लिया तो दौड़ कर आकर उसे गले लगाया। फिर झट से एक ऑटो रुकवाकर उसमें सवार हो गया।

गीदड़-गली के सिरे पर ऑटो रुकवाकर दोनों बाहर आए। इतने में ही सभी गीदड़ बरादरी उमड़ कर आई और गीदड़ के गले में फूल की मालाओं से स्वागत किया। शिशु सियारों ने झंडियां हवा में लहराईं और देखते ही देखते नारों से सारी गली गूंजने लगी।

"आ गया जी आ गया, रिहा हो के आ गया"

हममें होगी नहीं जुदाई, गीदड़-सियार भाई-भाई

बोल रे बोल, गीदड़ वाणी बोल

आज़ादी का मोल, कुरबानी से तोल

आ गया जी आ गया, गीदड़ जू आ गया"

इन नारों और स्वागत से सियार विस्मय में डूब गया। वह जान गया कि उसकी पशु जाति में किसी तुक्कड़ का उदय हुआ है, जिसने यह नारे गढ़े। जब भी कोई बुज़र्गी पाता तो "जू" उसके साथ लग जाता है। ऐसी जातीय रीति थी। गीदड़ को थाने में रहने और यातनाएं सहने की सारी थकावट और मार भूल गई। वह कोसों आकाश की ऊचांई छू रहा था। पुष्प-वर्षा और मालाओं के भार से उसका मुंह जैसे अदृश्य हो गया था। सियार मन ही मन खुश हो रहा था कि अब उन की पशु जाति को नेता मिल गया। इतने में दूसरे पशु भी यह देखने आ गए कि जान लें कि माजरा क्या है। गधे तो गायब हो गए थे पर भेड़िये, हिरन-हांगुल और अन्य कुछ हैरान थे और कुछ यह जानने की कोशिश में लगे थे कि गीदड़ ने कौन-सा मारका मारा है।

इतने में किसी ने काूल भेड़िये को खबर कर दी कि गीदड़-गली में जशन मनाया जा रहा है और वह गहरी नींद में सोया पड़ा है। वह जाग गया और गुर्राता हुआ गीदड़ गली में आते ही भौंका। कुछ खलबली मच गई। इतने में पुलिस भी आई और सबको भगाया। भेड़िये भौंकते-भौंकते अपनी गली को चल दिए और अन्य अपने अंचल की ओर। सियार अपनी बिरादरी में तुक्कड़ को तलाशने लगा। पूछताछ के बाद उसे ज्ञात हुआ कि गीदड़-गली में ही स्कूली तालीम पाने वाला एक युवा सियार तुकबंदी करता है। सारे नारे उसकी ही रचनाएं थीं। सियार ने उसके पास जाकर उसको शाबाशी दी और पारिश्रमिक और परितोषिक देने का भी वादा किया जिससे तुक्कड़ खुश हुआ। गीदड़ जू घर पहुंचा तो पहचाना नहीं गया। मालाएं एक ओर छोड़ कर जब गीदड़ी के सामने आया तो वह रो पड़ी। और ज़ोर से चिल्लाई "नहीं कोई आवश्यक्ता मुझे तुम्हारे नेता बनने की? रोज़ थाने और जेल जाने की।"

☆☆☆

एक दिन शाम को अचानक हांगुल-हिरन गली में "सावधान" का नारा चहुं ओर गूंजा। सभी अपने झुंड को अपने अनुज हांगुल-हिरन की देख रेख में छोड़ कर बाहर आ गए। जोशीले हिरन ने सब को चेताया कि सियार-गीदड़ टोले का नया नेता गीदड़ जू बनाया गया है। अतः कोई आपत्ति आने वाली है। इस लिए सब को सावधान रहना चाहिए। कुछेक बुजुर्ग और अनुभवीय हिरण और हांगुल पशुओं ने जोशीले हिरन की भर्त्सना की। वह अपने सुन्दर वन पशु अंचल में कोई हंगामा नहीं चाहते थे। वह गीदड़ जू के नेता बनने से कोई सरोकार नहीं रखना चाहते थे। वे सारे पशुांचल के शुभचिंतक थे। अपनी आस्थाओं और मूल्यों के प्रति वे सब सजग थे। बुद्धिजीवी हिरन ने खामोशी तोड़ कर कहा, "हमें एक मेमोरण्डम वन-प्रमुख को पेश करना ही होगा ताकि हमारी सुरक्षा की जमानत महफूज़ रहे।" उत्तर में "ज़रूर, ज़रूर" की ध्वनि आकाश में गूंजने लगी।

एक बड़े हांगुल से नहीं रह गया, उस ने सब कुछ देख-सुन कर कहा, "हमें नाहक डरने की आदत हो गई है। कहीं कुछ घटित हुआ और हम डर से हांफने लगे। अपने से भरोसा ही उठ गया है।"

"जो भी हो, सावधान रहना ही चाहिए, और हां मेमोरण्डम कौन लिखेगा।" सुन्दर युवा हिरन ने कहा।

"बुद्धिजीवी, और कौन" यह एक सम्मिलित-सा स्वर था।

पुनः"ज़रूर ज़रूर" की आवाज़ गूंजी। इसके साथ ही सभी आश्वस्त हो कर चले गए।

सियार की ज़बान से प्रशंसा पा कर तुक्कड़ युवा सियार बाल सियारों से अपने तुक गाने के तौर पर गवाया करता था। वे पशुंचल की हर ओर सुबह शाम नए नए नारों और नई नई धुन में रचित तुक गा गा कर जैसे किसी आंदोलन को उभारने के यत्न में थे। सियार-गीदड़ टोले ने इस तरह अपना एक जातीय गीत अन्तराष्ट्रीय धुन पर भी गाना शुरू किया:

हम होंगे सड़क-छाप होंगे सड़क छाप एक दिन
ओ गहरा है विश्वास पक्का है विश्वास
होगें सड़क-छाप एक दिन

सियार शिशुओं की प्रातः सांध्य फेरियां देख कर सारे वन पशु चकित थे केवल हांगुल हिरन जाति आशंकित थी। आखिर यह नया हंगामा क्या माने रखता है। लेकिन इस की कोई कानूनी मनाही नहीं। फिर भी सियारों, सियारनों और सियार शिशुओं में नया जोश और वलवला अवश्य पैदा हो गया। इस नए हंगामे का प्रभाव दूसरी पशु जातियों पर पड़ना आवश्यक था और देखते ही देखते सारे पशु आंचल में तुक्कड़ों की तैदाद बढ़ गई।

नए युग और नई सभ्यता फैल जाने से नगरों में होटलों और शराबखानों की तैदाद बड़ने लगी। पशु आंचल इस से प्रभावित रहने से कैसे छूट सकता था। अतः नए फैशन में लिप्त युवा पशु रोज़ दो एक घंटा ऐसी जगहों पर गुज़ारना अपनी शान को चार चांद लगाने के बराबर समझते थे। चाय, कबाब, कॉफी और शराब पीने के साथ साथ गप शम और सियासत पर बहस करने का अवसर भी मिलता था। यह दूसरी बात है कि ऐसे चाय-कॉफी शराब खानों में दीवार पर लिखा होता था- "सियासी गुफ्तगो करना मना है।" समय गुज़रने के साथ साथ ऐसे स्थानों पर छोटे छोट साहित्य और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शुरू हाने लगे। देखा-देखी में क्या पशु प्रभावित रहने से बच सकते थे?

एक दिन शाम को तीन पत्थर के समीप एक हिरनी का पीछा करता हुआ एक भेड़िया देखा गया, जिसको कोई अनजाना-सा सियार उकसा रहा था। तीन पत्थर में खेल कूद में मस्त युवा हांगुल-हिरन जब अपने अंचल की ओर वापस आ रहे थे तो उन से न रहा गया अतः उन्होंने अपने दो-दो सींग मार कर भेड़िये को भगाया। साथ में सियार भी कहीं पर छुप गया। इस घटना को हिरन हांगुल टोले ने बड़ी संजीदगी से लिया। इसलिए दूसरे दिन ही प्रातः काल से तीन पत्थर पर हांगुल-हिरण मिलन होता रहा। खुसर-पुसर और कानों कान बातें होती रही। जब तक कि बुद्धिजीवी हांगुल मौके पर आया। हिरनी को अलग ले कर उस से असली वाकात जानने के लिए पूछा, "बताओ क्या हुआ?"। अपने मृग नयन, अपने सुमों पर, एक टक दृष्टिपात कराकर हिरनी कहने लगी। "नदी से पानी पी कर आ ही रही थी तो कानों में आवाज़ आई-सियार की। जो किसी भयानक भेड़िये को उल्हाना दे रहा था।"

"क्या कह रहा था? तुम ने जो सुना, कहो।" बुद्धिजीवी हांगुल ने कहा।

"अबे कायर, डरपोक, मूर्ख भेड़िये, दुलर्भगति कृशकाय था तो हिरन

जाति का इसलिए उस ने आप जैसे बलवान पशु जाति को जानबूझ कर फंसाया। सूअर शिशु तो सभी पशुओं के पैरों तले ही भगदड़ में मर गए और इल्ज़ाम आप के युवाओं पर मढ़ दिया गया। बड़े चतुर होते हैं यह हिरन। खाते हैं घास फूस पर सोचते हैं अपने भागने की और दूसरों को फंसाने की। अब देखो, वह जा रही है हिरनी। जा के इस की टांग पकड़ लो। काट खाओ इस की बोटी बोटी। और दिखाओ अपना बल और खुंखारपन। बस इतने में ही वह वौं वौं कर के भौंका और मेरा चलना हराम किया। लेकिन मैंने ऐसी दौड़ लगाई कि वह देखता ही रहा।"

"तो यह बात है। अब बदले की भावना भड़काई जा रही है। कृशकाय ने अपना फर्ज़ निभाया उसपर यह इल्जाम! कोइ बात नहीं।" बुद्धिजीवी ने कहा।

"हमें अपनी जाति में एकता की भावना पैदा करनी चाहिए।" एक युवा हांगुल ने परामर्श दिया।

"लेकिन ज़रा सोचिए, कृशकाय भी हमारी जाति का है पर जब जब जाति की बात करनी होती है उस जैसे सुयोग्य पशु हमारी सभाओं से अनुपस्थित रहते हैं।" जोशीले हांगुल ने आवाज़ दी।

"सावधान, मैं अभी देखकर आया हूं, वह सब भेड़िए जिन्हें पुलिस पकड़ कर ले गई थी रिहा हो कर घर लौट आए हैं।" हांफते हांफते एक हिरन ने कहा, जो पूरी दौड़ लगा कर सभा में उपस्थित होने को आया था।

सारी सभा में थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया पर बुद्धिजीवी ने स्थिति संभाल ली। "हमें उस से कोई सरोकार नहीं। वह कानूनी और कानून शिकनी का मसला है। सरकार और भेड़ियों के मध्य है।"

"पशु आंचल से गधे गायब हो गए किसी अन्य पशु के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी। कल कोई और पशु जाति का नाम-ओ-निशान नहीं रहेगा, तो....तो" जोशीले युवा हांगुल की आवाज पुनः गूंज उठी। सभा में पुनः हलचल मच उठी "सच है कल को हम को भी गायब कर दिया जाएगा और सरकार केवल यह कहेगी कि अंतर्राष्ट्रीय साज़िश है"। सुन्दर हिरन ने भी अपनी ज़बान चलाई।

"इन सभी बातों में दम है, पर हमें जोश के साथ होश कायम रखना चाहिए। स्वयं ही अपनों में भय का संचार नहीं करना चाहिए। मैं आप को उस

मेमोरण्डम के मुख्य अंश सुनाता हूं जो हम वन प्रमुख को पेश करने वाले हैं।" बुद्धिजीवी ने कहा और बड़ी फाईल निकाल कर पृष्ठों के पृष्ठ पढ़ डाले।

पढ़ने की समाप्ती पर सबों ने खुशी व्यक्त की और थोड़े से संशोधनों के साथ मेमोरण्डम पारित किया।

"क्या होता है बड़े बड़े पत्र लिखने से जब सरकार में हम अल्पसंख्यक पशुओं के प्रति सामान्य सहानुभूति भी नहीं।" सुन्दर हिरन ने जोशीले हांगुल से कहा। "कोई बात नहीं, धैर्य रखो और देखो ऊंट किस करवट बैठता है।" जोशीले हांगुल ने तसल्ली दी। "देखना यह है कि दूसरे मांस खोर पशु कब तक हमें आराम से, शांति से और भेद-भाव रहित जीवन बिताने देंगे।" "पर आप को यह नहीं लगता है कि कई हिरन झुण्ड हमारे आज के सम्मेलन में शरीक नहीं हुए इसलिए कि वे भयाकुल हैं और दूसरे वनों की ओर जाने की सोच रहे हैं।" सुन्दर हिरन ने दर्द भरी वाणी में कहा।

"चिंता का विषय है, पर सरकार भी तो सचेत होगी ही जब उसे हमारा मेमोरण्डम मिलेगा।" पुनः तसल्ली के शब्द जोशीले हांगुल ने कहे और सभी अपने अपने झुण्ड के साथ हिरन-हांगुल आंचल की ओर चले गए।

हांगुल-हिरन मिलन की बात सारे सुन्दर वन में आग की तरह फैल गई। और इस मिलन के बारे में चाय-खानों और शराब-खानों में भी चर्चा हुई। सभी पशु जातियों के तुक्कड़ भी अपना तरही तुक्कड़ काव्य श्रवन कराने के लिए इकट्ठे हो गए थे जिस की पहल युवा सियार तुक्कड़ ने की थी। कई प्रेस संवाददाता भी आए थे। सब के सामने प्यालियां और शीशे के गिलास खड़क रहे थे। भारी पलकों से भी कई कार्यवाही का बे-सबरी के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। यूं तो परम्परा है काव्य पाठ सुनाने की पर पशु तुक्कड़ों ने श्रवन कराने पर ही ज़ोर दिया था। कार्यवाही आरम्भ करने से पहले तलाश शुरू हुई ऐसे पशु की जो सभा की अध्यक्षता करें। जब कोई सुयोग्य पशु न मिला तो सभी कालू भेड़िये को यह काम सौंपने पर सहमत हो गए। क्योंकि कहावत भी आम थी कि जिस से डर लागे उसी को उत्तरदायित्व सौंपिए। "वौं वौं" की खूंखार आवाज़ के साथ कालू भेड़िए ने अपना स्थान ग्रहण किया। सियार युवा तुक्कड़ ने सब से पहले जिस पशु तुक्कड़ को निमन्त्रण दिया वह भी सियार जाति का ही था और आयु में भी सब से छोटा था। वैसे हर रिपोर्ताज में पूरी कविता या तुक सुनाने की प्रथा नहीं,

है इसलिए हम भी प्रत्येक तुकवी कवि का केवल एक एक पद ही लिखते हैं। तो पहले तुक्कड़ का एक तुक ऐसा थाः

एक एक कर मंच पर आएं
भाषण झाड़ें ज़ोरदार
खाकर मुई मुर्गी का मांस
नाच करें हमें लचकदार

सारी सभा में ज़ोरदार गूंज उठी, "वाह-वाहः नाच करें हम लचकदार, लचकदार जी लचकदार।" अब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि श्रोतागण किस क़दर रसिक थे। फिर बारी आई एक मेमने याने भेड़ की। सभी चकित रह गए कि यह मेमना क्या सुनाएगा पर कुछ न कुछ तो सुना ही गया। एक अशार मुलाहिजा होः

हाथों से, लातों से न छोटे दुम की मार से
दुनिया को जगाएंगे हम मैं मैं की पुकार से॥

सारे हाल में मैं मैं की आवाज़ आई और कालू भेड़िए को अपनी खौफनाक "वौं वौं" की ध्वनि से हालात पर काबू पाना पड़ा।

तुक्कड़ सम्मेलन में पुनः दिलचस्पी पैदा करने के लिए अब संयोजक को अपनी नज़रें घुमानी पड़ी और सतर्कता के साथ सरकारी अफसरनुमा तुक्कड़ को बुलाना पड़ा। सारे वातावरण में मौत की सी खामोशी छा गई, आखिर आफिसर भी कोई हस्ती होती हैं। उस का एक पद सुनिएः

प्रीति से कूट नीति से
छल-कपट की रीति से
कायम करें हम पशु-राज
कंठ-लंगोट और धोती से

सारे वातावरण में ठहाकेदार हंसी का फव्वारा फूट पड़ा और संयोजक को डर लगने लगा कि क्या और कोई तुक्कड अब जम भी पाएगा कि नहीं। पर कार्य वाही आगे चलानी ही थी इसलिए अब युवा हिरन की बारी आई। उसे बड़े आदाब के साथ बुलाया गया। उस के मंच पर आते ही सबकी आंखें उस की

आंखों की ओर गई। उस का एक पद आप भी पढ़ ही लीजिए:

खा के सदमापुरी के कुल्चे
सदा समस्याओं में उल्झे
फिर भी प्रेम से लिख लिए हैं।
तुक यह छोटे हल्के फुल्के॥

वाह वाह की ध्वनि तो सुनाई दी पर साथ ही शोर भी हुआ कि तरह का ध्यान नहीं दिया जाता है, इसलिए हिरन ने एक और पद भी कह डाला:

हांगुल हिरन मिल कर बैठें
खाएं पिएं करें विचार
उल्झन को सुल्झाएंगे
बात-चीत व्यवहार से

आखिर में सियार की भी बारी आ ही गई और उस ने बड़े ही मीठे तुरन्नुम में अपने अपने तुक सुनाए। एक तुक जिस पर सभों को आश्चर्य हुआ यूं था-तर

लम्बी चौड़ी तक़रीर से
न ऊल जलूल तहरीर से
दुनिया को झुका देंगे
गीदड़-सियार तदबीर से॥

फिर श्रोताओं से आवाज़ आई कि गधा क्यों महफिल में शामिल नहीं और न ही उस का प्रतिनिधित्व कोई कर रहा है। इस पर संयोजक ने श्रोताओं से क्षमा-याचना कर के कहा कि अभी उन का कोई तुक्कड़ प्रतिनिधि नहीं मिला। कुछ शोर शराबा सुनने को मिला कि गधे कहां गायब हो गए। नारे भी बुलंद हो गए, "साज़िश को नंगा करो"। "खामोश खामोश" के साथ धीरे धीरे वातावरण कुछ शांत हुआ तो एक नंग धडंग रीछ मंच पर आया और खुमार भरी आवाज़ में बगैर किसी आमंत्रण के तुक सुनाने लगा। उस के अंदाज़े ब्यान से सब को डर जैसा लग रहा था। उस का एक तुक यूं था:

जलसे से, जलूस से, न तेग से तलवार से

मोम कर देंगे दुनिया को थपेड़ों की मार से॥

ऐसा कहते ही उस ने अध्यक्ष के सामने का डेस्क अपने दो पंजों से जोर से सामने बैठी श्रोता पंक्ति पर फेंक दिया कि वह खलबली मच गई कि वह पीछे को लुढ़क गए और सब के पीछे बैठे श्रोता दीवारों के साथ सटक गए। रीछ का असभ्य व्यवहार देख कर सब चकित रह गए। कहवा-खाने का फर्निचर तो ऐसे अवसरों पर टूटना कोई नई बात नहीं, लेकिन संयोजकों को ऐसी कोई आशा नहीं थी। सब हैरान थे कि क्या रीछ भी तुक जोड़ सकता है, पद कह सकता है, "साला नींद में डूबता रहता है, और न जाने कहां से आकर यहां हंगामा बरपा किया" संयोजक ने अध्यक्ष से कहा। सभा में सामान्य वातावरण लौटने के बाद छोटे-छोटे सियार आए और उन्होंने अपना सड़क छाप गाना सुनाया। सभी सियार-गीदड़ श्रोताओं ने भी उन के साथ गाया और अंत में अध्यक्ष से चंद शब्द कहने और तुक सुनाने की विनति की गई। कालू भेड़िया उठा खखार कर "वौं वौं" भौंका और फिर कहने लगा, "श्रोताओ, यह पहला अवसर है कि हमारे पशु युवकों में तुक कहने की जुर्रत पैदा हुई। वह अज़ीम तखलीककार बनने की सलाहियत रखते हैं। जैसा आप ने देखा और सुना सभी काव्य गुण इन पदों में समाए थे। मैं आप सब को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि आप ऐसी महफिलों का आयोजन करते रहेंगे जिस से बेदारी पैदा हो। अब मैं भी अपना टूटा फूटा तुक आप सब को सुनाता हूं। "ज़रा सावधानी के साथ सुनिएगा।" संयोजक ने सब का ध्यान आकर्षित कर के कहा। कालू भेड़िये ने पद सुनायाः

आदर्श और कानून की परवाह नहीं करेंगे हम,

जो हम से टकराएगा-गोली खा कर जाएगा।

ऐसा कहते ही उस ने पिस्तौल निकाली और दो गोलियां छत पर दाग दीं। सब इधर उधर भाग गए। खलबली और हंगामे में कई पशु चोटें खा कर घर पहुंचे।

☆☆☆

कुछ दिनों में ही सुन्दर वन के प्रत्येक अंचल में पुलिस की गश्त रोजमर्रा की बात हो गई। कालू भेड़िये की तलाश शुरू हुई पर वह अंडर- वन चला गया था। एक आश्चर्य की बात सभी अंचलों में देखी गई। वह यह थी कि वन के प्रत्येक ऊंचे पेड़ की जड़ पर लिखा था, "आप क़ो देव-नमन के लिए फ़ुरसत नहीं, ताज्जुब है" यह देख कर बड़े बुजुर्ग वन-पशु तो खुश हुए कि "वाह क्या काम किया है किसी समझदार ने। इस से ईश्वर पर भरोसा पुनः बढ़ जाएगा और युवा पशु सर्व शक्तिमान की अज़ीम ताकतों के प्रति श्रृद्धावान बनेंगे"। पर हांगुल-हिरन यह सब देखकर शंकालू बनते गए। "कोई नई आफत आने वाली स्थिति का संकेत साफ झलकता है।"बुद्धिजीवी ने अपनों से कहा था।

समाचार पत्रों में कालू भेड़िये की तुक्कड़ कवि गोष्ठी में गोली चलाने का समाचार मुख पृष्ठ पर छपा था जिससे सारा वातावरण भयावह था। वन आंचलों में स्थिति गंभीर पर नियंत्रण में कही जा रही थी। कहवा-खानों में हाज़री कम हो गई थी। कुछेक साहित्य-संस्कृति से लगाव रखने वाले यदि कहवा-खानों में आते थे पर खामोश-खामोश से बैठे रहते थे। हां शराब खानों पर पुरानी जैसी गहमा गहमी थी। एक नया मांस-मछली-कबाब बाज़ार देखने में आया जिस की दुकानों पर इस प्रकार के साईन बोर्ड लगे थे। मच्छी-मास होटल, गरीब कबाब होटल, गरीब नवाज़ होटल, असली गरीब होटल आदि। इस होटल गली से चलने पर वह पशु जो मांसाहारी न होकर घास पत्ते और शाकाहारी भोजन के अभ्यस्त थे डर कर और सहम कर चलते थे। संध्या समयोपरांत इस गली में काफी चर्चा रहती थी। कालू भेड़िये की तलाश में अक्सर पुलिसकर्मी इस गली में देखे जाते थे। तलाशी के नाम पर इन होटलों में उनका चाय पानी का इंतिज़ाम होता रहता था। कुछेक डरावने रीछ भी देर गए छुप छुपाकर नशा पानी के लिए यहां आते थे। सियार तो रोज़ मांस मुर्गी के पंजे, आंतें और पकी हुई जूठन खाने के लिए आते रहते थे। लेकिन जब भेड़िए सपरिवार आते थे तो दूसरे पशु जैसे गायब हो जाते थे। न जाने फिर भी सरकारी कागज़ों पर इस गली को डेंजर गली लिख दिया गया था। दर असल सरकार का विश्वास था कि सभी आंदोलन इसी गली में खान पान के साथ सोचे जाते है। डेंजर गली के नुक्कड़ पर एक जमींदोज़ द्वार था, जहां जाने से अक्सर युवा लोग संकोच करते थे पर बुजुर्ग जन-पशु तमाम रात गए तक सूफी मिज़ाज का धुआं पीते थे जिसे सभ्य

लोग चरस कहते है। दाढ़ीवाले बकरे, रीछ,और अन्य जन्तु भी अपना सिर हिला हिला के देर रात गए वहां से निकलते थे। इन सब में अपनी मित्रता और बरादरी होती थी। कभी किसी की निंदा नहीं करते थे और चिलम का कश लगाने में यकसां तौर से "औला" की ध्वनि मुंह से निकालते थे। कालू भेड़िये के अंडर-वन होते ही इस डेंजर गली में कभी कभी दुकानों से यह गाना सुनने को मिलता था, जिसे शायद टेप किया गया थाः

पहन के झोला चला गया ओला ओला, ओला ओला, शबनम क्या शोला, मुंह नहीं खोला, ओला ओला ओला ओला।

जो लोग किसी मामले में दखल अंदाजी नहीं करते थे उन को गाना पसंद था इस लिए ध्यान नहीं देते थे पर हांगुल हिरन भांप गये थे कि "सभी पशुओं से मुंह न खोलने अर्थात् खामोश रहने की धमकी दी जा रही है।"

डेंजर गली में एक होटल की ऊपरी मंज़िल में देर गये तक गाना बजाना होता था और एक वानरी चोली लहंगा पहन कर नाचने आती थी। वह नाचती थी और साज़िंदे गाते थे और साज़ भी बजाते थे। सरकार की उधार नीतियों के कारण कारखाने खोलने के लिए खुल कर कर्ज़े मिलने लगे थे इस कारण से इस गली की और भी अहमियत बढ़ गई थी।

कालू भेड़िया वानरी के गाने का आशिक था, इस बात को सरकार जानती थी इसलिए इलाके के थानेदार का नित्य वानरी के कोठे पर आकर गाना सुनना और ध्यान रखना लाज़िमी था। इस से गाना सुनने के शौकीनों की संख्या कम हो गई और वानरी की कमाई और साज़िंदों के हिस्से में भी कमी वाका हुई। धीरे धीरे खसारा थानेदार पूरा करने लगा। पर कितनी देर तक? अतः एक दिन वानरी ने दुकान नीलाम की और थानेदार के घर चली गई। बस डेंजर गली में हड़ताल शुरू हो गई। दिन को सभी दुकानदार बीच सड़क पर हंगामा करते, नारे लगाते और पुलिस पर पत्थर फेंकते थे और पुलिस अश्रुगैस के गोले बरसाती थी। आखिर सरकार को थानेदार का तबादला सरहद के समीप करना पड़ा और माहौल कुछ कुछ ठण्डा पड़ गया। वानरी की दुकान अब एक नई जमात के कब्ज़े में आ गई। जहां सियार और गीदड़ टोला सियासी गुफ्तगो करते थे और आखिर में सियाग (सियार-गीदड़) जमात का हेड आफिस बन गया। जल्दी ही आंगल भाषा में एक बड़ा साइन बोर्ड सड़क की ओर लटकाया गया जिस पर लिखा था

"हेड आफिस, सुंदर-वन सियाग जमात, डेंजर लेन"। पशुओं में यह जमात बनने पर अलग अलग प्रतिक्रियाएं हुईं। भेड़ियों ने जमात बनने का स्वागत किया पर वानरी के कोठे पर हेड आफिस बनाने का सख्त विरोध किया। रीछ गुर्राये थे और क्षुब्ध भी हो गये थे। "पशुओं को लड़ायेंगे और क्या सियासत चमकायेंगे"। बकरे और मेमने पस्त हिम्मत हो गये थे। "अब हमारी कुर्बानिया अधिकाधिक ह्वेंगी।" खरगोशों का भी यही हाल था। लोमड़ियां चकित थीं। "जमात का क्या काम जब पशु बगैर किसी कानून के कुछ भी कर सकते है। पशुओं को क्रूर हथियार बनाने वाले मनुष्यों की नकल नहीं करनी चाहिये", उन का मानना था।

अब सियार और गीदड़ रोज़ शाम को अपने हैड आफिस पर मिला करते थे। सियार ने एक दिन गीदड़ को उस्तादाना लहजे में कहा"-

"अब तुम हमारे नेता हो। तुम्हारी खातिर मैंने तुम्हारी रिहाई के बाद वह स्वागत किया कि सारे पशु आंचल में इस की मिसाल नहीं मिलती। तुम्हारी घर गृहस्थी के लिए पैसा-रुपैया भी तुम्हारी गीदड़ी के पास रख छोड़ा है। क्या अब तुम अपनी जिम्मेदारियों से वाक़िफ हो।...

गीदड़ ने खुली आंखों ध्यान लगा कर सब सुना और उत्तर मे केवल लम्बा निश्वास छोड़ा

"कुछ समझे, मैं क्या कह रहा हूं। " सियार ने नर्म लहजे में कहा।

अब सियार समझ गया कि गीदड़ को अपने सारे उत्तरदायित्वों का कोई ध्यान नहीं। इसलिए समझाने लगा। "सुनो, राजनीति सब से कठिन मार्ग है जिस पर हम चल रहे हैं। इस का पहला पाठ है, सब को आश्वस्त रखो, और अपना काम अंजाम दो। दूसरे इतना झूठ बोलो कि सच लगे। तीसरा, सब में भाई-बन्धुवाद की बात पर ज़ोर दो पर अलग से सब में बंटवारे की भावना जगाते रहो। हर पार्टी में निफाक हो, अर्थात एक पार्टी दो, और दो से तीन पार्टियों में बटती जाएं। चौथा, किसी भी पशु क्या मनुष्य ज़ाति में एकता न रहे। गीत एकता के गाते जाओ और कार्य विघटन के करते जाओ। पांचवां, सारे मुल्क का धन केवल सुन्दर-वन के विकास पर खर्च हो चाहे बाकी देश भुखमरी का ही शिकार क्यों न हो यह है वह नीति जिसे बड़े बड़े ज्ञानी जन पंचशील के नाम से जानते हैं। पंचशील के मार्ग पर चलोगे तो सुन्दर वन की ख्याति सारे विश्व में फैलाओगे।

"अरे मैं समझ गया। जो भी करना हो सब से पहले अपना ही हित जताना चाहिए।" गीदड़ खुशी से उछल पड़ा।

"वाह मेरे यार, नहीं नेता, अकल तेज़ हैं तुम्हारी फिर भी तुम्हें समझाना पड़ता है। हां, अब नेता हो इसलिए लिचकर तो झाड़ने ही पड़ेंगे, शब्दों को पंचशील के कायदों के मुताबिक पहले मुंह में तोलना और फिर बोलना, नहीं तो कही पर भी अनर्थ कर दोगे। हां, इन चतुर हांगुल-हिरनों से सावधान रहना। यदि उन्होने अपने में एकता प्राप्त की तो तुम्हारी नेतागिरी नहीं चलेगीं। इसलिए उन में सदा लालच से, धन से, नौकरी से, पेड़ के छत से, जैसे भी हो लड़ाते रहो और असंगठित रखो। बाकी रहे भेड़िये, उन्हें उकसाते रहो।"

सियार की बातें सुन कर गीदड़ पहले चुप रहा, फिर जैसे चौंक गया और कहने लगा, "यह सब तुम ने कहां सीखा है।"

"जिन्दगी से, तुजुर्बा है मेरा। रोज़ अखबार पढ़ता हूं। सब की खबर रखता हूं और बड़े बड़े लोगों में उठता बैठता हूं।" सियार ने अपने कुछेक कारनामों की सूची गिन डाली।

"फिर तो यह काम बहुत कठिन है। गीदड़ी से मिलना जुलना भी नहीं रहेगा" गीदड़ कुछ गम में डूब गया।

"तुम तो मुर्ख ही रहोगे। दुनिया भर की सुंदरियां नेता के सामने नाचतीं हैं, उसका आटोग्राफ लेती हैं। नेता के स्वागत में भोज दिये जाते हैं। विशेष निमंत्रण भेजे जाते हैं। पार्टियां होती हैं अब अपनी कोई कीमत कदर पहचान लो। गीदड़ी के पीछे ही रहोगे तो नेतागिरी कैसे निभाओगे। ज़रा सोचो। मेरी मेहनत पर पानी मत फेरों।"

सियार ने याराना लहजे में कहा। "न जाने आगे कितने डेलिगेशन तुम्हारे पास आया करेंगे, तुम्हारा उन से मिलना जुलना होगा, सब की बात सुननी होगी, और चतुरता से सब को लटकाये रखो- यह बात विशेषकर सीखना।"

"यह गुरु शब्द बहुत अच्छे लगते हैं। लटकाये रखना याने किसी का कोई काम न निकले। सब काम उल्झाते जाना। वाह क्या गुरुमंत्र है।" गीदड़ हंस दिया। "लेकिन प्रस्ताव लिखना, प्रेस नोट इजरा करना, इस्टेटमेंट देना, क्या यह सब मैं कर पाऊंगा।" अपने संशयों को भी गीदड़ ने व्यक्त किया।

"हाय मेरी किस्मत, किस से पाला पड़ा। अभी तक मैं क्या समझा रहा था। खाक।" सियार थोड़ा गुस्सा हो गया। "अरे वह सब गुण जल्दी ही तुम में रोनुमा हो जाएंगे। हिम्मत रखो और अपनी बुद्धि को निखार लो। हुकुम देना सीख लो। दखलअन्दाजी सीख लो। क्या हो रहा है, क्या करना है, कैसे करना है, किस आफिसर का क्या काम होता है यह सब रट लो ओर फिर देखो कमाल"

"तुम ने मेरी आंखें खोल दी। वाह, जिंदा रहो मेरे दोस्त।" गीदड़ ने आश्वासन के साथ कहा। "अब चलो मुझे अपने पहले अभियान पर जाने दो", यह कह कर गीदड़ 'सियाग आफिस' से चला गया। सीधे गीदड़ गली के नुक्कड़ पर पहुंचा और युवा गीदड़ों को देखते ही कहने लगा। "क्यों भाई मेरे यारे-जानाँ कालू भाई का कोई समाचार है।"

"वह तो कहीं रोपोश हो गया है।" एक युवा गीदड़ ने उत्तर दिया।

"उस को इल्ज़ाम से बचाने का कुछ प्रबंध करना ही पड़ेगा।" ऐसा कह कर गीदड़ वहां से चल दिया और भेड़िया गली चला गया। एक पेड़ के नीचे कुछ भेड़िये सो रहे थे इसलिए गीदड़ ने ऊ ऊ से उन को जगाया। "क्यों जी सोते रहोगे तो नुकसान उठाओगे। कहो मेरे कालू भाई का कोई समाचार है।" "जब से वह हादिसा हुआ हमें उस की कोई खबर अतर नहीं।" एक युवा भेड़िये ने कहा।

"वैसे किसी सरकारी खुफिया आदमी का काम है लेकिन इलज़ाम कालू भेड़िये पर लगाया जा रहा है। इस में मुझे सरकार की कोई चालबाज़ी नज़र आती है। और सुनो, आप लोगों में तो खुद्दारी जैसे खत्म हो गई है। कालू भाई जिस वानरी के गाने पर फिदा होता था, जिस पर जान लुटाता था, उस को दारोगा उठा कर ले गया। कानून का मुहाफिज़ और तुम सब मज़े की नींद सो रहे हो। मेरी मानो, कुछ करो, अपनी आवाज़ बुलंद करो। नहीं तो कालू भाई जीवन भर रोपोश ही रहेगा या तो विदेश चला जायेगा और तुम जवानों की साख सदा के लिए खतम, हां" गीदड़ ने दो कण आंसू भी बहाये। "अब हमारी भी बारी आयेगी, न जाने क्या किसमत में बदा है। किसे कहें, और कौन हमारी सुनेगा, फिर भी मैं यही कहूंगा कि विरोध करो, आंदोलन करो। आज वानरी गई, कल कोई भी भेड़िया-बहन को उठा कर ले जायेंगे। गीदड़ी को उठा कर ले जायेंगे। अभी तक तो ऐसा नहीं होता था पर अब होने लगा है।"

गीदड़ की बातें सुन कर भेड़िये काफी उत्तेजित हुए और इकट्ठे वौं वौं का तुमुल नाद चारों ओर गूंजा। गीदड़ उन से आज्ञा ले कर चला गया। उसे जो कहना था कह गया। वह सीधे वानर अंचल में चला गया। जो काफी घने वृक्षों से भरा पड़ा था पर गीदड़ कहां नहीं पहुंच सकता है? उस ने देखा कि वानरों के झुण्ड के झुण्ड पेड़ों पर उछल कूद रहे हैं। इसलिए बहुत देर तक उन को केवल निहारता रहा। छोटे छोटे वानर बच्चे तो अपनी माताओं की छातियों के साथ लटक गये और गीदड़ को निहारते रहे। आखिर गीदड़ ने खामोशी तोड़ कर चिल्लाना शुरू किया। "क्या मज़े में अपनी दिनचर्या में लगे हो और थोड़ा-सा एहसास भी नहीं बचा है आप में। पहले कोई उस नाज़ुक-सी कली वानरी को उठा कर ले जाये और आप में गैरत भी न हो? वाह क्या बात है? कितना एहसास है आप में अपनी जाति का। कल को आप के सारे बच्चे उठा कर ले जायेगा कोई और आप खामोश रहोगें। क्यों।"

"बात वाजिब है, पर हम कर ही क्या सकते हैं।" एक मोटे से वानर ने कहा।

"एहतिजाज, विरोध, यदि आप सब में एकता हो।" गीदड़ ने अपनी खास वाणी में कहा जैसे वह गर्ज रहा हो। "जो बल एकता में है वह किसी में नहीं।"

"वह वानरी, ससुरी भी किसी को अपने तेज़ नाखूनों से आहत भी न कर सकी। नाचने में और झूठी प्रशंसा संचित करने में ही झूमती रही। इसलिए हम ने उस की परवाह नहीं की।" मोटे वानर ने फिर कहा :

"लेकिन अब वह अपनी मर्ज़ी से अपनी दुकान नहीं चला रही है। उसकी आज़ादी छीन ली गई है। उसे कानून का महाफिज़ उठा कर ले गया है। वह किसी सरहदी इलाक़े में जान बूझ कर पहुंचाई गई है। क्योंकि आप खामोश हैं। कोई अमल नहीं करते हों।" गीदड़ ने कह डाला जो उसका मुद्दा था।

"हमें क्या करना चाहिये।" मोटे वानर ने पूछा"।

"सारे वानरों को डेंजर गली पहुंच कर आंदोलन करना चाहिए। सड़क रोको आंदोलन और नारे लगा लगा कर आकाश को सर पर उठाना चाहिये।" गीदड़ ने कहा

"लेकिन कब तक?" मोटे ने पुनः प्रश्न किया

"जब तक वानरी वापस आप के पास नहीं पहुंचाई जाती, नहीं तो कल किसी भी वानर शिशु को उठा कर कोई भी ले जा सकता है और आप की आबादी कम से कमतर होती जायेगी। सारा वन अंचल वानरों से साफ हो जायेगा बस सरकार भी यही चाहती है। मुझे तो कुछ लेना नहीं है। बस इस वनांचल का पशु होने के नाते आप के साथ हमदर्दी है। इसलिए" गीदड़ कह कर चला गया।

"सुनो भाई सुनो, वानर भाइयो सुनो। बिल्कुल ठीक कह गया गीदड़जू हमें हंगामा करना ही होगा। नहीं तो हमें कमज़ोर जान कर हमारे साथ फिर वही होगा, छीना झपटी और वानर बच्चों को खोना होगा। चलो कल से करो शुरू हंगामा, आंदोलन, सड़क रोको आंदोलन।" मोटा वानर नेता की भांति बोला।

वानर गली से गीदड़ दुम दबा कर तेज़ तेज़ कदमों से दौड़ता उछलता वन-प्रमुख के प्रांगण जा पहुंचा। कुछ देर इंतिज़ार करने के बाद जब उसे वन-प्रमुख के सामने पहुंचने की आज्ञा मिली तो दंडवत् प्रमाण के बाद रुआनी सूरत बना कर कह उठा, "हे हमारे नेकदिल आका, मुझे लगता है अब वन-आंचल में शांति नहीं रह सकती। कानून के रखवाले ही कानून शकनी पर उतर आये हैं। सुना है कि कोई दारोगा किसी नाचने वाली वानरी को उठा कर ले गया है जिसका गाना कालू भेड़िया सुना करता था इसलिए ज़रूर भेड़िये और वानर कोई हंगामा करेंगे।"

"तुम को कैसे खबर? अखबारों में तो ऐसी कोई खबर नहीं आई? न कोई सी. आई. डी. ही कोई खबर लाया है, लगता है हंगामा कराने की शरारत सूझी है।" वन प्रमुख ने एकटक गीदड़ पर नज़रें टिकाये कहा।

"गीदड़ की लम्बी नाक पर भरोसा करना चाहिये। हर घास का तिनका सूंघ सूंघ कर चलता हूं। कच्ची गोलियां खा कर नहीं आता हूं। मैं ने आपका नमक खाया है, इसलिए आपको सूचित करना अपना उत्तरदायित्व समझता हूं। वैसे आजकल मैं अपना सारा समय "सियाग जमात" के हेड आफिस पर ही गुज़ारता हूं।"

☆☆☆

बुद्धिजीवी की अध्यक्षता में एक डेलिगेशन वन-प्रमुख को मिलने गया एक मेमोरंडम बड़ी सूझ-बूझ के साथ लिखकर और सभी हांगुल-हिरन बिरादरी में पढ़ने के बाद साथ लाया गया। कई दिन पहले ही वन- प्रमुख से समय मांगा गया। उससे मिलने वालों का लिस्ट भी उसे भेज दिया गया था ताकि उससे मिलने में कोई रुकावट न आए। बुद्धिजीवी को वन प्रमुख के पास पहुंचने में कोई कठिनाई न आए, इसलिए फोन करके भी पूछताछ की गई।पर जब समय आया और डेलिगेशन के सदस्य पी. ए. के कमरे में बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे तो उन्हें कहा गया कि डेंजर गली में कोई हंगमा बरपा हुआ है, इसलिए हालात का जायाज़ा लेने के लिए वन-प्रमुख स्वयं चले गऐ। डेलिगेशन के सदस्य अपना-सा मुंह लेकर वापस लौटे। नया दिन और समय की सूचना का उन्हें विश्वास दिलाया गया। डेंजर गली में क्या हुआ वह भी जानने के इच्छुक थे।

प्रातः काल से ही डेंजर गली की छोटी-छोटी गलियों में भेड़िये और वानरों का जमाव बढ़ने लगा था। इसका क्या कारण है किसी को कुछ पता नहीं। भेड़ियों से तो हर किसी को डर लगता ही था पर वानरों का ऐसा जमाव कभी नहीं देखा गया था। एक आध घंटे के बाद किसी गलियारे से नारेबाज़ी शुरू हुई। "डेंजर गली में शोर है- दारोगा चोर है" इसके विपरीत वानर गली से आवाज़ आई, "वानरी को पेश करो-वन प्रमुख को बदल दो" दूसरी गली से आवाज़ आई "यह तमाशा नहीं है- मातम की तैयारी है।" देखते ही देखते एक ओर से भेड़िये और दूसरी ओर से वानर अपने शिशु वानरों के साथ सड़क पर आ गए। चंद एक रीछ भी बगैर किसी संबंध के यह तमाशा देख रहे थे। नारे बाज़ी सुनकर उनमें भी जोश आया और नारे लगाने लगे, " जब तक दम है-जोश नहीं कम है" सियार और गीदड़ अलग से सड़क के किनरे ऊं ऊं का कोरस गाने लगे तो सारा वातावरण भयावह हो गया।

पुलिस कर्मी यह सब देख कर सहम गऐ थे। गोली चलाते तो न जाने कितनी जानें चली जातीं। वॉकी टॉकी का भरपूर प्रयोग करने के बाद पुलिस जत्थों की संख्या काफी बढ़ गई। समाचार पत्रों के कुछेक संवाददाता भी किसी किसी पशु से इस सारे हंगामे का कारण पूछते थे पर उनको नारों के सिवा कुछ भी नहीं सुनने को मिलता कोई जाना-पहचाना नेता नुमा चेहरा भी नहीं दिखाई दे रहा

था। इतने में ही क्या नारा सुनने को मिला तो सबकी समझ में बात आ गई। "कालू भेड़िये को पेश करो, पेश करो-वीं वीं वीं" इतने में ही एक युवा भेड़िया न जाने कहां से एक दायरा बनाकर सबको नचा नचा कर गाने लगा, "ले गई रे, ले गई रे सरकार कालू को ले गई रे, छुपा गई रे छुपा गई रे, सरकार उसे छुपा गई रे।" अपनी -अपनी दुम पीठ के ऊपर घुमाकर, जबड़े और दांत सबको दिखा दिखाकर सब युवा भेड़िये गाने लगे तो हंगामे की नवियत बदल गई। वाह क्या बात है। पहली बार पशुओं ने दिखा दिया कि वह क्या कर सकते हैं। युवा सियारों का दल आया और गोल दायरे में गीदड़ गायकी को और रसीली बनाने के लिए उन्होंने गाना भी शुरू किया, "मनोविनोदी पशु जो था-सबका मन बहलाता था- निकम्मी सरकार ने-गधा कहां छुपा दिया?" इसके साथ ही एकदम नारा देते थे, "गधों को पेश करो-अन्यथा सरकार छोड़ दो।" और फिर गीदड़ गायकी का मुज़ाहिरा। ऊं ऊं । वानर और वानरियां अपने बच्चों को अपने पेट के साथ लगाए सूं सूं सूं की आवाज़ के साथ नाचते थे, जब जब वे अपना कोल्हू नचाते थे तो देखते ही बनता था। वे ताली भी बजाते थे, साथ में गाना, "गई गई वानरी गई--परी परी वानरी परी-अधमुई सी ले ली गई- दारोगा की परी नई। हंगामा यह गली गली-वापस करो हमें वानरी-" इसके साथ ही नारा ज़ोरों से लगा देते थे "चलने देंगे नहीं सरकार- हमें अपनी वानरी से प्यार।" इस हंगामा-धमाचौकड़ी को कितनी देर चलने दिया जाता। इसलिए पुलिस ने अश्रु गैस के गोले बरसाये। भेड़ियों पर हल्का-सा लाठी चार्ज भी किया। सब पशु तितर-बितर हो गए। वानर वृक्षों पर, कोठों पर और लोगों के घरों में घुस गए, भेड़िये गलियों से दुम दबाकर भाग गए, सियार और गीदड़ भी उनके साथ हो गए। पुलिस ने थोड़ा-बहुत पीछा भी किया। पर हंगामा दूसरी सूरत इख्तियार कर गया। बच्चे-बूढ़े और स्त्रियां वानरों को घरों में खिड़कियों और द्वार से अंदर आते ही चीखने-चिल्लाने लगे। डरे सहमे वानर अपना और अपने बच्चों का आसरा ढूंढ रहे थे, इसलिए आंसू गैस से राहत पाने के लिए लोगों का पीने का पानी खूब प्रयोग किया। किसी-किसी ने तो पानी की बाल्टी में ही अपना सारा सिर डुबो दिया। कुछ बंदर घरों में पड़ा सामान भी उठाकर ले गए और एक घर का सामान दूसरें घर में छोड़ आए। गैस से और पुलिस की मारपीट से बचने के लिए जिस वानर को जिस वस्तु का सहारा मिला वह उठाया। किसी ने पतीला

अपने सिर पर टोपीनुमा पहना तो किसी ने टोकरी। कोई पका हुआ खाने का पतीला बीच गली में लाया और सबों को खिलाने का निमंत्रण देता रहा।यही नहीं, वस्त्र, खिलौने, पाठ्य पुस्तकें भी तितर-बीतर कर दीं। जनानियां सड़क पर आ गईं और छातियां पीटने लगीं। गली के प्राइमरी स्कूल में जैसे मातम छा गया था सभीं बच्चे रो रहे थे, चंदेक तो बेहोश हो गए थे। इस सबके बावजूद प्रेस संवाददाता फोटो पर फोटो खींचे जा रहे थे। एक किशोरी संवाददाता का कैमरा तो एक वानरी झपट कर ले गई थी, वह ज़ार ज़ार रो रही थी। जब तक घरों से लठैत युवा जन निकले और पशुओं को भगाया तब तक सहमी जनता, सहमे पशु सब सरकार को गालियां दे रहे थे। सड़क को देख कर लगता था जैसे लुटेरे अभी-अभी लूट मचाकर चले गए है। रीछ चरस गली के नुक्कड़ पर न जाने कहां चले गए, शायद सूफी मिज़ाज का धुंआ पीने।

गीदड़ जू ने "सियार जमात" के आफिस का सारा फर्नीचर तितर-बितर करवाया था, कागज़ और दूसरी चीजें बिखरी पड़ी नज़र आती थीं, उसके सिर पर मरहम पट्टियां लगी हुई थीं। सड़क पर आते ही उसने संवाददाताओं के सामने बयान दिया। "यह हंगामा किसी साज़िश के तहत हुआ है, किसने करवाया हमारी जमात के आफिस पर हमला। कोई तो होगा ही। मुझे भी ज़ख्मी करवाया और हमारे दफ्तर का माल जायदाद कुछ लुटा गया और कुछ तोड़फोड़ दिया गया। हम सरकार से गुज़ारिश करते हैं कि इस सारे हंगामे, लूट-खसूट की पूरी-पूरी जांच करवाई जाए।" संवाददाताओं ने गीदड़जू की ज़ख्मी हालत के और सियार आफिस के फोटो भी खींच लिए।

पुलिस की देखरेख में वन-प्रमुख बीच सड़क पर हिटलर की भांति इधर से उधर और उधर से इधर घूम रहा था। वह अपने अफसरों से घिरा था। उनका भी उस जैसा ही हाल था। वह "निक्का-निक्कमा" बोल रहा था। उत्तेजना में न जोने क्या अनाप शनाप बक रहा था। कुछ क्षणों के बाद, "नामुमकिन-नामुमकिन" शब्द की रट लगाता गश्त लगा रहा था। "आखिर कालू भेड़िये गया कहां? कहां छुप गया!। सारे राज्य में कोई अचानक गायब हो जाए और पुलिस पकड़ने में नाकामयाब हो तो फिर सरकार बरदाश्त कर सकती है।"

नामुमकिन-कल तक उसका अता-पता मिल जाना चाहिए और वह दारोगा कैसे वानरी को अपने साथ ले गया है, उससे पूछताछ की जाए, नहीं तो निलंबित

कर दो उसे" वन-प्रमुख गुस्से में आदेश दे रहा था। "सब गड़बड़ सुअर सम्मेलन के दिन से शुरू हुई। सारे वन आंचल की शांति भंग हो गई। कुछ तो करना ही पड़ेगा..."

सरकार ने इस हंगामे पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि अफवाहें फैलाने की बिना पर पशुओं को हंगामा करने पर उकसाया गया था। कानून तोड़ने वालों के साथ सखती के साथा निबटा जाएगा। डेंजर गली में हालात सामान्य हो गए हैं और सारी स्थिति नियंत्रण में है। शाम को टी. वी. और रेडियो से वन-प्रमुख का शांति संदेश भी प्रसारित किया गया। वानरों के हाथ कुछ ट्रांज़िस्टर भी हाथ लगे थे जो दिन भर बजते ही रहे ओर शाम को जब वन-प्रमुख का संदेश प्रसारित हुआ तो वह ध्यानपूर्वक सुनते रहे। प्रसारण में वानरी का कोई ज़िकिर नहीं था इसलिए उनका गुस्सा बढ़ गया। मोटे वानर ने एक बड़ा-सा पत्थर लाकर ट्रांज़िस्टर पर दे मारा। आवाज़ भी समाप्त हो गई और ट्रांजिस्टर भी टूट गया। सब खामोश थे "साली बक बक मशीन, हमारी वानरी को ले गए और वन-प्रमुख शांति का पाठ पढ़ा रहा है।" मोटे वानर का गुस्सा देख सभी वानर-वानरियां अपने-अपने प्रिय पेड़ पर चढ़ कर खुजली करने लगीं।

भेड़िये अपने बच्चों की गिनती करने में लगे थे। उन्हें विश्वास नहीं था कि सभी भेड़िये भली-भांति वापस लौटे हैं। कुछेक जो पुलिस की मारपीट के शिकार हुए थे अपने शरीर को सहला रहे थे। केवल एक भेड़िया शिशु बुरी तरह से घायल हुआ था इसलिए उसे बचाने के प्रयत्न हो रहे थे। सबसे बड़ा जमाव उस शिशु के गिर्द ही था। बूढ़े भेड़िये अपनी दुम हिला-हिलाकर उसे पंखा कर रहे थे और अन्य अपनी जीभ से सहला रहे थे पर वह फिर भी कराह रहा था। वौं वौं। वौं वौं औं औं। सियार और गीदड़ कंदराओं में घुस कर आज के हंगामे पर तबसरा कर रहे थे और खुश थे कि वह सभी सही सलामत लौट आए हैं। केवल सियार गर्ज कर बोला था, "यह जानना अति आवश्यक है कि सियार जमात के दफ्तर पर किसने धावा बोला था और हमारे महबूब नेता को किसने ज़ख्मी किया। हमें सरकार से माकूल मुआवज़ा मिलना चाहिए। हमारे युवा सियार गीदड़ों का कर्तव्य बनता है कि वह सदा सावधान रहा करें ओर वन-आंचल की रक्षा सुनिश्चित करने का यत्न करें।" सियार अपना भाषण जारी रखे था कि भेड़ियों का तुमुल नाद वौं वौं चहूं ओर फैल गया। सभी पशु विस्मय

से देखने आए। बेचारा कराहता हुआ शिशु भेड़िया ज़ख्मों की ताब ने लाकर चल बसा था। सारे वन आंचल के भेड़िये एकत्रित हो गए केवल हिटमेन भेड़िया और उसके झुंड के भेड़िये नहीं दिखाई दे रहे थे।

"शिशु भेड़िये की जान के बदले- हम कुछ कर दिखाएंगे" और फिर वौं वौं वौं वौं औं औं का लंबा- सा सहगान रूपेन सुर आकाश चीरता सुनाई देता था। इस दृश्य को देखकर सभी पशु सहम गए। एकदम सियार बीच में बोल पड़ा, "सारे वन आंचल पर आफत लाई गई है, सभी पशु कालू भेड़िये के अचानक गायब होने पर, वानरी को उठा कर ले जाने पर, और गधों को अदृश्य करवाने पर सरकार के विरोध एक हो गए हैं पर हिरण हांगुल जाति आराम से अपनी घास चर रही है। कल को सरकार उनके खिलाफ भी ऐसा ही कार्य करेगी तो क्या हम उनका साथ नहीं देगें।" सियार का इतना ही कहना था कि "शेम शेम" की आवाज़ गूंजने लगी। भेड़ियों में से आवाज़ आई, "अब हमें क्या करना चाहिए।"

"शिशु भेड़िये की लाश को कंधों पर उठा कर कल सवेरे ही सारे नगर में जुलूस निकालना चाहिए और सरकार और पुलिस का विरोध करना चाहिए। "

"ज़ालिम सरकार के डंडे की परवाह नहीं करेंगे हम" यह नारा गूंज गया और लाश को कंधों पर उठा कर सारे वन आंचल में रात के अंधेरे में ही घुमाते रहे। मातमी जुलूस देखकर हिरन-हांगुल भी शामिल हो गए उनकी संख्या बहुत कम थी।

प्रातः सवेरे सारे वन पशुओं का मातमी जुलूस डेंजर गली की ओर चल दिया। गीदड़ गायकी की आवाज़, भेड़ियों की वौं वौं के साथ मेल न खाते हुए भी वातावरण भयानक बना रहा था, उस पर बीच बीच में नारेबाजी से माहौल सबके दिलों में घबराहट पैदा करता था। डेंजर गली की सभी दुकानें बंद थीं। बहुत-सा सामान, टूटे-फूटे बर्तन, चीथड़े, फर्निचर और ईंट-पत्थर सब कुछ बिखरा पड़ा था लेकिन पशुओं को चलने में कोई दिक्कत नहीं हुई। पोलिस सतर्क थी ओर विरोध करने के मूड़ में नहीं थी। आखिर मातमी जुलूस से क्या खतरा। सब पशुओं के अपने-अपने नारे थे। "जान का बदला जान से लेंगे" और "कानून को तुड़वाएंगे- कालू को छुड़वाएंगे", और "कालू को पेश करो वरना हंगामा जारी है" यह नारे भेडिये लगा रहे थ, "गधों को पेश करो-साज़िश को नंगा करो", यह नारा गीदड़-सियार जाति का था, "दारोगा को पेश करो- वानरी को रिहा करो"

और "दारोगा की साज़िश को नंगा करो, नंगा करो।" यह नारा वानर जाति का था, बीस बाईस रीछ अपनी गर्दन हिला-हिलाकर झूमते से नजर आए और ऐसा लगता था कि उनका इस मातमी जुलूस के साथ चलना, दुख दर्द कम पर हंसी अधिक पैदा करता था। वे रुक कर एक आवाज़ में बोल रहे थे, "वन आंचल नहीं है- सियासी खेल का अखाड़ा।" बड़े -बड़े बुद्धिजीवी इस नारे को सुन कर समझ रहे थे कि अभी भी रीछ में अपनी परंपरागत रीति-प्रीति के प्रति श्रद्धा है। लोमड़ियों ने भी अपनें कीमती फरनुमा चमड़ी को रुक-रुक कर खुर्च-खुर्च कर नारों के साथ प्रदर्शन किया, "ज़ालिम का करें पीछा हम- होशियार हमारा नारा है।" यह न तो नारा लगता था न कोई कविता-तुक पर फिर भी उनके कहने का अपना ही अंदाज़ था। सबके पीछे चंद एक खचर आए जो न नारा देते थे न कोई हंगामा करने की नीति से चलते थे। इधर -उधर की चीजें मुंह में डालते जाते थे और बीच-बीच में हिनहिनाते थे। लेकिन कद में पशुओं से ऊंचे होने के कारण दूर से ही दिखाई देते थे।

भेड़िये की लाश को कहां ले गए, बताना मुश्किल है। न उसे गर्क-दरिया किया, न आग में ही जलाया, न ज़मीनदोज़ ही किया न आकाश के पक्षियों को उसका मांस खिलाया पर अफवाह फैल गई कि खुद ही मुर्दे को खा गए। सारे वन प्राणी वन आंचल को सही सलामत लौटे थे।

उसी दिन समाचार पत्रों की बिक्री सबसे ज़्यादा हुई कारण कि उनमें चित्रों की संख्या अधिक थी। हर पत्र में कम से कम एक दर्जन के करीब चित्र छापे थे और सब के सब देखने योग्य। कुछेक चित्रों के नीचे लिखा था (1) सिर पर लंबे बालों की विग लगाकर बंदरी, (2) नेल पालिश से मुंह रंगाकर वानर शिशु, (3) भेड़िये के मुंह में स्कूली बच्चे का बस्ता, (4) रीछ और गुशताबा देग, (5) टेबुल पर कुर्सी, कुर्सी पर वानर, वानरी के मुंह में कलम, हाथ में कागज़, (6) घायल गीदड़ पट्टियों में लिप्त, (7) हांडी पर बैठा मोटा वानर कड़छी लिए हाथ, अपनों को बांटे परात में दूजों को मारे लात, (8) किस की तस्वीर खींच रही है वानरी, लिए हाथ में कैमरा, (9) सर पर उठाए गठरी गीदड़ चला जंगल की ओर, (10) पशु पुलिस का आमना-सामना इत्यादि। चित्रों के कारण एक दिन में ही किसी किसी समाचार पत्र ने तो दो-दो एडिशन छाप कर बेच दिए और साथ में मातमी जुलूस की तस्वीरें भी लगाईं। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के संवाददाता ने पूरी फिल्म खींच कर विदेशों में दिखाने के लिए तैयार की।

इस सारे हंगामे और जुलूस से सबसे अधिक परेशान था वन-प्रमुख। उसने सारे चमचों, गुप्तचरों और अनुचरों को बुलाया। क्योंकि राज्य व्यवस्था पर समाचार पत्रों में कड़ी आलोचना की गई थी। ज़िम्मेदार अफसरों में भी यह बात फैल गई कि वन-प्रमुख बड़े ही गुस्से में हैं। अतः आपस में ही इस सारी घटना का दोषी किसी न किसी को ठहराने की बात कर रहे थे। दारोगा को वानरी सहित हाज़िर होने को कहा गया था। संदेश टेलिफोनिक भेज दिया गया था। सब आफिसर लोगों में वानरी को लेकर अधिक चर्चा हो रही थी। सब उसे देखने के लिए लालायित थे। दारोगा वानरी को बुर्का पहना के लाया। पुलिस ने वानरी को झट से जीप में बिठा कर न जाने कहां को प्रस्थान किया। सब विस्मय में पड़ गए।

☆☆☆

गधे के जीवन में दिन भर एक जैसा काम करने से, एक जैसे वातावरण में रहने से, और एक जैसे नैसर्गिक दृश्य को देखते रहने से उबटन-सी आ गई थी। सुबह शाम और रात को खुश्क ठंड का सामना और दिन को ठंड मिश्रित धूप । खाने को उसे कभी सब्ज़ी नसीब नहीं हुइ। सब कुछ रूखा-सूखा ही मिला। रूखे-सूखे पर्वतों को देख-देख कर उसका जी भर आया था। इस पर उसे यहां की खामोशी बहुत खलती थी। कभी-कभार ही आंधी हवा के चलने से गर्दा-भरी धूल नाचती-उछलती थी तो वह अपनी आखें बंद कर लेता था और पुराने स्थान को याद करके लंबा निश्वास छोड़ता था या यूं ही ढींचू-ढींचू का शोर मचाता था या कभी अपने पैंरों से रेत खुरचता था। नदी पर पानी पीने के बावजूद कवेल एक बार लंबा मूत्र करता था। उसे जिन हंगामों का अनुभव था वह यहां पर नहीं होते थे। उसने यहां के लोगों का झमघट नहीं देखा था। केवल एक बार उसे दिन भर आराम मिला था जब सभी गांववासी नई पोशाकें पहनकर कहीं मेले में चले गए थे। जिस पशु के साथ उसकी बातचीत होती थी वह था कुत्ता। लेकिन जब मालिक या उसके परिवार का कोई सदस्य कहीं चला जाता तो वह भी उनके पीछे-पीछे चला जाता था केवल गधा था जो अकेलापन महसूस करता था। नतीजा यह हुआ कि उसकी खाल से बाल झड़ने लगे और धीरे-धीरे लाल धब्बे उभरने लगे। उसके घुटनों पर घाव भी उभर आए थे जिन पर

दिन को मक्खियां भिनभिनाती थीं। कभी-कभी कुत्ता आकर उसके घावों को अपनी जीभ से सहलाता था और अपनी दिनचर्या भी सुनाया करता था फिर भी उसका मनोविनोद कम होता था। घावों के गहराने से उसे दर्द तो होता था पर न वह कराहता था न आंसू बहाता था। कभी-कभी उसे मृत्यू का भय भी होता था और कामना करता था कि वह पशु आंचल में ही अपने प्राण छोड़ जाता।

थक कर चूर हुए गधे ने एक दिन शाम को खामोशी तोड़ कर कुत्ते से कहा, "जीवन भर लताड़ा गया हूं। जिस-जिस मालिक के पास रहा हूं, उसका बोझ ढ़ोता रहा हूं। वह कमाता गया और मैं उसका बोझवाहन और सवारी ही रहा। जब सरकार ने हम पशुओं की खातिर योजनाएं बनाई तो उन पर खर्चने वाला धन सियार-गीदड़ हड़प कर गए। जब वनांचल की बहबूदी की बात हुई तो वन पशु सोते रहे। रीछ सूफी मिज़ाज का धुआं पीकर सोते रहे। हिरन हांगुल घास चरते रहे और फुदकते रहे। भेड़िये भौंकते रहे। मेमने और बकरियां रोज ज़बह कर दी गईं और हलाल-झटका रूप में बेची गईं। सियार-गीदड़ दलाली में लग गए और वन के पेड़ कटते गये। वन आंचल छोटा होता गया। लोमड़ियां पिछलग्गू बन गई और मक्कारी में दिन -गुज़ारी करने लगीं। कुत्ता जूठन खाते-खाते वफादारी करते हुए भी वोट बैंक न बन सका। और जब मुझ गधे में लीडरशीप पैदा करने की बेदारी जागी तो विस्थापन मिला इसलिए मेरे हमदर्द, दोस्त अब मेरे दिन गिने-चुने ही हैं। इसलिए मेरा अंत कहां और कैसा हो, नहीं कह सकता। यदि तुमसे हो तो ज़रा साथ ही रहना।"

"तुम्हारी व्यथा ज़ानता हूं दोस्त, तुम सब गधे साज़िश के शिकार हो गए हो। दलालों ने तुम्हें फंसा कर यहां लाकर नए मालिकों के हाथ बेच कर दलाली खाई।" कुत्ते ने सहानुभूति ही प्रकट नहीं की बल्कि सच्चाई का भी इज़हार किया।

"मालिक नया हो या पुराना, दास बनाके ही छोड़ता है, बोझ उठवा के ही कुछ खाने को देता है पर... " गधा खामोश हो गया।

"चुप क्यों हो गए। बात तो पूरी करो" कुत्ता बोला। "हम उसकी जायदाद का हिस्सा तब तक बने रहते हैं जब तक काम करने के योग्य होते हैं, बीमार पड़ने पर उसका बोझ बन जाते हैं जो वह उठा नहीं पाता। यदि

हमारी मृत्यु के बाद वह हमारी लाश बेच सका तो कुछ रुपया-पैसा बना लेता है।" गधा ऐसा कहकर खामोश हो गया।

"क्या उसे पशु पालने का दर्द नहीं होता?" कुत्ते ने प्रश्न किया।

"होता होगा- थोड़ा बहुत, पर अधिक नहीं।" गधे ने उत्तर दिया।

"मर कर पशु की लाश क्यों बेचता है।" कुत्ता जानना चाहता था।

"चमड़ासाज़ खरीदता है। जूते बनाने के लिए।" गधा खीझ के साथ बोला।

"अरे वाह। पशु तो मालिक के लिए जीवित या मुर्दा दोनों सूरतों में लाभदायक है, क्यों?"

"इसलिए, कभी-कभी चुराए जाते हैं। बेचे जाते हैं। निष्कासित होते हैं। अच्छे दास माने जाते हैं। तुम दासता क्या जानोगे, वफादार जो ठहरे। सूंघ कर पहचान जाते हो, चोर को भी और मालिक को भी- बस यह कमी हम में है।"

गधा विचारक की भांति बोल रहा था। "जिसने भी खरीदा उसके दास, उसका माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक लेकर उसके काम आना..."

"कोई दूसरा हमें अपना बनाते ही हमारा मालिक बन बैठे तो हम उसको काट लेंगे।" कुत्ते ने बड़प्पन के साथ कहा।

"हां हां मांसखोर पशु ऐसा कर सकता है। हम तो केवल दुलती ही मार सकते हैं, जिससे बचा ही जा सकता है। वह तो केवल गुस्से का प्रदर्शन है- प्रतिशोध या हिंसा नहीं" फिर गधा विचारक की भांति बोला और खामोश हो गया।

"मुझे लगता है तुम्हें कुछ दिन आराम करना चाहिए। जिस से तुम्हारे घावों पर दबाव भी नहीं पड़ेगा।" कुत्ते ने सहानुभूति प्रकट की। "और तुम्हारा मालिक -हम दोनों का मालिक दिन भर क्या कमाकर लाएगा-क्या खाएगा क्या खिलाएगा? कल जब मैं केवल तीन के बदले दो ही फेरे लगा पाया था, उसने अपना माथा ठोंका था और मोटी-मोटी गालियां देता रहा" ढेर सारी हवा छोड़ते हुए गधे ने कहा।

"वह तो है। पर यदि तुम्हें कुछ हो गया तो क्या वह रोएगा?" कुत्ता दुम हिलाकर बोला।

"रोएगा या नहीं पर कुछ देर के लिए पछताएगा" गधा अनुभव की बात कह गया।

इतने में ही दिन बहुत चढ़ आया था। मालिक आया और गधे की रस्सी खोल कर उसे रेत ढोने ले चला। कुत्ता चुपचाप दोनों के पीछे-पीछे गया। आज गधे से पूरी शक्ति के साथ नहीं चला जाता था। उसके कदम भी डगमगा जाते थे। मालिक देखकर जीभ से 'चरर-चरर' की आवाज़ निकाल कर प्यार जतलाता था। आखिर नदी के पास पहुंच कर गधे ने आज दूसरे दिनों की अपेक्षा अधिक पानी पिया फिर उस पर रेत का सामान्य बोझ लाद दिया गया और 'चरर -चरर' करके हांक दिया गया। पहाड़ी पर चढ़ते-चढ़ते वह कदम-कदम रुकता जाता था। पग संभालकर आगे बढ़ता था। बीच-बीच में मालिक उसे लाठी से भी ठोंक मारता था। कुत्ता पगडंडी से न चलकर छलांगे मारता हुआ अपना मार्ग छोटा कर देता था और दोनों से पहले पहाड़ी के ऊपर मैदान में पहुंच जाता था आज गधे ने ऊपर पहुंचने में बहुत देर कर दी और कुत्ता ऊपर पहुंच कर बहुत भौंका था। किसी ने उसे भौंकने के लिए एक पत्थर भी मारा था पर वह बचकर भागा था।

मालिक ने देखा कि गधे के एक घुटने से खून की एक पतली-सी धार बह रही है। उसने उसे ठहरा कर उसके घाव पर मिट्टी फैंकी जिससे घाव काला दीखने लगा। फिर हांकता गया पर बगैर किसी ठोंक के। आखिर गधा अपनी मंज़िल पर पहुंचा। लेकिन अब उसमें वापस आने की हिम्मत नहीं थी। जितनी देर में दूसरे गधे दो फेरे लगा चुके थे। उसकी दशा देखकर केवल एक गधी खूब रेंगी थी। जब तक कि उसके मालिक ने उसे रस्सा खींच कर ढलान के नीचे हांका था। केवल कुत्ता दर्द भरी निगाहों से गधे को निहारता रहा। मालिक परेशान ज़रूर हुआ। चिंतित भी दिखाई दिया। उसने आज अधिक से ज़्यादा चुरट भी पी लिए पर गधे को शाम ढलने पर भी अपने साथ न ले सका। वह धराशाई टांगे पसार कर रेत के ढेर के समीप आकाश ताकता रहा। गधे को वहीं पर छोड़ कर मालिक घर को लौट आया। गधे की दशा देखकर कुत्ता भी वहीं रुक गया और अपना मुंह अपनी टांगों के बीच छुपाकर गधे के पास बैठा रहा। दोनों चुप थे।

पक्की सड़क के आखिरी छोर पर मैदान के कटाव के समीप लोहा-सरिया लादकर लाने वाले ट्रक ठहरते थे और रात गुज़ार कर दूसरे दिन सुबह सवेरे वापस चले जाते थे। आज भी एक ट्रक वहीं पर ठहरा था जिसका ड्राइवर और कंडक्टर शराब पीकर खाना खाकर अंदर सोए थे। ट्रक मैदान के पास मिट्टी के कटाव के साथ सट कर लगाई गई थी। रात को गधे में थोड़ी सी हिम्मत आई और वह पहले बैठ गया और फिर खड़ा हो गया। कुत्ता जैसे नींद से जाग गया।

वह गधे के समीप आ गया उसके सुम सहलाने लगा। जैसे कह रहा हो "चलो अपने डेरे पर चलें, मालिक को चौंका दें"। गधा एक टक कुत्ते को देखता रहा, हतप्रभ-सा। केवल उसकी सांस बहुत धीरे-धीरे चल रही थी। फिर गधे ने अपनी गर्दन दायें-बायें घुमाई। कुछ कदम आगे-पीछे चला। कुत्ता भांप गया कि गधा अपनी हिम्मत बटोर रहा है। पर गधा पहले कुछ मुड़ा और फिर जैसे रास्ता भूल कर मैदान के उस ओर पग बढ़ाता गया जिस ओर ट्रक ठहराए जाते थे। अंतिम छोर पर उसकी अगली दोनों टांगें ट्रक में धंस गईं। अपने भारी शरीर को कुछ आगे सरकाते ही उसकी पिछली टांगे भी ट्रक में आ गई। ड्राइवर और कंडकर शराब की मस्त नींद में सो रहे थे। कुत्ता विस्मय में डूबा सोचता रहा कि अगली सुबह जब गधे को ट्रक से बाहर फेंका जाएगा तो वह बच नहीं पाएगा। इसलिए मैदान के छोर पर बैठा पहरा देता रहा। रात भर उसे नींद नहीं आई पर प्रातः काल के समय उसकी आंख लग गईं। सुबह जब ट्रक स्टार्ट कर दी गई तो कुत्ता घर्र-घर्र की ध्वनि से जाग गया। जब ट्रक चलने लगी तो उसने छलांग लगाकर ट्रक के एक कोने में टांगें पसार कर पड़े गधे के समीप ही बैठकर अपना स्थान संभाल लिया। हिचकोले खाती हुई ट्रक टेढ़े-मेढ़े पहाड़ी रास्तों- ऊंचाइयों से नीचे आ रही थी इसीलिए लगता था कि दोनों पशु कभी आगे और कभी पीछे सरक रहे हैं। जब कुछ समतल यात्रा हो रही थी तो कुत्ता गधे के समीप आकर लंबूतरा मुंह सहलाने लगा। गधं ने आंखें खोलीं। कुछ बोले बिना ही कुत्ते को देखता रहा। अपनी जीभ से कुत्ते ने गधे के मुंह से झाग दूर की तब गधा बोला।" "अब मुझे अपने दूसरे स्वप्न का फल समझ आ रहा है"

"क्या सचमुच "कुत्ते ने उत्सुकता से कहा।

"शोभा यात्रा में सजधज कर जा रहा था तो वह मेरी अंतिम यात्रा का संकेत था। केवल तुम उस यात्राा में नाचते फुदकते थे, अतः तुम अकेले इस समय मेरे साथ हो। ट्रक में चालकों ने अगरबत्तियां जलाई हैं और मुझे सुगंध आ रही है। शोभा यात्रा में भी कोई पशु अगरबत्तियां जलाए जा रहा था। मेरे दोस्त! अब मैं कभी स्वप्न नहीं देखूंगा। कभी नहीं! जागृत रहना कबूल करूंगा पर स्वप्न नहीं देखूंगा।"

इस समय ट्रक ऐसे स्थान पर ठहरा था जहां समीप ही कोई पहाड़ी नदी पत्थरों के साथ छकछकाती दौड़ती बह रही थी। कुत्ते की आंखें गीली हो गई थीं। वह सोच रहा था कि एक तो उसका दोस्त अंतिम सांसें ले रहा है। और ट्रक न

जाने कहां पर पूरी तरह रुक जाए और चालक उन दोनों को बाहर फेंक दें। कुछ समयोपरांत ट्रक फिर चलने लगी ओर काफी समतल सड़क पर चलने के बाद शाम को पुनः ऐसी पहाड़ियां चढ़ने लगी जो नग्न होकर ऊंचे घने वृक्षों से भरे थे। जिन पर्वतों को वह छोड़ आया था यह पर्वत उनसे पूर्णतः भिन्न थे। चांद भी पहाड़ों के पीछे चढ़ आया था। गधे को कुत्ता साफ दिखाई दे रहा था। उसकी आखें खुली पड़ी थी। कुत्ता गधे की आंखों में चमक का अनुभव कर रहा था। कभी-कभी सड़क का मोड़ बदलता था तो अंधेरा छा जाता था। चांद नहीं दिखाई देता था। अखिर कहीं पर किसी पहाड़ी नाले के पास ट्रक रुक गया और चालक दल किसी दुकान पर हुक्का-पानी के बाद खाना खाने लगे। कुत्ते ने कोशिश की कि ट्रक से कूद कर नीचे आकर कुछ जूठन मुंह में डाल दे पर दूसरे ही क्षण उसे स्मरण हुआ कि यहां के कुत्ते जो कद में ऊंचे हैं उसे नोच डालेगें। इसलिए भूखे रहकर ही गधे का साथ निभाना उसने अच्छा समझा। रात भर वहीं रुक कर सांस ले रहा था। कहीं रास्ते में जब ज़ोर का झटका महसूस हुआ तो गधे ने अपनी अंतिम सांस ली लेकिन उसकी आंखें खुली रह गई। कुत्ता कांप उठा पर धैर्य से काम लेता गया। समीप में पड़ा टरपोलीन को उसने दांतों से खींचकर कई छोरों से आगे लाकर गधे को ढक लिया। जब गधा पूरी तरह ढक गया तब वह एक ओर कोने में जा बैठा इस प्रतीक्षा में कि जहां भी ट्रक रुकेगा वह छलांग लगाकर बाहिर आकर अपनी मंज़िल ढूंढ लेगा पर ट्रक आगे ही चलता गया।

☆☆☆

हिरन-हांगुल शिष्टमंडल के साथ जाने वाले सभी हांगुल-हिरन सदस्यों ने वन-प्रमुख से प्राप्त होने वाले न्योते का इंतिज़ार किया। इधर वन-प्रमुख और वन-पाल के बीच होने वाली बैठकों के समाचार भी पत्रों में छपते रहते थे। डेंजर लेन में रोज़ अशांति रहना व्यवस्थापकों के लिए चिंता का विषय बना था। वन-आंचल में होने वाली घटनाओं के प्रति जगत भर में चर्चा होती रहती थी और विदेशी संवाददाता इन घटनाओं में विशेष दिलचस्पी लेते थे। भेड़िये खूंखार और उग्र रूप धारण करने लगे थे। हिरनियां दिन के उजाले में ही घूम फिर सकती थीं। डेंजर लेन के दुकानदारों को मुआवजा देने की सूची व्यवस्थापकों ने समाचार पत्रों में छपवाई। सियार जमात को जो क्षति हुई थी और गीदड़ जू को

जो घाव लगे थे, उनके बदले में अच्छी खासी रकम मिलनी निश्चित थी। जल्दी में ही सही व्यवस्थापकों ने दुर्लभगति-कृशकाय आयोग की रिपोर्ट को घोषित किया जिसमें साफ तौर से भेड़िये जाति को सुअर शिशुओं के संहार के लिए उत्तरदायी ठहराया गया था। इसलिए भेड़िया गली में रोष बढ़ रहा था। कालू की अनुपस्थिति में हिटमेन भेड़िया खूंखार हो कर गुर्रा रहा था और युवा भेड़िये सुरखरू हो गए थे। मांसाहारी पशु निर्भीक हो रहे थे और घासाहारी पशु भयाकुल। फिर भी स्थिति सामान्य और नियंत्रित कही जाती थी।

किस दिन क्या होने वाला है किसे मालूम होता है। इसी दिन हांगुल हिरन जाति का वार्षिक उत्सव तीन पत्थर पर मनाया जा रहा था। इसलिए हिरन हांगुल सभी प्रातः काल से ही एकत्र हो रहे थे। बड़ी चहल-पहल थी। तीन पत्थर के सारे इलाके को सजाया गया था। अलग-अलग मंडलियां अलग-अलग खेल करतब दिखा रहीं थीं। पोलिस को शांति बनाए रखने के लिए सूचित किया गया था इसलिए सभी हिरन-हांगुल पशु अपने कार्यक्रम में दिलचस्पी के साथ जुड़े थे। हां कोई-कोई आज के समाचार पत्रों में छपे समाचारों से परेशान नज़र आ रहा था। विशेषकर बुद्धिजीवी हांगुल। वह जिस से भी मिलता उससे सावधानी बरतने की ताकीद करता। उसकी बातों को सुनने के बाद भी सभी अपने मनोविनोद कार्य में दिलचस्पी लेते थे। "यूं ही परेशान होता है।" युवा हिरन ने अपनी प्रेमिका हिरनी से कहां "हमें निश्चिंत होकर घूमने-फिरने नहीं देगा।"

"आयु में हमसे बड़ा है और चाहता है कि किसी प्रकार कोई अशुभ घटना न घटे। तुम्हें क्यों खीज होती है।" प्रेमिका हिरनी ने कहा।

"हम यहां सावधानीसे प्रेमालाप करने आए हैं। ऐसे सुंदर स्थल का एकांत कहां नसीब होता है।"आशिक मिज़ाज हिरन ने कहा। इतने में सूचना मिली कि सभी हिरन हांगुल सामूहिक जाति गान में भाग लें। इसलिए तीन पत्थर के सामने सभी इकट्ठे हो गए। "सावधान" की आवाज़ चहूं ओर गूंज गई। लंबे-लंबे और नोकदार सींगों वाले हांगुल बाकी सभी सजातीय पशुओं को घेराव में किए हुए थे और आस्था का गान आरंभ हो गया। युवा हिरन की खीझ इस बात पर अधिक बढ़ गई। उसके प्रेम प्रदर्शन पर जैसे रोक लग गई। "लो आस्था-गान गाने के लिए भी अब नतमस्तक होना पड़ेगा।"

"इस उत्सव का लाज़मी अंग है और इसीलिए सभी आए हैं" हिरनी ने

कहा और कुछ कदम उन्हें आगे आकर दूसरे हांगुल हिरनों के साथ मिल जाना पड़ा। आस्था गान आरंभ हो गया।

भेड़िया गली में सभी भेड़िये एकत्र हो कर नारे लगा रहे थे।"कालू को पेश करो। साज़िश को नंगा करो।" इतने में ही हिटमेन भेड़िया मंच पर आया और कालू भेड़िये का प्रिय नारा लगाने लगा "जो हमसे टकरायेगा" और उत्तर में आवाज़ आई, "गोली खाकर जाएगा।" सभी भेड़िये अपनी जिह्वाएं मुंह से बाहर लंबी लटकाने लगे। और फिर सबने मिल कर वौं वौं की आवाज़ से चहूं दिशाओं को हिला दिया। "मेरे प्यारे भेड़िया भाइयों और बहिनो। ज़रा अपनी शक्ति पहचान लो। हमने किस पशु का मांस नहीं खाया है। अरे यदि शेर भी मरता है हम उसकी खाल को भी नोच लेते हैं। हमें झूठ मूठ ही इल्ज़ाम लगाया गया है। क्या आज का समाचार पत्र पढ़ कर आपका खून नहीं खौल उठा है? यदि हां तो कुछ करने की ठान लो। हमें कृशकाय ने लांछित किया है। हम पर झूठा इल्ज़ाम लगाया गया है और हमारे प्रिय नेता कालू को फंसाने की साज़िश की जा रही है। अगर आप में गैरत है तो जाकर देख लो तीन पत्थर पर सभी हिरन-हांगुल जाति जश्न मना रही है। वह आपस में मिठाइयां बांट रहे हैं और वह हमसे संख्या में कम होते हुए भी साज़िशें करते रहते हैं। सरकार भी उनको बड़े-बड़े पदों पर आसीन करती है। बोलो क्या तुम लांछित होना, दोषी होना स्वीकार करोगे? क्या झूठे इलज़ाम कबूल करोगे?" उत्तर में हर ओर से 'नहीं-नहीं' की आवाज़ें और भौं-भौं वौं-वौं ध्वनि गूंज उठीं अपना जोशीला भाषण जारी रखते हुए हिटमैन कहता गया "तो जाकर देखो और तीन पत्थर पर धावा बोल दो? आखिर वनांचल के प्राणी होने के नाते आपका भी उस स्थान पर अधिकार है। बदला लो बदला ! अब मरने से क्या डरना। अपने असली पशु स्वभाव पर उत्तर आओ और चलो बोल दो धावा तीन पत्थर पर और जो भी रुकावट बन कर आपके मार्ग में आएगा उसे वहीं पर मार गिरा कर काट खाओ। मरने-मारने पर उतारु हो जाओ। चलो!" हिटमैन मंच से नीचे उतरा और सारे के सारे भेड़िये, छोटे-बड़े उसके नारों का जवाब देते हुए दौड़ पड़े, "जो हम से टकरायेगा-गोली खा के जायेगा।"

"ठहरो भाइयो ठहरो। ज़रा होश की दवा पियो। गोली का शब्द मुंह से न निकालो। सब के सब मारे जाओगे, मुफ्त में।"अचानक गीदड़ जू सामने आ गया। 'जोश के साथ होश भी कायम रखो'।

"हिटमैन से बात करो।" दूसरे भेड़िये ने कहा।

"आगे बढ़ो आगे। जो हमसे टकरायेगा- यूं ही रौंधा जाएगा।" नारे बाज़ी में किसी भी भेड़िये ने गीदड़जू की बात नहीं सुनी और न हिटमैन उसके आगे आया। गीदड़ के साथ उसका कोई चमचा भी साथ था जिसके सामने गीदड़ को लज्जित होना पड़ा था क्योंकि उसकी बात पर किसी भेड़िये ने ध्यान नहीं दिया।

"सुनो तो इन सबके पीछे-पीछे जा कर देख लो यह कहां जा रहे हैं। और क्या करने। मुझे आकर सारा वृत्तांत सुनाना।" गीदड़जू का आदेश था इसलिए वह चमचा सभी भेड़ियों के पीछे-पीछे चलने लगा। हिटमैन ने सब भेड़ियों को तो भड़काया पर स्वयं अपने चंद एक निजी साथी लेकर पीछे ही रह गया। गीदड़ जू अपनी गीदड़ी के पास अपनी कंदरा की ओर जा रहा था।

"क्यों भाई हिटमैन, तुम अपने साथियों के साथ नहीं गए। बड़े गुस्से में थे और नावाजिब नारे लगा रहे थे।" गीदड़ ने हिटमैन से कहा।

"मैंने भी रोकने की कोशिश की पर इन जानवरों ने मेरी एक भी नहीं सुनी। हाथ में हथियार नहीं और गोली की बात करते हैं। खूंखार मूर्ख!" हिटमैन ने आर्द्र वाणी में कहा।

"लेकिन जा कहां रहे हैं?" गीदड़ ने पूछा।

"कहां जा रहे हैं कुछ नहीं मालूम। शायद डेंजर गली की ओर गए हों।" हिटमैंन ने कहा। "शायद आयोग की रिपोर्ट के विरूद्ध जलसा करेंगे।" "ऐसा" गीदड़ ने आश्चर्यपूर्वक कहा।

"तो लगता है इनमें भी बेदारी आ गई। और वह भी कालू भाई की अनुपस्थिति में।.... क्षमा करना हिटमैन यह बता सकते हो कि कालू, मेरा जिगरी यार, कहां हैं।" गीदड़ ने पूछा।

"जान कर क्या करोगे।..... पोलीस में रपट कराओगे।" हिटमैन ने हिम्मत से कहा।

"रपट और मैं! अरे थाने की हवा कई दिन खाकर आया हूं। पोलीस तो मेरा पीछा करती ही रहती है। नई अदावत है क्या?" गीदड़ ने चातुर्यपूर्ण वाणी में कहा।

"तो सुनो। वह सीमा पार गया है। उसे वनांचल की जलवायु रास नहीं आई और सुनो उसने वहां दस बीवियों के साथ शादी रचाई है। घर बसाया है।

एक बड़ा खानदान होगा तब सब को लेकर यहां आएगा जब तक कि हम सब इस दुनिया में नहीं होंगे। समझा, क्या कर लेगा तू अपने यार का। अपनी जमात का सदस्य बनाएगा?" गुस्से में हिटमैन न जाने क्या-कैसी जली कटी सुना गया।

"अरे भाई हिटमैन। क्यों नाराज होते हो। मेरा कालू..... कब से उसे देखा ही नहीं...इसीलिए पूछा... खैर चलता हूं पर नाराज़ मत होना... हां.." कह कर गीदड़ चल दिया। हिटमैन और उसके साथी भी भेड़िया गली की ओर धीरे-धीरे चलने लगे।

उधर तीन पत्थर पर आस्था गान अपनी चरम सीमा पर था कि भेड़ियों ने चारों ओर से धावा बोल दिया, "जो हमसे टकराएगा।" उत्तर में जोर से आवाज़ आई, "गोली खाकर जाएगा।" पोलीस चौकी से यह समझकर कि हिरन हांगुल जाति के उत्सवों में शांति ही रहती है, केवल एक सिपाही को लाठी समेत भेजा गया था। स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए जूं ही सिपाही आगे बढ़ा तो दौड़ कर एक युवा भेड़िये ने अपनी चारों टांगों को समेट कर उछाल ऐसी भरी कि सिपाही की छाती से टकरा गया। सिपाही धराशायी और उसका लट्ठ दूसरा भेड़िया अपने मुंह में उठा कर हिरनों और हांगुल के बीच भागदौड़ मचाता दौड़ता रहा। खलबली मच गई। हांगुल हिरन भाग खड़े हो गए और भेड़िये उनका पीछा करते रहे। देखते-देखते तीन पत्थर का सुशोभित वातावरण मौत की-सी खामोशी में बदल गया और सब कुछ अस्त व्यस्त लगता था। हांगुल-हिरनों की भाग दौड़ में हलचल मच गई। गाड़ियों में पोलीस आ गई। प्रेस के संवाददाता आन पहुंचे। कहीं से बुद्धिजीवी हांगुल को देखा गया। दौड़ लगाकर हांफ रहा था। उसने इस बिगड़ती दशा का ज़िम्मेदार सरकार को ठहराया जिसने पूरी तरह पोलीस तायनात नहीं की थी। उसने यह भी बताया कि पोलीस भी इस भेड़या आक्रमण में शरीक थी। हताहत सिपाही को हस्पताल पहुंचाया गया था इसलिए उसने क्या बयान दिया कोई नहीं जान सका। इतने में ही क्या देखते हैं कि तीन पत्थरों में से एक पत्थर, वह भी बीच वाला, गायब हो गया है। इस बात पर सनसनी फैल गई। पोलीस सर्तक हो गई और रातभर गिरफ्तारियों में लग गई।

दूसरे दिन जब समाचार पत्र छप कर आए तो सुर्खियों ने वनांचल का सारा वातावरण संदेहात्मक बनाया। बुद्धिजीवी, कृशकाय और जोशीला हांगुल वन प्रमुख की ड्योढ़ी पर धरना देने लगे। दिन को हांगुल-हिरन जाति का जलसा हुआ। नारे लगने लगे। वह अपने ही वनांचल छोर में जलूस निकालते रहे। केवल

पोलीस उनके चारों ओर पहरा दे रही थी। दो दिन समाचार-पत्रों की सुर्खियां इस प्रकार थीं:

"जातिवाद भड़काने वाली शक्तियों का उदय। सरकार वनांचल में शांति स्थापित करने में नाकाम" *वन-टाइम्स।*

" भेड़िये अल्प-संख्यक हिरन-हांगुल जाति के आस्था स्थल को हड़पने के दर पै" *स्वच्छ पत्रिका।*

"पहले हिरन-हांगुल पशु जाति पर हमला फिर तीन पत्थर से बीच का पत्थर चुराने का षड्यंत्र रचाकर जातिवाद और दंगे कराने के मनसूबे। व्यवस्थापक अल्पसंख्यक पशु समुदाय को संरक्षण देने में नाकाम" पशु-कीर्ति

तीनों पत्रिकाओं ने अपने-अपने संपादकियों में संतोष से काम लेने और सरकार से पूरी ज़िम्मेदारी के साथ हिरन हांगुल जाति को पुर्ण संरक्षण देने की ताकीद की गई। जिन चित्रों को इन पत्रिकाओं ने छापा था उनमें तीन पत्थर में बिखरी पड़ी वस्तुओं के अतिरिक्ति आस्था स्थल को मलमूत्र से अपवित्र करने के दूश्य भी थे। सारे स्थान को पोलीस को सौंप दिया गया था और किसी भी पशु को वहां जाने की मनाही थी। पोलीस ने जो गिरफ्तारियां की थीं उनमें अधिकतर इधर-उधर से पकड़े गए भेड़िये थे और वास्तविक अभियुक्त कोई नहीं। हिटमैन अंडर-वन चला गया था और उसके साथ घूमने-फिरने वाले खूंखार भेड़िये भी पोलसि को ढूंढने पर भी नहीं मिले। तलाशियों और गिरफ्तारियों के विरुद्ध भेड़ियों ने अपना आंदोलन और तेज़ किया। रोज़ हड़ताल। दुकानें बंद। गाड़ियों का आना जाना बंद। गली कोचों में घूमना-फिरना भी खतरे से खाली न था। केवल हिरन-हांगुल अपने वन-छोर में सभी मिलते थे, मौन जुलूस में शामिल होकर सुनिश्चित स्थान मे ही फेरी लगा कर अपने में ही सांत्वना पैदा कर रहे थे कि उन्होंने विरोध प्रकट किया है। समाचार पत्रों ने उनके विरोध का कोई समाचार नहीं छापा। इसके विपरीत वन-प्रमुख के उस कथन को सुर्खियों में स्थान मिला कि तीन पत्थर स्थान पूरी डेढ़ सदी से विवादास्पद स्थान रहा है। हांगुल-हिरन, भेड़िये और सियार भी इस स्थान पर अपना हक जता रहे हैं। इस तरह हिरन हांगुल समुदाय पर मायूसी छा गई। तीन पत्थर प्रबंधक कमेटी के सदस्यों ने तीन पत्थर का सारा इतिहास छान मारा और कई पत्र-पत्रकारों को प्रतिलिपियां दी गईं। जिसके नतीजे में भेड़ियों ने ज़ोरदार धमकियों का सहारा लिया। राह चलते किसी भी हांगुल-हिरन को इन धमकियों को सुनना पड़ता था।

स्थिति से निपटने के लिए बुद्धिजीवी के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल वनपाल से मिला जिसे एक ज्ञापन भी दिया गया। ज्ञापन में तीन पत्थर का इतिहास, कब्ज़ा और भूमि के स्वामित्व के कागज़ात भी दिखाए गए। तीन पत्थरों का महत्व भी समझाया गया। हांगुल हिरन जाति की यह मान्यता थी कि तीन पत्थर रचयिता, पालक और संहारक के प्रतीक रूप में पांच हज़ार वर्षों से माने जाते हैं और उन पर जाति की आस्था है। अतः पुरातन आस्था स्थान होने के नाते इस पर संपूर्ण कब्ज़ा हिरन-हांगुल जाति का रहा है, रहेगा चाहे संपूर्ण जाति को इस स्थान के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े। वन पाल से मिलने के बाद संवाददाता सम्मेलन बुलाया गया और अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया।

दूसरे दिन स्वच्छ पत्रिका ने लिखा थाः "पुरातन काल से तीन पत्थर हिरन-हांगुल जाति का पूजा स्थल रहा है। पर सरकार मानने को तैयार नहीं। विवादाग्रस्त स्थल घोषित, पोलीस का पहरा बिठाया गया।" हिरन हांगुल जाति में मायूसी छा गई पर भेड़ियों ने उत्सव मनाया। आतिशबाज़ियां छोड़ी। उत्सव में इतना जोश जतलाया गया कि खेल-खेल में ही तीन युवा भेड़ियों को गहरी चोटें लग जाने से मृत्यु हो गई। और एक दिन दुलर्भ गति कृशकाय को बीच सड़क पर दिन दहाड़े किसी भेड़िये ने गोलियां दाग कर छलनी कर दिया। वह उसी स्थान पर मर गया और उसका मुंह एक उल्टे इशतिहार से ढांपा गया जिस पर लिखा था, "जो इस लाश को उठाएगा, नोचेगा या दफन-कफन करेगा उसके साथ भी ऐसा ही सलूक किया जाएगा।"

☆☆☆

चालाकी और राजनैतिक दलाली से जितना भी माल-मुत्ता और धन सियार और गीदड़ बना सकते थे उससे उन्होंने बड़ी ही सावधानी के साथ अपने लिए सरोवर के किनारे कोठियां बनवा ली थी। उन दोनों कोठियों को व्यवस्थापकों ने पर्यटकों के लिए किराए पर लिया था। किराया उन दोनों को तो मिलता रहा पर रहने के लिए सरकार ने उनकी व्यवस्था सुरक्षित स्थान पर करवा दी थी। उनकी छोड़ी हुई कन्दराओं में अनेक सगे सबंधी रहने आए थे जो उनका गुणगान करते नहीं थकते थे। दिन को वे सियाग जमात के कार्यालय में और सुबह-शाम जंगल ठेकेदारों, होटल में मालिकों, सरपंचों, विकास योजना के अधिकारियों,

वकीलों, कुछेक प्राध्यापकों, नेताओं और संवाददाताओं को गुप्त रूप से पीछा भी करते रहते थे। इसलिए जिस भी सामाजिक या राजनैतिक घटना के घटित होने की आशंका रहती थी वे पहले ही सूंघ लेते थे और जहां तक संभव होता था उससे भी अपना लाभ कमा लेते थे। वनांचल में कई पशु उनकी इन चालों से परिचित हो गए थे पर रूपैया खर्च करते रहने से वे उन सबका मुंह बंद कराते थे। सियाग-जमात में भी वे अपने चमचों की संख्या सदस्यों के रूप में बढ़ाते जाते थे और व्यवस्था के किसी अघोषित फंड से उनको मासिक महीना मिलता रहता था। कोई भी हंगामा, गुप्त कार्य या किसी की भी मारपीट करवाने के काम, यहीं महीना पाने वाले पशु आते थे जिन्हें वनांचल भाषा में 'चम' कहा जाता था। व्यवस्थापकों ने कभी एक चम को दूसरे चम की पहचान नहीं करवाई थी केवल इस गुप्त काम का पता सियाग जमात के सियार और गीदड़ को मालूम था। हड़ताल करवाने, जलसा जलूस और नारेबाजी के काम आने वाले चम दफ्तरों से काम करवाने पर दूसरों से अपना मावज़ा भी प्राप्त करते थे। कुछेक चम ऐसे कार्यों के लिए पारंगत माने जाते थे। इसीलिए 'जम' कहलाते थे। जम में नेतागिरी और बातचीत करने का सलीका होता था पर चम झगड़ालू टाईप हुआ करते थे। चम-जम अधिकतर सियार और लोमड़ियों की जाति के हुआ करते थे। केवल जिस दफ्तर से उन्हें महीना मिलता था उस दफ्तर में नाज़िर एक बूढ़ा हांगुल किसी और काम में दखल नहीं देता था। चम और जम दोनों उसे 'खरचम' कहते थे क्योंकि केवल वह जानता था कि कितना खरचता है और कितने का हिसाब रखता है। खरचम जानता था कि चम और जम की संख्यां बढ़ने से किसी भी समय कोई अनहोनी घटना घट सकती है और इन पशुओं पर भरोसा नहीं किया जाता था। खरचम ही देर गए तक सियाग जमात का हिसाब किताब देखता था। यह सारा काम वह अपनी निपुणता और तजुरबे के आधार पर करता था।

सुबह अपने काम पर जाने से पहले खरचम तीन पत्थर के इर्द गिर्द तीन चक्कर लगाया करता था पर जब तीन पत्थर से एक पत्थर गायब हो गया उसने अपने हांगुल हिरन जाति के वनछोर से बाहर आना ही छोड़ दिया। क्योंकि यह बात आग की तरह फैल चुकी थी कि तीन पत्थरों में से जो एक पत्थर चुराया गया वह चम या जम जमातियों का काम है। उसका मन टूट गया था। वह समझता था कि कोई अशुभ होना निश्चित है। वैसे भी सभी हांगुल हिरन शंकित और भयभीत हो गए थे। उन सबों ने विद्रोह करने की सोची थी पर अहिंसक

तरीके से ही। इसलिए रोज़ मध्यांह समय के बाद हिरन हांगुल पशु समुदाय का मौन जलूस पशुआंचल से डेंजर गली तक जाकर लौट आता था। कृशकाय की हत्या से वातावरण में और भी तनाव बढ़ गया था। कुछेक समाचार पत्रों में यह खबर भी आई थी कि कृशकाय की हत्या कालू भेड़िये के किसी पिछलग्गू ने की होगी पर व्यस्थापक चुप थे। पुलिस की इस दलील से कि जिस बंदूक की गोली से कृशकाय की हत्या की गई थी वह विदेशी बंदूक की गोली थी, सनसनी फैल गई थी। इससे इस बात की भी पुष्टि होती थी जिसके कारण एक हांगुल युवा गुप्तचर को व्यवस्थापकों ने निलम्बित किया था जिसने लगातार छः महीनों तक अपनी डायरी में यह लिखा था कि वनांचल के युवा भेड़िये सीमा पार कर खतरनाक हथियार लेकर लौट रहे हैं और वनांचल में इन शस्त्रों का जमाव किसी भी विस्फोटक स्थिति का कारण हो सकता है। व्यवस्थापकों ने इस युवा हांगुल को झूठी रपट लिखने पर निलंबित किया था और वह अपने सजातीय हांगुल हिरन जाति को इस तथ्य से वाकिफ कराता था पर कोई उसकी बात को सही नहीं मानता था। अचानक उसके निलंबन का हुकुम वापस ले लिया गया और उसे बहाल किया गया पर साथ ही उसका तबादला भी किया गया। अब हालात अव्यवस्था ही दर्शा रहे थे।

सियाग जमात के कार्यालय पर रोज़-ब-रोज़ चम और जम कार्यकर्ताओं का आना जाना बढ़ता जा रहा था। कार्यालय पर कपड़े के बने तोरन, ड्योडियां, डंडियां और काली झंडियों के ढेर बनवाए गए थे पर कभी किसी ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि आखिर यह सब क्यों और किसके लिए बनाई जा रही हैं।

एक दिन हांगुल-हिरन जाति ने अपना मौन छोड़ कर नारे लगाने आरंभ किए और उसी दिन वानरों में भी न जाने कहां से जोश आ गया और वह भी उनके जलूस में सम्मिलित हो गए। इस हंगामे का फायदा उठाते हुए युवा भेड़िये भी न जाने किस गली से आकर जलूस में मिलते गए। सब अपने अपने नारे लगा रहे थे। हांगुल-हिरन यह नारा लगा रहे थे, "कातिल को पेश करो।" और "आस्था का सहारा है- तीन पत्थर हमारा है" और "पत्थर को पेश करो"। वानरों का नारा था, "वानरी को रिहा करो मुलज़िम को पेश करो"। भेड़िये छातियां पीट-पीट कर यह नारा बुलंद कर रहे थे, "कालू को पेश करो" और "कालू को छुपाने वाली सरकार- नहीं दरकार नहीं दरकार।" जब जलूस डेंजर गली की ओर

बढ़ रहा था तो कुछेक रीछ सूफी-मिज़ाज का धुआँ पीकर आ रहे थे तो वह भी जलूस के साथ हो लिए। जोश में आकर वह भी नारे लगाने लगे, "सांझ सवेरे गुफा किनारे-गांजे का सहारा है।" दुकानदार और अन्य दर्शक इस नारे को सुन कर और रीछों की चाल को देखकर हंसते जाते थे। आखिर हर विद्रोह और अहतिजाज के प्रदर्शन में हास्य की पुट रहती है। सियाग जमात के कार्यालय से कई चम और जम हाथों में छोटी-छोटी झंडियां लेकर जलूस में शामिल हो गए। उनका नारा था, "किसने किया उनका सफाया-गधा जो कहलाता था।" और "गधों को पेश करो।" इस तरह जलूस का मुख्य नारा जो सभी की जिह्वा पर था "पेश करो" ही था। वनांचल के कई पशुओं के कुछ न कुछ खो जाने के लिए यह सारा हंगामा सारे विश्व में चर्चा का विषय बन गया। इसलिए प्रेस के संवाददाता अपने कंधों पर वीडियो कैमरे लेकर इस जलूस की फोटोग्राफी कर रहे थे। केवल बुद्धिजीवी हांगुल जलूस के साथ खामोश खामोश चल रहा था। दो हांगुल जिन्होंने पंखे साथ रखे थे उसे पंखा भी झुला रहे थे। संवाददाता यह समझ रहे थे कि इस सारे जलूस का यदि नेता है तो वह बुद्धिजीवी हांगुल हैं। इसलिए कैमरे उसका फोटो बे-खटके ले रहे थे। खरचम हांगुल सभी हांगुल हिरनों के पीछे था जिसके पीछे चम और जम अपने काले झंडे ऊंचे ऊंचे फिरा कर यह नारा भी लगा रहे थे, "चम जम खरचम-ऊंचा काला परचम।"

जब जलूस डेंजर गली के आगे चौक की ओर बढ़ रहा था तो सामने पुलिस ने दीवार की तरह खड़े रह कर रास्ता रोक लिया और भोंपो से पीछे हटने का एलान किया। सारे हिरन हांगुल भूमि पर बैठ गए और वानर अपनी-अपनी पिछली टांगों पर खड़े रह कर नारे दे रहे थे। सियार, चम और जम काली झंडियां हवा में फिरा कर नारे बुलंद कर रहे थे, भेड़िये वौं वौं की भयावह ध्वनि के साथ नारे लगा रहे थे। सभी पशु जो भी नारा लगा रहे थे उत्तर में "पेश करो पेश करो" ही सुनाई देता था। युवा हांगुल ने एक विदेशी संवाददाता को गौर से देखा और उसके पास चला गया। कुछ बातें आपस में करने के बाद उस स्थल से इकट्ठे चल दिए। नारों के तुमल नाद में कहीं से पत्थर फेंके गए जो पुलिस की ओर ज़्यादा और पशुओं की ओर कम फेंके गए। देखते ही देखते पुलिस ने पोज़िशन संभाली और खटक खटक ध्वनि आकाश में गूंज गई। अश्रु गैस के गोले फेंके गए। खलबल मच गई। हिरन-हांगुल घटना स्थल से भाग खड़े हुए और वानर दुकानों और मकानों में, खिड़कियों से दरवाज़ों से और दीवारों से फुदके और

सबसे बड़े मेवा फरोश का सारा मेवा उठाकर भाग गए। मेवा चट कर गए और टोकरों से अपना शरीर ढांप कर चलते बने। गली के घरवालों ने अपने मकानों की खिड़कियां पहले ही बंद की थी इसलिए आज उनको नुकसान नहीं उठाना पड़ा। कुछ पशु आपस में ही झगड़ बैठे थे। सियार सात सितारा होटल के मालिक के घर पर ज़ख्मी हालत पर पहुंचा था छुपने के लिए, और गीदड़ जू भी घायल होकर सियाग जमात के कार्यालय पर बेसुद पड़ा पाया गया। कुछेक संवाददाता भागते हुए बुद्धिजीवी हांगुल के पीछे दौड़े और उसका घेराव करके उससे सवाल पर सवाल करते गए। आखिर बुद्धिजीवी ने मौन तोड़ कर कहा, "हमें इस आंदोलन के लिए विवश किया गया। हमारे प्राचीन आस्था स्थल को अपवित्र किया गया और तीन पत्थर की प्राचीनतम प्रतिमा स्वरूप बीच का पत्थर चुरवाकर हमारी आस्था को ठेस पहुंचाई गई। इस पर व्यवस्थापकों ने उस स्थल को विवादास्पद घोषित करके हमारी भावनाओं को ठेस ही नहीं पहंचाई अपितु उन सारे हज़ारों वर्षों से सुरक्षित दस्तावेज़ों को मान्य मानने से भी नकारा है जिससे उनका पक्षपाती रवैया साफ ज़ाहिर होता है। हमारे शांतिपूर्ण जलसे जलूस को भी वही व्यवस्थापक अपने चमचों को बीच में छोड़ कर हिंसा का रास्ता अपना कर हमें बदनाम कर रहे हैं। लेकिन हम झुकेंगे नहीं। हमारा शांतिपूर्ण आंदोलन जारी रहेगा। एक कुशल वकील की दिन दहाड़े गोली मार कर सड़क पर हत्या कर दी गई और पुलसि मुलज़िम को पकड़ने में नाकाम हो गई है। अब यहां कानून और व्यवस्था नाम की चीज़ ही नहीं रही।" इतने में ही हिरन हांगुल आकर बुद्धिजीवी को घेराव करके अपने साथ ले गए। डेंजर गली में देर गए तक चम और जम जमातियों के साथ भेड़िये हिमायती बन कर पुलिस के साथ पथराव की आंख मचोली खेल रहे थे। जिसके कारण पुलिस के कई कर्मी आहत हो गए थे इसलिए गोली भी चलानी पड़ी थी। तब कहीं वातावरण शांत हो गया था।

उधर युवा हांगुल विदेशी संवाददाता को तीन पत्थर ले गया जहां वह उसको पत्थरों का प्रतीकात्मक महत्व और प्राचीन मान्यताओं के बारे में बता रहा था। चूंकि पुलिस डेंजर गली चौक के आस पास काफी संख्या में बुलाई गई थी इसलिए तीन पत्थर पर एकमेव पुलिस कर्मी को रखा गया था वह भी अपनी ड्यूटी कम और मटरगश्ती अधिक कर रहा था। विदेशी ने उसे एक विदेशी सिग्रेट पीने को दी और वह मस्त हो गया। सियार और भेड़िये यह सब देख रहे थे अतः गीदड़ गायकी और वौं वौं की ध्वनि से उन्होंने आकाश सर पर उठाया। विदेशी

का घेराव करके उन्होंने उसका वीडियो कैमरा छीन लिया और युवा हांगुल को छीना झपटी में घायल कर दिया। भेड़िये कैमरा लेकर भाग गए और सियार ऊं ऊं की ऊंग से पुलिस कर्मी को कम्पायमान कर रहे थे। जब पुलिस कर्मी ने अपना डंडा घुमाना शुरू किया तो सियार भी भाग खड़े हुए। बेचारा युवा हांगुल लड़खड़ाता हुआ वापस हांगुल हिरन अंचल लौट आया।

भेड़ियों ने एक गुप्त स्थान में जाकर कैमरा से वीडियो रील निकाल कर उन सब हिरन हांगुल, सियार-गीदड़, रीछ, वानर और अन्य पशु जातीय के चुने-चुने सरगनों को भली-भांति देख लिया और खूंखार भेड़ियों को उनके नाम और पता- ठिकानों से अवगत कराया गया। यह काम बड़ी ही सर्तकता और सावधानी के साथ किया गया। जब विदेशी संवाददाता ने उसके साथ हुए अव्यवहार और कैमरा छीनने की रपट कराई और तहकीकात शुरू हुई तो तीन पत्थर पर पहरा देने वाले एकमेव सिपाही ने कहा कि तीन पत्थर पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। उसने विदेशी संवाददाता को पहचानने से भी इन्कार किया।

समाचार पत्रों में शांतिपूर्ण जलूस पर अश्रुगैस और गोलियां चलाने की ज़िम्मेवार पुलिस को ठहराया गया था। गोली लगने से एक चम सख्त आहत हुआ था और उसे हस्पताल में देखने मिलने जाने वालों का तांता बना रहता था। गीदड़जू वन-प्रमुख की सरकारी कोठी पर एक दिन और एक रात गुज़ार कर गीदड़ी के पास पहुंचा। सियार सात सितारा होटल के मालिक के घर में सात दिन तक रहा। इन दिनों में और भी घटनाएं घटीं। बुद्धिजीवियों के बयान को 'पशु-कीर्ति' ने पूरा पूरा छाप लिया था जिससे सियार-गीदड़ जाति और भेड़िये नाराज़ हो गए। सियार-गीदड़ तीन पत्थर पर रोज़ सभाएं करने लगे और विवादास्पद स्थान को दो सदियों से अपने अधिकार का क्षेत्र जतलाते थे। पुलिस उनको वहां से भगाने के कई यत्न कर चुकी और रोज़ उनके एकत्रित होते ही हल्के लाठी चार्ज के साथ पीछा करती थी। उस डर से हिरन हांगुल वहां से गुज़रते भी नहीं थे। आ बैल मुझे मार वाली बात थी। समाचार पत्र रोज़ हंगामा भरे समाचारों से भरा रहता था अतः उनकी बिक्री भी बढ़ गई।

एक दिन महीना बांटने के हेतु खरमच नौकरी पर गया। वह जिस भी चम अथवा जम को महीना देता जाता था उससे यह मालूम करने को कहता था कि तीन पत्थर से बीच का पत्थर उठा कर ले जाने वाले का सुराग लगा कर उसे बता दें। सभी यह काम करने का आश्वासन देते जाते थे जिससे

खरचम को पूरा विश्वास हो गया कि कोई न कोई उसका राज़दार बन कर काम कर जाएगा। उसी रोज़ वह हस्पताल भी गया ज़ख्मी चम का हाल पूछने और उसे महीना देने। यूं सभी चम और जम खरमच का आदर करते थे, क्योंकि वही उनका धन-कुबेर था।

हालात और समाचार पत्रों में छपे संपादकीयों की वजह से वन-प्रमुख ने हिरन हांगुल जाति के नुमाईदों से मिलने का न्यौता भेजा। बुद्धिजीवी की अध्यक्षता में युवा हांगुल और अन्य हिरन डेलिगेशन के रूप में वन-प्रमुख से मिलने के लिए, प्रपत्र साथ लेकर, और तीन पत्थर के अधिकार के भूमि मिलकियत के कागज़ात लेकर मिलने वाले थे। उन्होंने आपस में यह निश्चित किया था कि डेलिगेशन के सदस्य तीन पत्थर पर मिलेंगे और वहां से यथा समय वन-प्रमुख की कोठी पर जाऐंगे। जब बुद्धिजीवी हांगुल घर से तीन पत्थर की ओर जाने के लिए गली के बाहर आए तो हिटमैन भेड़िये ने वों वों की आवाज़ में उसका नमन मिया और गोली दाग दी..... शूं .....शूं....शूं... हुआ। गोली की खबर फैल गई और हांगुल हिरन और अन्य सियार गीदड़ छाती पीट रोदन करते रहे।

☆☆☆

एक चालाक राजनैतिक कार्यकर्त्ता ने अंसदिग्ध प्रमाणपत्रों के बिना पर एक अच्छी नौकरी हासिल की थी। उसने खज़ाने और बैंकों की झूठी मोहरें भी बनाई थीं। नौकरी के दौरान उसने कम समय में ही कई घपले करवाये पर कोई कुछ भी भांप न सका। काफी रूपैया पैसा ऐंठ कर नौकरी छोड़ दी और दफ्तर को आग लगवा दी। सारा रिकार्ड जल गया। यह सारे कार्य उसने सावधानी के साथ किए और राज्य के अंतिम छोर पर एक ऐसे स्थल पर राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे एक कनाल भूमि खरीद कर ढाबा चलाना शुरू किया। ठीक ढाबे के सामने एक छोटी-सी पहाड़ी थी जिसे लोग ठीकरी कहते थे जिस पर कोई सौ मीटर की ऊंचाई पर एक सुडोल-सा पत्थर था जिसे लोग "करामाती पत्थर" कहते थे। हर महीने की 29 तारीख को समीपवर्ती दुकानदार अपनी किसमत अजमाई के लिए इस स्थान को आते थे और प्रशाद के तौर पर फलियां और रेवड़ियां चढ़ाते थे। "करामाती पत्थर" की प्रदक्षिषा कोई नहीं कर सकता था क्योंकि यह बिल्कुल

सड़क की ओर ठीकरी के छोर पर था। फिर भी इसके तीनों ओर पेड़ों पर लाल और बंसती रंग की झंडियां दूर से ही इसकी शोभा बढ़ा रही थीं। ठीक ऐसे स्थल के सामने ढाबा चलाने से आमदनी भी दिन-दुगनी और सुबह शाम चुगनी होनी लगी। हर वर्ष ढाबा की शान बढ़ाने के लिए रंग-रोगन आदि सजावट करा दी जाती थी। एक दिन साइन बोर्ड भी चढ़ाया गया- "आज़ाद ढाबा" जो दो एक महीने के बाद उतार दिया गया। और नया लिखवा कर "करामाती ढाबा" नाम लिखवाया गया। करामाती ढाबा का मालिक एक नौजवान होते-होते आदरणीय व्यक्ति बनने लगा। उसने इसबार अपने ढाबे को कई सिमत बढ़ा लिया था। उसके पास आस-पास के बेरोज़गार आते थे जो खाना परोसने का काम करते थे। ज्यूं ही वह अपने काम में माहिर हो जाते थे तो मालिक उनको निकाल देता था। ढाबे को वसीह करने के लिए पलिंथ को ऊंचा करके उसे मिट्टी से भरवाया गया। इसलिए समीप ही एक गड्ढा बनता गया, जहां से मिट्टी खोदी गई थी।

सारे राजमार्ग पर गत एकाध बरसों से एक नई तबदीली दृष्टिगोचर होने लगी थी जिसका नोटिस सरकार को लेना चाहिए था पर नहीं लिया गया। हर सो दो-सो मीटर के फासले पर पेड़ों पर या दुकानों के साइनबोर्ड के साथ अथवा मकान की खिड़कियों के साथ सब्ज रंग की झंडियां लगाई जाती थीं। ऐसी ही एक सब्ज़ झंडी उस पेड़ के ऊपर भी फरफरा रही थी जहां पर गड्ढा था।

एक दिन ढाबे के साथ ही एक फल की पेटियों से भरा ट्रक उल्ट गया और फल सड़क के किनारे बिखर गए। फल ठेकेदार मौके पर पहुंचा और नुक़सान का अंदाज़ा लगाकर बचे फलों को अपनी मंज़िल पर पहुंचाना चाहता था पर कोई खाली ट्रक वहां नहीं मिलता था। इसलिए रात घिर गए तक ढाबे के पास हर एक उस ट्रक को हाथ दिखाकर रूकवा कर अपनी बात कहता था जो राजधानी की ओर जा रहा था। आखिर एक ट्रक रूक ही गया।

"यदि खाली हो और राजधानी की तरफ जा रहे हो तो मेरा यह सड़क पर पड़ा माल उठा लो।" फल ठेकेदार ने ड्राइवर से कहा।

"बिल्कुल। हमें अपना किराया पूरा मिलना चाहिए और माल उठाने में देर नहीं होनी चाहिए।" ट्रक ड्राइवर ने कहा। किराया एडवांस लेकर माल उठाने के लिए जब ट्रक का फटा खोल दिया गया तो कुत्ता उछल कर कूद पड़ा। वह ढाबे के पिछवाड़े की ओर भाग गया। ट्रक ड्राइवर और अन्य यह देखकर अचंभे में

पड़ गए कि ट्रक में फैले हुए तरपोलीन के नीचे गधे की लाश कहां से आई। बड़े लठ लाकर उन्होंने रात के अंधेरे में ही इस लाश को उस गड्ढे में फेंक दिया जो करामाती ढाबे के साथ था।

"भाई ज़रा अपनी ट्रक को झाड़ू लगाना। गधा लीद न छोड़ गया हो।" फल ठेकेदार ने ट्रक के कंडक्टर से कहा। "वही काम तो करने जा रहा हूं।" उत्तर में कंडेक्टर ने कहा। "वैसे इस समय लगता है, केवल गधे के मुंह से झाग बहती रही है, साला! पर्वत की ऊंचाई में खाली ट्रक में गिरकर मर गया है। यह भी लगता है, इसके मालिक ने हमारा ही तारपोलीन इसके ऊपर फैला दिया था ताकि देखा न जा सके। हरामी! कितना चालाक होगा वह" सफाई के बाद सड़क पर बिखरे फल ट्रक में चढ़ाए गए और ट्रक राजधानी की ओर चल दिया।

सुबह जब ढाबा खोलने के लिए नौकर आए तो उन्हेंने देखा कि स्थानीय कुत्तों ने एक छोटे कद के पहाड़ी कुत्ते को घेराव में ले रखा है जिसने अपना मुंह अपनी दुम में छुपा लिया है और सहम कर बैठा है। सूंघ-सूंघ कर जब उन्हें तसल्ली हुई कि कुत्ता पराया होकर भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है तो वह गड्ढे की ओर गए। एकदम पहाड़ी कुत्ता उन सब पर भौंका। जब ढाबे का मालिक आया और उसने गड्ढे में गधे की लाश देखी जिसे कुत्ते सूंघ रहे थे वह जान गया कि यदि इसे जल्दी ठिकाने नहीं लगाया गया तो सड़ कर दुर्गंध आस-पास फैल जाएगी और कई दिन तक ढाबा बंद करना पड़ेगा। तो उसने मिट्टी का एक ट्रक मांग कर गड्ढे को भरवा दिया। अब गड्ढे की जगह एक ऐसा टीला दिखाई दिया जो किसी की समाधी लगती थी। कुत्ते ने मिट्टी पर पैरों से खुर्च कर अपने बैठने और सोने की जगह बनाई जैसे मरे हुए गधे की रखवाली कर रहा हो। इस तरह ढाबे पर ग्राहकों के आने से पहले ही दुर्गंध के फैल जाने से उसने बचा लिया। दिन पर दिन गुजरते गए।

29 तारीख़ को जब समीपवर्ती दुकानदार और गांव के लोग "करामाती पत्थर" पर मनोती चढ़ाने और माथा टेकने आ रहे थे तो क्या देखते हैं कि सौ मीटर नीचे सड़क के किनारे करामाती ढाबे के साथ किसी की समाधी जैसा लगता टीले के साथ दो-एक झंडियां गाड़ दी गईं हैं। वह आपस में ही बातें करने लगे।

"यह किस बाबा को वहां दफनाया गया है।" एक बुजुर्ग ने कहा।

"ढाबे के मालिक का कोई मर गया होगा।" एक नौजवान बोला।

"लेकिन यह झंडियां और समीप ही एक लाठी और कुत्ता, वह भी पहाड़ी" बुजुर्ग फिर बोला। "ऐसे कुत्ते यहां कहां मिलते हैं। यदि किसी का पालतू है तो वह दूसरी बात है।"

"छोड़ दो जो है सो है।" चलो प्रसाद बांट लो।

कुछ ही दिनों में ढाबा के मालिक ने उन नौकरों को निकाल दिया जिन्होंने गधे की लाश उस गड्ढे में देखी थी क्योंकि उसने भांप लिया था कि लोग समीप ही सड़क पर रूक जाते हैं, विस्मय से देखते हैं और नमन करके चल देते हैं। कोई-कोई तो कुत्ते को रोटी भी फेंक देता है, जिसे ढाबे से ही खरीद लिया जाता है। इस तरह इस स्थान की अहमियत बढ़ने लगी। एक बार श्वेत वस्त्रधारी, लंबी दाढ़ी वालों का गुज़र वहां से हुआ जो थकान मिटाने के लिए ढाबे में चाय-पान के लिए आए। जब उन्होंने देखा कि यह किसी की कबर है और लोग नमन भी करते हैं तो उन्होंने जाने से पहले दो पांच हरे रंग की ऊंची-ऊंची झंडियां चढ़ा दीं और सुगंधित अगरबत्तियों जलाईं। इन्हीं दिनों मालिक की आय बढ़ गई और उसने राजधानी में जाकर पांच लाख का फ्लैट खरीदा। यही नहीं यह बात भी फैल गई कि उसने सुंदर वन में एक बड़ा-सा फलों का बाग भी खरीदा है। इसलिए ढाबा चलाने के लिए एक सजातीय युवक को नौकर रखा, शायद अपने ही घर का आदमी हो, केवल वह जानता था। लोगों में बात फैल गई कि करामाती बाबा की मेहरबानी उस पर है। जब ऐसी बातें फैलने की खबर उसको हुई तो उसने गड्ढे के टीले पर सीमेंट-पत्थर की चुनाई में ईंटों की समाधी बनाई। पक्की समाधी।

समाधी के बारे में और बातें फैलती रहीं जिनके साथ ढाबे में मालिक के धन लाभ की कहानियां भी जुड़ती गईं। अब लोग सप्ताह में एक विशेष दिन खुद आने लगे और हरी और लाल रंग की झंडियां आदि समाधि स्थल के साथ लगाते गए। दिन भर अगरबत्तियां जलती रहतीं और ढाबे के एक छोर पर छोटी-सी नई दुकान भी खुल गई जहां अगरबत्तियां, झंडियां, फुलियां, रेवड़ियां और अन्य सामग्री भी बिकने लगीं। यह दुकान भी ढाबे के मालिक की थी। ढाबे के अन्य छोर पर भी एक और दुकान खोल दी गई जिसे पहले बहुत समय तक

बंद ही रखा और जब भक्तों, समाधि की परिक्रमा करने वालों की संख्या बढ़ने लगी तो उसमें स्त्रीपयोगी वस्तुएं बेची जाने लगीं। जैसे चूड़ियां, साड़ियां, दुपट्टे और पहनने के सूट आदि। जब बड़पन के गुण किसी व्यक्ति में समाते हैं तो वह खुद काम करने का कम और हुकुम चलाने का अभ्यस्त हो जाता है। इसी प्रकार नौकर-चाकरों और हमकलाम होने वालों की संख्या भी बढ़ती जाती है। ऐसा ही ढाबे के मालिक के साथ भी हुआ। एक दिन जब मालिक महीने भर के बाद ढाबा की प्रगति का जायज़ा ले रहा था तो ऐसा ट्रक उसके ढाबे के सामने रूका जिसमें भरे माल को देखकर उसे अचंभा हुआ। ऐसा माल लेकर ट्रक उसने आज ही देखा। उसमें आधा दर्जन मज़दूर भी थे जिनके पास संबल आदि भी थे। ऐसा लगता था जैसे किसी पर्वत शिखर पर शिलायें काटने निकले हों। ट्रक भी काले मारबल की बड़ी-बड़ी शिलाओं से भरा था जो राजधानी की ओर जा रहा था। पूछताछ के बाद मालिक को मालूम हुआ कि यह माल मूर्तियां बनाए जाने के लिए जा रहा है। न जाने उसे क्या विचार आया उसने सभी मज़दूरों को भरपूर खाना खिलाया और रूपया-पैसा भी नहीं लिया। जाने से पहले वापसी पर मालिक के पास एक रात ठहरने का वादा उनसे लिया गया। उसने ट्रक ड्राइवर को विदेशी शराब की बोतल देकर विदा किया। ड्रायवर ने उसे निश्चित रूप से वापसी की तिथि से अवगत कराया। दूसरे दिन सुबह से ही मालिक ठीकरी की ओर कई बार एक टक देखता रहा और सोचता रहा। कुछ-कुछ गंभीर और परेशान भी लगता था। उसने अपने मन की बात किसी से नहीं कही।

निश्चित दिन ट्रक राजधानी से लौटा और उसमें सरिया भरा था और वह सभी मज़दूर जिन्हें एक रात ढाबा पर ठहरने का निमंत्रण दिया गया था। मालिक की आंखों में चमक आई। उसने उनके लिए दावत का प्रबंध करवाया। रात को देर गए, वह उन सबको संबल सहित ठीकरी पर ले गया। हल्की-हल्की बारिश हो रही थी और सड़क पर ट्रेफिक कम से कमतर हो गया था। उन सबको करामाती पत्थर दिखाकर उसे लुढ़काने का आदेश दिया ताकि वह नीचे गिर आए और सड़क के पार सीधे समाधी टीले के साथ स्थित रहे। सब मज़दूरों ने संबल पत्थर के नीचे लगाकर ज़ोर लगाया और आध घंटे के परिश्रम के बाद पत्थर लुढ़क गया और अपने साथ छोटे-मोटे और पत्थरों को लुढ़का कर सड़क पर

आकर लुढ़कता हुआ पार टीले के साथ रूक गया। अब मज़दूरों के साथ मालिक नीचे आया और पत्थर को मक़बरे के साथ ओर सटकर लगावाया और फिर ट्रक ड्रायवर को विदेशी शराब की बोतल और मज़दूरों को उम्र भर चुप रहने के लिए काफी रूपया-पैसा दिया। सुबह होने से पहले ज़ोरों की बारिश हुई, साथ में तेज़ आंधी के झोंके भी आते रहे। समीप के लोगों ने भूचाल के हल्के झटके भी नींद में ही महसूस किए थे। सूर्योदय से पहले ही ट्रक और मज़दूर बारिश में ही अपने गंतव्य की ओर चल दिए।

बारिश थमने के बाद सुबह जब लोगों का आना-जाना शुरू हुआ तो लोगों में बात फैल गई कि " करामाती पत्थर" रात को लुढ़क कर बाबा की समाधी पर आ गिरा है। आस-पास के गांव के सभी लोग आश्चर्यचकित नेत्रों से यह चमत्कार देखने लगे। दिन भर मेला-सा लगा रहा। समाधी पर लाल और हरे रंग की चादरें और झंडे चढ़ाए गए। अगरबत्तियों की सुगंध दिन भर फिज़ा को सुगंधित कर रही थी।

कई दिनों तक सारे इलाके में करामाती पत्थर के समाधिस्थल पर आ गिरने की करामात की खबर फैल गई। यही नहीं लोगों से भरी बसें भी वहां रूकने लगीं अर्थात् जो भी राष्ट्रीय मार्ग से चलता था इस स्थान को कारामाती तीर्थ समझकर यात्रा का लाभ उठाना चाहता था। यह सब देखकर ढाबे के मालिक ने एक बहुत बड़ा और 4 फुट ऊंचा दान पात्र भी सड़क के किनारे रखवाया। राजधानी की ओर जाने वाली हर ट्रक अपनी स्पीड कम करके ड्रायवर लोग दान पात्र में यथाशक्ति रूपया-पैसा डाल देते थे। देखा-देखी में यात्री बसों का भी यही हाल शुरू हुआ। अब यह स्थल "करामाती बाबा की समाधी" के नाम से जाना जाने लगा। करामाती ढाबा का सायन बोर्ड तीसरी बार उतारा गया और नया लिखवाया गया। अब इस का नाम "करामाती बाबा का ढाबा" लिखवाया गया। इस ढाबे की ख्याति खूब बढ़ गई और देश-विदेश के पर्यटक भी चाय-पान के लिए ठहरते थे। ढाबा के मालिक ने ढाबा के आस-पास सड़क पर कई कनाल भूमि और खरीद ली।

जिस दिन करामाती पत्थर लुढ़क कर नीचे आया था उसी रोज़ हर वर्ष मेला लगने लगा। उस रोज ढाबे का मालिक मुफ्त लंगर का भी इंतजाम करता

था। खुद वह वहां नहीं रहता था पर हर महीने अपनी कार में आकर ढावे की आमदनी और दान पात्र को खोल कर रूपया-पैसा इकट्ठा करके ले जाता था। नई खरीदी भूमि पर उसने दुकानों की एक बड़ी लाईन और होटल बनवाया जो कई सालों तक बनता रहा।

करामाती बाबा के मेले की अहमियात इतनी बढ़ गई कि लोगों ने बाबा की जीवनी की मनगढंत जीवनियां लिखीं। कोई कहता था कि बाबा हिमालय की ऊंचाइयों से आया था और खुद ही इस स्थान पर करामाती पत्थर के नीचे समाधिस्थ हो गया था तो कोई उसे बसरा से आया हुआ मानता था। कोई उसे लंबी दाढ़ी वाला फकीर कहता था तो कोई उसे पहुंचा हुआ साधू। राज्य की सांस्कृतिक इकाई कभी-कभार गाने-बजाने और कव्वाली गाने के प्रोग्राम भी करवाती थी। अधिकतर लोग इस स्थान को सूफी संतों की परंपरा के साथ जोड़ते थे। हर वर्ष एक-आध मुशायरा मुनअक़िद करने का आयोजन भी होता था। संक्षेप में यदि कहा जाए तो हर रोज़ करामाती बाबा के ढाबा की रोनक और चहल-पहल सचमुच में एक करामात ही थी। किसी के लिए न सही पर ढाबा के मालिक के लिए अवश्य करामात थी।

☆☆☆

सियाग जमात के अहाते में, जो डेंजर गली के पिछवाड़े में पड़ता था ऊंचे-ऊंचे सफेदों की आड़ में कई सैकड़ों चम और जम जातियों के अलग-अलग झुंडों का जमाव देखकर लगता था कि किसी नेता के सम्मान में होने वाले जलसे की तैयारी हो रही है। रंग-बिरंगी झंडियां उन में बांटी जा रही थीं। कुछेक जम जमाती जो वहां पर उपस्थित थे खामोश सब कुछ देख रहे थे। जैसे उन्हें आंशका थी कि कुछ और ही होने वाला है। इसी समय गीदड़ जू आ गया और सबों ने उसे घेरे में लिया। नेता की भांति वह बोल उठा, 'खबरदार-खबरदार'- "सारे इलाके में खतरे की घंटी बज चुकी है। बुद्धिजीवी हांगुल मारा गया है, वह भी विदेशी गोली से; और अपनी ही गली के बाहर।"

"उसकी लाश?" किसी चम ने प्रश्न पूछा।

"पोस्टमाटम के बाद कुछ देर में ही उसके घर पहुंच रही है," गीदड़जू ने कहा।

"बड़ा अनर्थ हुआ।" एक चम ने कहा।

"वह तो अच्छे परामर्श देता था। पशु जाति की बिरादरी की बात कहता रहता था। अहिंसा पर ज़ोर देता था।" इस बार दूसरा जम बोला उठा।

"अब हमें क्या करना चाहिए?" किसी ने बे-सबर होकर कहा।

"हमें सतर्क रहना चाहिए। आज बुद्धिजीवी हांगुल मारा गया तो कल कोई गीदड़ सियार भी मारा जाएगा।" गीदड़जू ने नेता की भांति कहा। इसलिए हमें उस शोक सभा में सम्मिलति होना चाहिए जो सभी हांगुल हिरन जाति वाले कर रहे हैं।

इतने में ही दौड़ता हुआ एक चम अहाते के अंदर आ कर चिल्लाया, "हांगुल-हिरन जाति का मातमी जलूस डेंजर गली की ओर आ रहा है। मारे गए बुद्धिजीवी का शव उठाए हुए।" बस सभी चम गीदड़जू के साथ अहाते से बाहर आ गए। केवल कुछेक जम एक दायरे में बैठ कर आपस में मंत्रणा करने लगे। "बहुत गलत हुआ जो बुद्धिजीवी मारा गया। हम सब कभी-कभी उससे मिलकर सलाह मशवरा करते थे। बिचारा ईमानदारी के साथ मशवरा देता था।" एक जम कह गया।

"आतंक शुरू हो गया। क्यों समझ में नहीं आ रहा है, भाई।" दूसरे जम ने उत्तेजित स्वर में कहा। "यदि बढ़ गया और नियंत्रित न हुआ तो हमारी रोज़ी रोटी भी मारी जाएगी। जूठन भी खाने को कहीं नहीं मिलेगी।" यह वाक्य उसने कहे जिसे जम-शाह कहते थे।

"हां, पहले कृश-काय मारा गया और अब बुद्धिजीवी। जम-शाह ठीक कहता है आतंकवाद शुरू हो गया। बचाव की बातें सोचो।" छोटे कद के जम ने कहा।

इतने में ही मातमी जलूस के नारे सुनाई दिए और सभी जम उठ खड़े हो गए और अहाते से बाहर डेंजर गली की ओर चल दिये।

"साज़िश को नंगा करो- कातिल को पेश करो" युवा हांगुल नारे लगा लगा कर हिरनों के बीच बुद्धिजीवी की लाश कंधों पर उठाए धीमी गति से चल

रहे थे। सियार गीदड़ भी इस मातमी जलूस के साथ थे। चम भी कभी-कभी दबे होंठों यह नारा लगा कर चलते थे, "कत्ल-गाह न बन पाए, स्वर्ग समान वनांचल।"

युवा हिरनों ने भी अलग से यह नारा शुरू किया, "निकम्मी सरकार को बरखास्त करो, बरखास्त करो।" यह नारा सुनते ही गीदड़जू जलूस से बाहर हो गया और कई पुलिस कर्मी सतर्क हो कर आशिक मिज़ाज हिरन को घेराव मे ले रहे थे क्योंकि वह ही सरकार के खिलाफ नारे अधिक बुलंद कर रहा था। आशंका थी कि कहीं से कोई अप्रिय घटना न घटे। डेंजर गली को छोड़ने के बाद जब मातमी जलूस शव का अंतिम संस्कार करने हेतु घाट की ओर बढ़ रहा था तो पेड़ों की ओट से युवा भेड़िए निकल आए और जलूस पर पथराव करने लगे। पुलिस सर्तक हो गई पर अधिक बल प्रयोग न कर सकी। कुछेक हिरन हांगुल घायल हो गए और बचाव में इधर-उधर भागने लगे। शव को अपने कंधों से उतार कर भूमि पर रख कर हांगुल सींग मारने के लिए युवा भेड़ियों पर आक्रमण करने लगे। पुलिस के बीच-बचाव करने के बाद हालात संभल गए और शव का अंतिम संस्कार बड़ी ही तनावपूर्ण वातावरण में किया गया। विसर्जन से पहले एक हांगुल ने जीव, जगत और परमात्मा पर दार्शिनिक भाषण दिया। बुद्धिजीवी का जय जयकार करते हुए हांगुल हिरन अपने वन छोर को लौटे तो वनांचल में वातावरण अशांत था। सियार-गीदड़ और शिशु भेड़ियों के बीच गाली गलोच से बढ़ते-बढ़ते धमकियों पर नौबत आ पहुंची थी। बीच-बचाव करने के लिए कुछेक युवा हिरन हांगुल आ गए और कहीं से आकाश में गोलियां चलने लगीं। भयभीत होकर सभी भागने लगे। इसी दौरान जोशीला हिरन पेड़ों पर और दीवारों पर बड़े-बड़े पोस्टर चिपकाता देखा गया। शाम होते होते ही सब कुछ शांत दीखने लगा। समाचार पत्र, विशेषकर 'पशुकीर्ति' में बुद्धिजीवी की हत्या और आतंकवाद को लेकर सरकार को चेताया गया था। सरकार की बरखास्तगी की मांग भी थी। कालू भेड़िए को पकड़वाने में नाकाम सरकार पर तीव्र प्रहार किए गए थे इसलिए इस पत्र की मांग बढ़ गई और सभी पशु मासूमियत के आंसू बहा रहे थे, "अब वन आंचल में शांति से रहना और दिन गुज़ारी कठिन है।"

रात भर पुलिस की गश्त जारी रही और भोंपू पर एलान होता रहा, "सारे वन आंचल और शहर में धारा 144 लगा दी गई है। जलसे जलूस पर

पाबंदी।" प्रत्येक जन-मानस और पशु को सावधान किया गया।

"लगता है, सरकार हरकत में आ गई।" एक बूढ़े हांगुल ने छोटे हांगुल से कहा।

"क्या आपने सामने वाली दीवार पर चिपकाया गया पोस्टर पढ़ा।" छोटे हांगुल ने पूछा।

"नहीं, क्या लिखा है इसमें।"

"लिखा है, कालू भेड़िए ने सरहद पार से विदेशी हथियार और आंतकवाद में प्रशिक्षण प्राप्त युवा भेड़िए वन आंचल में अशांति और आतंक फैलाने के लिए भेजे हैं। वह हिरन हांगुल जाति के पशुओं का वनांचल में रहना मुश्किल कर देंगे। सरहद पार के आकाओं को खुश करने की खातिर वे युवा भेड़ियों को घरों से निकाल कर लालच देकर ऊंची पहाड़ियों पर हथियार चलाने का प्रशिक्षण दे रहे हैं। स्थानिय पुलिस बल उनको पकड़वाने में पूरी तरह नाकाम रही है। आखिर में लिखा है....." छोटा हांगुल चुप हो गया।

"क्या लिखा है। बोलना बदं क्यों किया।" बूढ़े हांगुल ने कहा।

"हांगुल जात जानना चाहती है कि उन्हें आतंक का निशाना क्यों बनाया जाता है, क्या वह वनांचल के वासी नहीं?" यह कह कर छोटा हांगुल चुप हो गया।

"ऐसा लिखा है पोस्टर में! अच्छा नहीं हुआ। इन हिंसक पशुओं को व्यर्थ ही भड़काया जा रहा है। कुछ अशुभ पुनः देखना होगा," बूढ़ा हांगुल सचमुच में चिंतित हो गया।

इतने में गीदड़ जू के कई साथी छलांगे लगाते हुए आए और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, "पुलिस गीदड़ जू को उठा कर ले गई।" यह सुन कर सारे पशु अंचल में सनसनी फैल गई। सियार दौड़ता-दौड़ता वन प्रमुख के सरकारी निवास पर पहुंचा। सियार गीदड़ गलियों में जमा हो गए। सड़कें वीरान लगती थीं। एक जीप में पुलिस कर्मी आए और खरचम हांगुल को ढूंढने लगे पर वह डेंजर गली में ही कहीं रूका पड़ा था। इस तलाशी के कारण हांगुल हिरन चिंतित होने लगे। इस सारी गड़बड़ी में खरचम का क्या दोष जबकि वह किसी आंदोलन में शामिल नहीं होता, हां चम और जम जमातियों में माहाना ज़रूर बांटता है।

दरअसल बात यह थी कि बुद्धिजीवी के मारे जाने से हालात खराब होने

की आशंका के कारण कई जम साथियों ने मिलकर खरचम से पेशगी कुछ रकम मांगी थी इसलिए वह बैंक से रूपया लेने गया था, वापसी पर देर होने के कारण वह पशुआंचल नहीं लौट आया था। बल्कि किसी दोस्त के घर पर ठहरा था। टेलिफोन पर पुलिस को खरचम के ठिकाने की इत्तला मिल गई और उसे वहीं से उठा कर ले गए। दरअसल पुलिस किसी गल्तफहमी की शिकार थी। खरचम से कोई गुप्त दस्तावेज पढ़वाने और दस्तखत पहचानने के लिए पुलिस तलाश कर रही थी। जब खरचम को पुलिस अपने विशेष हेडक्वाटर पर ले गई तो उसके सामने एक पोस्टर की अबारत पढ़ने को दी गई और शिनाख्त करनी थी कि "लेख किसका हो सकता है।" खरचम पढ़ने लगे, "सारे वन आंचल में पशु राज कायम करने के लिए यह ज़रूरी है कि राजधानी के जासूस हिरन और हांगुल वनांचल छोड़ कर चले जाएं। नहीं तो उनको अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। मांसखोर पशुओं में इन जासूसी पशुओं के लिए कोई स्थान नहीं। यदि सरकार किसी भी हिरन हांगुल को सरकारी नौकरी पर नियुक्त करती है तो दफ्तरों को बम से उड़ाया जाएगा। इजरा-करदाः भेड़िया इजतिमा"। पढ़ने के बाद खरचम सोच में पड़ गया और बहुत ज़ोर लगाने पर भी किस की हस्तलिपि है नहीं पहचान सका, "यह किसी चम या जम की हस्तलिपि नहीं है। मैं इसको पहचान करने में असमर्थ हूं।" खरचम से अंदाज़ा लगाने को कहा गया कि यह किस पशु जात ने लिखवाया होगा तो उसने कहा, "जब से तीन पत्थर से बीच का पत्थर चुराकर उठा लिया गया है तब से वातावरण अशांत है। यह सब कौन करवा रहा है, नहीं कह सकता, रहस्य सा लगता है पर एक बात जो सभी चम और जम कहते रहते हैं वह यह है कि हिटमैन भेड़िया आजकल बड़ा खूंखार दीखता है और युवा भेड़ियों को वरगला कर न जाने कहां छिपा कर रखता है। यह केवल संदेह है। सच क्या है कौन जाने।"

खरचम की बातें सुनने के बाद पुलिस कर्मी अलग से आपस में कुछ खुसर-पुसर करने लगे और फिर खरचम को कुछेक सिपाही साथ देकर वनांचल की ओर रवाना किया। पुलिस जीप में बैठकर और रूपयों के बैग को संभालते हुए खरचम ने अपने को बाइज़्ज़त बरी होते ही समझा। झटके से जीप चल पड़ी और जब हिरन हांगुल गली की ओर मुड़ ही रही थी तो किसी ने जीप पर हथगोला फेंका और धमाका हुआ। खरचम बुरी तरह आहत हुआ था, ड्राईवर उछल कर जीप से बाहर आ गिरा था और दो सिपाही अर्ध आहत थे। पूरी सावधानी के साथ घायलों को हस्पताल पहुंचाया गया। सारे वनांचल में विस्फोट

से आतंक फैल गया। हिरनिया छुप गईं और हांगुल वानर, सियार-गीदड़ और सूअर चिंतित मुंह आंसू बहाते रहे। हस्पताल पहुंचते ही खरचम को डाक्टरों ने "मरा हुआ लाया गया" घोषित किया और अन्य पुलिस कर्मियों के घावों की मरहम पट्टी की। ड्राईवर अपनी दाढ़ी नोचता रहा, क्योंकि वह धमाके से भयभीत हुआ था और बार-बार अपने दोनों हाथ आकाश की ओर उठा कर खुदा का शुक्रिया अदा करता था कि वह बच गया।

पुलिस जीप पूरी तरह खराब हो गई थी और खरचम का रूपयों भरा बैग पुलिस तलाश करने लगी। शायद धमाके के ज़ोर से वह उछल कर कहीं दूर जा गिरा था। और कोई उठा कर ले गया था। इसलिए सबसे पहले गीदड़-सियार गली में घर-घर और कंदरा-कंदरा तलाशी ले ली गई जिससे सारे के सारे सियार गीदड़ क्षुब्ध हो गए। खरचम के मारे जाने से पहले ही वनांचल में स्थिति तनावपूर्ण थी इस तलाशी से वातावरण और भी भड़क उठा।

दूसरे दिन खरचम की लाश को कंधों पर उठाए मातमी जलूस न केवल सारे वनांचल में फिरा बल्कि शहर की मुख्य सड़कों से भी गुज़रा। पुलिस भी काफी तैनात थी। मातमी जलूस के साथ भेड़ियों को छोड़, हिरन-हांगुल जाति के अतिरिक्त वानर, रीछ, गीदड़-सियार और कुछेक सूअर भी थे। हिरन-हांगुल मायूस थे फिर भी नारा लगा रहे थे, "यह तमाशा नहीं है, यह मातमदारी है।" रीछ नारा लगा रहे थे, "गोली करेगी सब बरबाद-सूफीवाद सूफीवाद।" वानर अपनी पिछली टांगों पर खड़े रह कर नारा बुलंद करते थे और जवाब देने के बाद चोपाया चलते थे। उनका नारा था, "सरकारी आतंकवाद की-पुलिस भागीदारी है।" सूअर ऊं ऊं कर ऊंग के साथ नारा मिलाते हुए चलते थे, "जो रौंदे गए पैरों तले- सूअर के पिल्ले हमारे थे।" सियार-गीदड़ बड़े ही गुस्से में लगते थे और लोमड़ियां दुम हिला कर उनके नारों का जवाब दे रही थीं।, "चम जम खरचम-ऊंचा सियाग परचम" और "बे-गुनाह मारा गया-खरचम जो हमारा था।" इस मातमी जलूस के पीछे-पीछे चलने वाली पुलिस की गाड़ी सबको सावधान कर रही थी कि "सरकार आतंकवाद को सख्ती से दबाएगी। कातिलों को जल्द ही पकड़ा ज़ाएगा।" इत्यादि।

जब खरचम की लाश का अंतिम संस्कार हुआ और सभी पशु वनांचल को लौटे तो क्या देखते हैं कि वन में जंगली लकड़ी के कई डिपो आग में जल रहे हैं। आग की लपटें आकाश छू रही थीं और धुआं हवा के ज़ोर से कभी पूर्व दिशा में तो कभी पशिचम की ओर आता-जाता था। सब पशु जाति भेद छोड़ कर

भयभीत हो गए। आग बुझाने के दमकल आ पहुंचे और घंटों आग के साथ झूझते रहने के बाद उन्होंने आग पर काबू पा लिया।

सभी वानर पेड़ों पर से उतर आए और खुले मैदान में मंत्रणा करने लगे। उन्होंने कई झुंडों में अपने को तकसीम किया और वनांचल को छोड़ कर जाने की ठान ली। जहां गोलियां चलती रही, वृक्षों और पेड़ों को जलाया जाए, वहां पर वानर कैसे गुज़ारा कर सकते हैं। अतः रातों-रात उन्होंने प्रस्थान किया और कहीं चले गए, यह बहुत दिनों तक किसी को पता न चला। दूसरे दिन सारे वनांचल में कर्फ्यू लगा दिया गया था। इसलिए सब पशु खामोश थे। जब दो दिन के बाद कर्फ्यू में छूट दी गई तो पेड़ों पर लगे पोस्टरों द्वारा हिरन-हांगुल जाति को वनांचल छोड़ कर चले जाने को कहा गया था। यही नहीं जितनी भी हत्याएं हुई थीं उनकी ज़िम्मेवारी भेड़िया इजतिमाह ने ली थी।

वनांचल की बिगड़ती दशा और अशांत वातावरण एवं आतंकवाद को रोकने में नाकाम रहने पर राजधानी से हुकुम हुआ कि वन-प्रमुख को बदला गया है। नतीजा यह हुआ कि शहर में भी आग की वारदातें नूमुदार हुई। जाने वाले वन प्रमुख ने राजधानी के खिलाफ धुआंधार तक़रीर की। अपनी अयोग्यता का ज़िम्मेदार राजधानी को ठहराया और यह भी इनकिशाफ किया कि वनांचल में विदेशी शस्त्रों के कई भंडार सरहद पार से लाकर आतंकवाद को भड़कावा देने के लिए पाए गए हैं। भेड़िया इजतिमाह और हिटमैन गोली कांड में सक्रिय भाग ले रहे हैं। इस सबके लिए उसने सरहद पर तैनात रक्षकों को ज़िम्मेवार ठहराया।

दूसरे दिन नए वन प्रमुख ने चार्ज संभाला और घोषणा की आंतक को समाप्त करने के सभी प्रयास किए जाएंगे। चेतावनियों भरा भाषण रेडियो से प्रसारित हुआ।

दो दिन पूर्व कर्फ्यू रहने के बाद जब ढील दी गई और जोशीला हिरन घाट की ओर जा रहा था तब कहीं से मुंह छुपाए बंदूकधारी ने उसको गोलियों से छलनी कर दिया। जब जोशिला हिरन धराशाई हुआ तो उसका तड़पता मुह उल्टे पोस्टरों से छुपाया गया जिस पर लिखा था, "यह उत्तर है तुम्हारे पोस्टर का। वनांचल से चले जाओ राजधानी के जासूसो।"

☆☆☆

आतंकवादी गतिविधियों को देखकर नये वन-प्रमुख ने सारे वनांचल में निश्चित समय के लिए कर्फ्यू लगा दिया। फिर भी रात को पुलिस-गश्त के साथ गली कूचों में दौड़ते भागते पशुओं के गमन की भनक मिलती थी। इका दुका हत्याएं भी हुआ करती थी। कर्फ्यू में छूट के समय किसी किसी गली में अहतिजाजी जलसे भी हुआ करते थे। समाचार पत्रों में आतंक और अल्पसंख्यक पशुओं के मृतक शरीरों के चित्र भी छपते थे। शीघ्र ही समाचार पत्रों के लेखन, समाचार और संपादकीयों की रूप-रेखा और स्वरूप में बदलाव आ गया, क्योंकि लगता था कि सभी आंतकवादियों के दबाव में आ कर अपने पत्र को प्रकाशित कर रहे हैं। हिरन-हांगुल जाति को खुलेआम चेतावनियां दी जा रहीं थी कि वे पशु अंचल छोड़ कर चले जाएं। जोशीले हिरन की लाश को पुलिसकर्मी उठा कर ले गये थे और उन्होंने ही उस का अंतिम संस्कार भी किया था।

भेड़िया गली में बड़ा रोश था कि कर्फ्यू लगा दिया गया है। उन की नकल-ओ-हरकत पर सचमुच में पाबंदी लग गई। पर वह भी उस्तादाना तरकीबों के बारे में सोचने लगे। उन्होंने कैसेट, नारों से भर दिये और रातों रात डरा-धमका कर सभी सियार-गीदड़, रीछ, सुअर और लोमड़ी जात पशुओं में बांट दिये। सब से कहा गया कि किसी विशेष दिन जब खोखले सींग बजाये जायेंगे उस सारी रात को कैसेट, टेप रिर्काडों पर बजाये जायें। मरता क्या न करता। विदेशी बन्दूक दिखा दिखा कर सब को कैसेट लेने पर मजबूर होना पड़ा। सियार-गीदड़ क्षुब्ध थे इसलिए कि गीदड़जू को क्यों पुलिस उठा कर ले गई। केवल इतना कहा जाता था कि "सुरक्षा का मामला" है।

कर्फ्यू में ढील के समय चहल पहल, दौड़-धूप, वाहनों का चलना, समाचार-पत्रों की बिक्री और पूछताछ के शोर शराबे में किसी को यह नहीं मालूम कि हांगुल-हिरन अंचल से कितने उछलते-दौड़ते-फुदकते वनांचल छोड़ कर चले गये। दरअसल बात यूं थी कि एक बूढ़ा सियार हांगुल हिरन जाति के बीच रहता था और स्थिति को भलीभांति भांप गया था, सारी सारी रात हांगुल और हिरनों के झुण्डों मे जा कर विनती कर रहा था कि वे वनांचल छोड़ कर जायें क्योंकि यहां उन की खैर नहीं। वह कहता फिरता था, "अपनी जान बचाओ। हमारे नवयुवकों पर विश्वास न करो। अब सद्भाव से रहने के दिन नहीं रहे। नेता लोग झूठ बोल रहे हैं। जाति-भेद भड़काया जा रहा है। घास जलाई जायेगी। वन संपत्ति

नष्ट कर दी जायेगी। खुदा का खौफ अब नहीं रहा। बन्दूक वनांचल में आ गई है। अपने पशु ही अपने पशुओं का शिकार करेंगे। तुम अल्पसंख्यक हो, जल्दी ही अपना नामोनिशान मिटा दोगे। बचना चाहते हो तो पलायन करो। सरकार बेसुध पड़ी है। रिश्वतखोर और निकम्मी पुलिस आप को बचा नहीं पायेगी। विदेशी बन्दूक बड़ी सशक्त है। पुलिस भी उस से डरती है, निकम्मी! सोच लो और जल्दी कुछ करो।"

बूढ़े सियार की बातें सुन कर युवा हांगुल अपनी जात बिरादरी से मुखातिब हुआ, "पलायन तो हम कर सकते हैं, उस में कोई कठिनाई नहीं, पर अपनी मिट्टी से, जन्मस्थल से, अपनी परम्पराओं और परिवेश से कटने का दर्द क्या सहन कर पायेंगे।"

"ओ शायरी मत करो, बचना है तो, फुदकते ही वनांचल छोड दो, चलो।" एक पतले-सूखे हिरन ने कहा। "जो चले गये उन्होंने किसी से मशवरा नहीं किया। गठरी बांध ली और फुदकते-उछलते चले गये।"

"हां, जान बच गई तो लौट कर आयेंगे।" हिरनियों ने जैसे सहगान में कहा।

सोच विचार और मंत्रणा के बीच आवाज आई, "शूं शूं शूं शूं।" सभी घबरा गये। 'गोली' वातावरण में खामोशी छा गई। कुछ देर के बाद जा कर देखते हैं कि बूढ़ा सियार गोली खा कर जान दे रहा था।, "मार डाला, खूंखारों ने। अब वनांचल बसने के योग्य नहीं। देखो क्या थमा गये.... मेरे हाथों में। देखो... हे खुदा" यह कह कर वह दम तोड़ बैठा।

"बूढ़े सियार को मार डाला। यह देखो इस के हाथ में क्या संदेशा लिख गये हैं?"

"क्या है, लाओ मैं पढ़ देता हूं..... अरे मुखबिर! जासूस के जासूस.... हम तेरी आज़ादी के लिए लड़ मर रहे हैं और तू हांगुल-हिरन जाति का हिमायती बनता फिरता है। खा ले गोली और भुगत अन्जाम।" लजीले हिरन ने पढ़ कर कहा, "यह इस का हाल हुआ, हमारा क्या होगा?"

इतनी देर में ही तेज़ रफ्तार पुलिस जीप आ गई। उसे देखते ही सभी भाग खड़े हुए। केवल वृक्षों की आड़ से सभी देखने लगे कि क्या मामला है। जीप

हांगुल गली के नुक्कड़ पर रूक गई। तीन पुलिसकर्मी नीचे आये और धीरे धीरे एक युवा हिरन की लाश निकाल कर हिरन-हांगुल गली की ओर ले गये। एक पुलिसकर्मी उस का बिस्तरा और बक्सा वगैरा ले कर पीछे पीछे चलता आया। सब जान गये कि इस हिरन को भी कहीं पर मारा गया है और वह भी सरकारी नौकरी पर। अपना कर्तव्य का पालन करते करते। उसे कब मारा गया पुलिस नहीं बता सकी। हांगुल-हिरन जाति भयभीत हो उठी। सब ने एक दूसरे से कानाफूसी शुरू की और उसी दिन शाम को प्रत्येक गली से खोखला सींग बजाया गया। क्षण भर में हर गली कूचे, हर मकान और हर कंदरा से कैसेट बजने लगे। शोर... .. चहुं दिशाओं से शोर। अवाज़ें और नारेबाज़ी।

"आयेगा जी। आयेगा जी, आज़ादी वह लायेगा-जान पर वह खेलेगा सरहदी कहलायेगा। राजधानी की नहीं चलेगी-केन्द्र की नहीं चलेगी, गुलाम सरकार! गुलाम सरकार! हमें है दरकार आजाद सरकार आजाद सरकार। वनांचल को खून से सींचा। वनांचल हमारा है। केन्द्र के जासूसों की- नहीं चलेगी यह सरकार। अपना खून बहायेंगे - वनांचल बचायेंगे। केन्द्र के जासूस - नहीं दरकार, नहीं दरकार। आज नहीं तो कल -वन आंचल से चल हिरन हांगुल अब भी सम्बल-छोड़ के चला जा, वनांचल। "

रात भर खोखले सींग और खाली कनस्तर बजते रहे और कैसेट का तुमुल नाद सारे वातावरण को भयावह बना गया और हिरन हांगुल, झुण्ड अपनी गलियां, और पवित्र मिट्टी छोड़ कर तेज़ तेज़ फुदकते वन आंचल छोड़ चले। सुबह सवेरे कई दिशाओं से आग के शोले नमूदार हुए।

एक विदेशी संवाददाता ने स्वदेशी संवाददाता से पूछा, "यह क्या जल रहा है?"

उत्तर में कहा गया, "किरण जल रही है।"

"कौन सी किरण" उसने फिर पूछा।

"वनांचल मं 42 वर्ष पूर्व एक महात्मा को सद्भाव और भाईचारे की किरण दिखाई दी थी, वही किरन आज जल रही है।"

"और यह शोर?" उस ने एक और प्रश्न किया।

"अभी और भड़क उठेगा। 40 साल का इतिहास है। जब जब वनांचल

के नेता को भूख लगती है, तन की, मन की, धन की, और बाहों में सारे जगत को समेटने की तो ऐसा ही शोर मचाया जाता है।"

"और नतीजा क्या होता है?" एक और प्रश्न।

"धन वर्षा। केन्द्र से, राजधानी से। पर्यटकों से, आस्थास्थल के चढावे से, सड़क सड़क पर रखे दान-पात्रों से। अगर अब भी कुछ नहीं समझे तो पत्रकारिता छोड़ दो।"

"गुस्सा क्यों होते हो? वनांचल का पोलिटिक्स तुम मुझ से अधिक जानते हो। मैं भी तुम जैसों से ही पूछ पूछ कर अपनी स्टोरी तैयार करता हूँ।" विदेशी ने स्वदेशी से कहा।

"सो तो ठीक है। इसलिए कहता रहता हूं कि पुस्तकें पढ़ो जितनी पुस्तकें वनांचल पर लिखी गई हैं इतनी किसी राज्य पर नहीं लिखी गई।"

"एक पढ़ने बैठता हूं तो यहां परिस्थितियों का क्रम इतनी रफ्तार से बदलता रहता है, कि एक कहानी पूरी नहीं हुई दूसरी रिपोर्ट तैयार करनी पड़ती है।"

"इसीलिये हमारा यहां दम घुटता है। पर एक बात है जो हमें यहां टिकाऊ बनाती है...."

"चुप क्यों हुए। बात पूरी करो ना " विदेशी ने पूछा।

"सरकारी आसाईशें हमें खूब मिलती रहती हैं। सरकारी मकान में सपरिवार रहना, सरकारी गाड़ियों में आना जाना। टीका टिप्पणी करने के बाद मंत्रियों और ऑफिसरों की खुशामद...." इत्यादि।

वह दोनों बातें कर ही रहे थे कि संवाददाता लेन में किसी ने हथगोले फेंक कर धमाका करवाया। कुछ ही क्षणों में रेडियो से खबर आई कि धमाका भेड़िया इजतिमाह ने करवाया है।

उधर वनांचल की सीमा के एक जंगल में पूर्व वन-प्रमुख ने युवा भेड़िया, सियार, लोमड़ियों के एक जत्थे को संबोधित किया। "मेरे जवानो", हमारी वन भूमि को तुम्हारी हिम्मत और नेक इरादे, पाक जज़्बे को देखकर पूरा विश्वास है कि वह आज़ाद होगी। वनांचल कुर्बानी मांगता है और वह कुर्बानी केवल तुम दे सकते हो। सारे वनांचल के पशु यही चाहते हैं। धैर्य से काम ले कर और नेक

इरादे से हम अवश्य अपने मकसद में कामयाब होंगे। जाओ सरहद पार करके हथियार ला कर रक्षाकर्मियों से अपने वनांचल को आज़ाद कर दो। केन्द्र के कानून हम पर नहीं चल सकते हैं। कल मैं पदासीन था और आज पदच्युत। मेरा कसूर इतना था कि मैं आप को पकड़ कर मरवा न सका। हमें इन माताओं पर गर्व होना चाहिये जो अपने युवा बच्चों को यहां तक अलविदा करने आईं हैं। इन का बुलंद हौसला देख कर, इन की हिम्मत और जज़्बे से सबक हासिल करो। जाओ। अपने इरादों में कामयाब हो जाओ। अलविदा।"

भेड़िया, सियार और लोमड़ी मातायें लोक शैली में लोक गीत गा कर अपने युवा संतानों को विदा कर रहीं थीं। दोनों ओर वीर भाव और कुछ करने के अस्पष्ट स्वप्नों को साकार करने की ललक महसूस होती थी। "जो हम से टकरायेगा- गोली खाकर जायेगा", इस नारे के साथ सभी युवा पशु सीमा पार कर गये।

पूर्व वन-प्रमुख के इस स्थान पर किये गये भाषण का समाचार कहीं नहीं छपा। न सरकार को ही खबर हुई क्योंकि वह हिरन सी.आई.डी. जो रिपोर्ट लिखता पहले ही मरवाया गया था जिसे पुलिस कर्मी जीप में हिरन-हांगुल गली में मृतक रूप में लाये थे। उस की हट को भी जलवाया गया था। यह काम पहले ही सावधानी से करवाया गया था। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी यह साफ कहा गया था इसलिये उस रिपोर्ट को छुपा लिया गया। हां, केवल सरकारी मुआवज़ा देने की घोषणा की गई।

सुबह कर्फ्यू में ढील मिलते ही सियाग जमात के पिछवाड़े में चम और जम जमातियों का जमाव हुआ। जिस में जमशाह ने ज़ोरदार तकरीर की। "खबर. ...दार! मेरे हम जमातियों! देख रहे हो कि वनांचल में क्या हालात दिन-ब-दिन रूनुमा हो रहे हैं? हमारे गीदड़जू को पुलिस थाने में यातनायें सहनी पड़ रही है। उसे डराया धमकाया और पीटा जा रहा है। जो किसी आतंकवाद में शामिल नहीं उसे ही पुलिस उठा कर ले गई। क्या आपसी सदभाव को बढ़ावा देने वाला वनांचली पशु विदेशी ताकतों का एजेन्ट हो सकता है?" जवाब में "नहीं, नहीं" की आवाज बुलंद हो गई।

"हम ने आज तक हर खतरे का सामना किया.... पर अब लगता है. .. जो देशहित और जातिहित का काम करते हैं उन को ही सरकार न पहचानती

है और न आश्वासन में लेती है। जो पूरे मक्कार हैं, आपके सामने एक बात, वनांचल के बाहर दूसरी बात और राजधानी में जा कर कोई और बात करते हैं, सरकार उनकी ही सुनती है..... जा कर देख लो हांगुल-हिरन वनांचल छोड़ कर जा रहे हैं ..... और पदच्युत पूर्व वन-प्रमुख, जो हमारा हितैषी नेता बनता था विदेश जा रहा है.... और हम आतंकवाद का मुकाबला करने के लिये हैं.. .. नहीं जायेंगे हम कहीं वनांचल छोड़कर..... हमारे गीदड़जू को फौरन छोड़ दिया जाय नहीं तो हम को भी हथियार उठाने पर मजबूर न किया जाय...." भाषण जारी था कि पुलिस ने सारे अहाते को घेर लिया और जो जम और चम जिस रास्ते से भाग सकता था भाग गया पर जमशाह को पुलिस हिरासत में ले गई और सियाग जमात के हेड ऑफिस की तालाबन्दी की।

सारे वनांचल में चर्चा का एक ही विषय था कि हांगुल हिरन क्यों वनांचल छोड़ के जा रहे हैं। हालांकि सभी ने हांगुल हिरन गली के प्रत्येक पेड़ पर चेतावनी के पोस्टर पढ़े थे जिनपर लिखा था कि वे एक सप्ताह में वनांचल खाली करें। डर भी सब को लगने लगा था। पर आश्चर्य से सब यही प्रशन एक दूसरे से पूछते जाते थे।

कई दिनों तक सोये पड़े रीछों ने जब नये हालात का जायज़ा लिया तो भूरा-बूढ़ा रीछ दायरे में बैठ रीछों से संबोधित हुआ, "अब हमारा सूफीवाद किसीको नहीं भाता। हमारे गायन की महफिलों में वह पुरानी रौनक नहीं रही। दिल छलनी होता है जब खाली और सूनी हांगुल-हिरन गली देखता हूं। सूफीवाद को समझने और व्याख्या करने वाले ही चले गये। वजद और आनन्द का अनुभव करने कराने वाले ही चले गये। दीवानापन छाया है मूर्ख भेड़ियों पर जो सरहद पार के आकाओं के झांसे में आ गये। हराम के हथियार और दीनार पाकर आखिर में ज़िल्लत की ज़िन्दगी बसर करेंगे। सुख चैन से रहना एक बात है और अन्देशों और छुपछुपाके रात के अंधेरों में घूम फिरके बुरे काम करना दूसरी बात है।" यह कह कर बूढ़ा रीछ रोने लगा और उस के अश्रु-कण उसकी दाढ़ी से लुढ़कने लगे। एक शिशु रीछ आया और वह सूफीवाद का गाना गाने लगाः"

मैं कैसे गावूं आज वह गीत
जो मेरे मीत को भाये।

हिय छलनी है, सूनापन
प्रिय से कैसे हो मिलन।
वन-आंचल पर ग्रहण लगा
गली गली छिड़ा है रण।

आखिर में शिशु रीछ ने अपनी ओर से भी तुक जोड़ दिया जिस को सुनते ही सारे रीछ मुस्करा उठेः

भेड़िये लाये परदेस से बम
शलगम खा कर सोये हम॥

"अबे ओ कम-अकल बच्चे, तू हंसी उड़ा रहा है हमारी। बड़ा हो के पछतायेगा जब तेरी शनाख्त नहीं होगी। पूरा आवारा समझा जायेगा, पूरा आवारा।" भूरा रीछ गरज उठा। "वन आंचल से ही हमारी पहचान है। अरे बुद्धिजीवी हांगुल चले गये तो समझो अकल का फुकदान रहेगा। हां.....आं।" वह और भी कुछ कहना चाहता था कि उसी समय हिटमैन भेड़िया के हामियों के नारे समीप ही से बुलंद हो गयेः

"नहीं होगी उस से चूक- जिस के हाथ में हो बंदूक"

"राज करेगा मांसखोर-जब आयेगा जंगल दौर"

☆☆☆

करामाती बाबा की समाधी और करामाती ढाबा के पिछवाडे में जंगल और पथरीली भूमि थी उसे सरकार ने विस्थापित हिरण-हांगुल जाति के लिए 'फरारगाह' नाम से अस्थाई तौर पर कब्ज़े में दी। इसके दो कारण थे, एक यह कि भूमि सुरक्षित समझी जाती थी और दूसरा यह कि राजमार्ग बिल्कुल समीप था। अपनी सुरक्षा और जीवन यापन के लिए सरकार ने सारे प्रबंध करने का वायदा भी किया। हज़ारों वर्षों से सुंदर-वनांचल में रहने वाले हिरन-हांगुल आज बे-वन, बे-घर और बे-चैन हो गए थे। अपने वातावरण, जलवायु और जन्मस्थली से छूटने का दर्द उनकी आंखों को देख कर ही पता चलता था। मुरझाए चेहरे, जुगाली करते मुंह, थरथराते पग और अपने भविष्य से अनजान प्राणी केवल दया के पात्र ही तो थे। अपनी व्यथा दूसरों तक व्यक्त करने में असमर्थ। संतोष से

जीवनयापन करने वाले, लजीले, जनमजात संशयी, हर खूंखार पशु से डरने वाले, अपनी रक्षा आप न कर सकने वाले जीव खामोश थे। केवल दिल में उनको बहुत कुछ खो जाने की व्यथा और रोष। होंटों पर मृत्यु की-सी खामोशी, झुंड के झुंड, अपना डेरा डाले आसरे की प्रतीक्षा में खुले आकाश तले बैठ गए। केवल २४ घंटे गुज़ारने के बाद ही उन्हें लगा कि यहां नारों का कोई हंगामा नहीं है। चंदेक युवा हांगुल-हिरन अपने सजातीयों की देखभाल और व्यवस्था के लिए खूब दौड़धूप करते थे। उन्होंने अपनी बस्ती का सरकारी नाम नामंजूर किया और उसके बदले 'करारगाह' नाम रख दिया।

इस विस्थापन से सबसे अधिक लाभ करामाती ढाबा के मालिक को हुआ क्योंकि उसकी दूकानों से कई साल का जमाशुदा स्टाक कुछ ही दिनों में खत्म हुआ। नया माल धड़ाधड़ मंगाया गया और कुछेक नई दुकानें तेज़ी के साथ बनाई गईं।

करामाती बाबा की समाधी के सिवा कोई आस्था स्थल समीप नहीं था इसलिए सुबह शाम हिरन-हांगुल जाति वहीं आकर बाबा के जैसे अनुयायी हो गए। फूल, अगरबत्ती, फुलियां, खजूर, बतासे खूब बिकने लगे और करामाती प्रसाद जम कर बंटने लगा। अस्थाई तौर पर इन वस्तुओं की बिक्री करने वालों की संख्या बढ़ने लगी।

'आप अपनी जन्मस्थली छोड़ कर क्यों आए', एक प्रेस संवादाता ने एक बूढ़ी हिरनी से पूछा। 'अपनी इज़्ज़त-ओ-आबरू की रक्षा हेतू। अपनी जान बचाने के लिए' उसने उत्तर दिया।

'वापस जाओगे?' दूसरा प्रश्न पूछा गया।

'सहर्ष। जब आंतकवाद खत्म होगा। पशुवाद समाप्त होगा। कानून का राज होगा। सद्भावना, सहयोग, सहानुभूति और समता का जब राज होगा। जब सुख और समृद्धि के लिए पूरी कोशिश की जाएगी, जब केवल नारों पर जीवन व्यापन न हो, जब कट्टरपन समाप्त होगा, अलगाववाद और खूंखारपन समाप्त होगा तब जायेंगे" यह उत्तर सुन कर पत्रकार हैरान हो गया। जैसे बूढ़ी हिरनी ने अपने जीवन में राजनीति शास्त्र का अध्ययन-पालन किया हो। उसका फोटो खींचकर पत्रकार चला गया। करारगाह में किसी यात्रा पर आए हुए यात्रियों की भांति डेरे पे डेरा डाले विस्थापित रहने लगे। उन्हें केवल एक ही आशा थी कि

वह जल्द ही वापस चले जाऐंगे क्योंकि सरकार आतंकवाद पर नियंत्रण जमाने में सफल होगी। एक विदेशी पत्रकार ने एक हांगुल से पूछा, 'यहां आकर कैसा लगता है?' तो उत्तर में समीप खड़ी हांगुली ने कहा, 'दावानल ही दावानल'।

"और सुविधाए?" दूसरा प्रश्न।

'न होने के बराबर' दूसरा उत्तर

'सरकार ने क्या दिया?' तीसरा प्रश्न

'वादा, सुबह वादा, शाम वादा। आता है एक तो तो दे जाता है वादा, जाता है दूसरा तो दे जाता है वादा। जो आज़ आता है वह दुबारा नहीं आता' तीसरा उत्तर ज़रा लम्बा ही था पर पत्रकार खामोश हो गया केवल विदेशी स्माइल फिज़ा में बिखेर गया।

इतने में जल बांटती हुई गाड़ी आ गई और सभी पानी का राशन लेने चले गए और पत्रकार फोटो पे फोटो खींचता गया। जैसे वह इतिहास को तसवीरों में बंद कर रहा हो।

इन विस्थापितों से मिलने सब से पहले वह वानर आए जो इन से पहले वनांचल छोड़ आए थे। सब के सब निराश और उदास पर घूमने फिरने और आज़ादी के साथ रहने का लुतुफ उठा रहे थे। भय उनको किसी का नहीं था। न ही कोई सियार-गीदड़ की उकसाहट, तैश और कूटनीति। न किसी गली में ही घूमना-फिरना। दिन रात कहीं से कहीं तक आने-जाने में कोई रूकावट नहीं। सारे गली-कूचे, पेड़-वृक्ष जैसे अपनी मिलकियत थी। फल भी खाने को खूब मिल रहे थे, इसलिए वह नए वातावरण और नई परिस्थतियों में अपनत्व महसूस करते थे पर भय और आतंक से आशंकित रहते थे।

उधर पुलिस गीदड़जू से पूछताछ कर रही थी कि वह कालू भेड़िये और आए दिन होने वाली हिंसाओं के पीछे कौन और किसका हाथ है, यह बता दे। पर वह अनजान और अनभिज्ञ होने का दावा करता था। इसलिए उसे पुलिस के गुप्त 'राहत केंन्द्र' ले जाया गया जहां पुलिस हर अभियुक्त पर सख्ती करती है और सच उगलवाती है।

गरम शोलों से भरी तपती ट्रे के सामने उसे डंडे से पीटा गया । कमर पर चोट ऐसे की गई कि औंधे मुंह शोलों पर गिरने का भय था तो गीदड़ चिल्ला

उठा, 'बोलता हूं। का...लू कहां गया कुछ नहीं पता पर हिटमैन ने एक बार कहा-सीमा पार चला गया। दस बीवियों के साथ घर बसाने'

दूसरी चोट पड़ने के साथ पूछा गया, 'हिटमैन कहां चला गया?'

शोलों में कूदने से बचते-बचाते ही उसने कहा, 'अंडर-वन चला गया'

'झूठ बकता है, इसको पहला इलेक्ट्रिक शॉक दो, सच बोल देगा'

'ना, ना ना, ऐसा न करना, जितना जानता हूं उतना बता दिया।' गीदड़जू ने हाथ जोड़ कर कहा। पर मूंछल सिपाही भौहे तरेर कर कहने लगा, 'लगा दो पहला शॉक'। कई सिपाहियों ने गीदड़जू को पकड़ कर लिटा दिया और एक ने दो हाथों में दो लंबे कील उसके माथे के दोनों ओर टच कराए और वह चीख उठा। 'पंच-शील, पंच शील' फिर उसके मुंह से झाग निकल गई और थोड़ी देर के लिए जैसे होश गंवा बैठा। फिर अर्ध निद्रा जैसी हालत में बोला, 'पहला पाठ-सब को आश्वस्त रखो और अपना काम अंजाम दो।' मूंछल पुलिसकर्मी कुछ भी न समझ सका, 'बकता है, बाकी कल'। होश संभलने के बाद दिन भर गीदड़जू चकरा रहा था।

दूसरे दिन फिर गीदड़जू ने किसी भी जानकरी से इनकार किया इसलिए पुनः इलेक्ट्रिक शॉक दिया गया। छटपटाहट के बाद मुंह से झाग छोड़ने के बाद गीदड़जू बोल उठा, 'दूसरा पाठ-इतना झूठ बोलो कि सच लगे। दो शॉक दो पाठ'।

तीसरे दिन गीदड़जू आधी हिम्मत के साथ चल सकता था और पुनः शॉक की सज़ा खाने का भागीदार हुआ। शॉक के बाद अपनी बेसुधी में ही बोल उठा, 'तीसरा शॉक-तीसरा पाठ सब में भाई बधुंवाद की बात पर ज़ोर दो पर अलग से सब में बंटवारे की भावना जगाते रहो।' इतना कह कर वह बहुत देर तक बेहोश रहा।

चौथे दिन लंबा शॉक लगने के बाद गीदड़जू बोल गया, चौथा शॉक चौथा पाठ-'किसी भी पशु क्या मनुष्य जाति में एकता न रहे। गीत एकता के गाते जाओ और कार्य विघटन के करते जाओ।'

पांचवें दिन उसे चलने-फिरने की हिम्मत नहीं थी। इसलिए थोड़ा-सा सहारा देकर लाया गया। मार-पीट कर्मी ने बड़े नरम लहजे में कहा, कौन सा पाठ बता रहे हो?'

'न .... ही जान....ते, पंचशील के, राजनीति के आदर्श जिन्हें सुंदरवन में अपनाया गया है, अपनाया जाएगा..... जानते हो पांचवां और आखिरी पाठ क्या है..... सारे मुल्क का धन केवल सुंदरवन के विकास पर खर्च हो चाहे बाकी देश भुखमरी का ही शिकार क्यों न हो.... इसलिए पहले चार पाठ प्रेक्टिकल में लाओ और मक्कारी से, जालसाजी से, लालच से, धमकियों से, अलगाववाद की नीतियों से केवल अपना काम साध लो। अपना कुंबा और अपनी जाति का हित सर्वोपरि हो, समझे।'

'हिंसा कौन फैला रहा है' मारपीट कर्मी ने पूछा।

'बंदूक... बंदूक की राजनीति... कट्टरपन। सियाग जमात का इससे कोई लेना-देना नहीं।.... तुम क्या जानो..... करो अपना पांचवां शॉक शुरू और मुझे मुरदा पाओगे। तुम्हारे कंधे पर फूल लग जाएगा। तुम्हारा भी कोई पांच पाठ का आदर्श कायदा कानून होगा।'

'नहीं! छोड़ दो इसे। ले जाओ। नहीं! पांचवां शॉक खा कर कुछ न कुछ उगलेगा, सच क्या है?' मारपीट कर्मी का हुकुम था।

पांचवें शॉक के बाद गीदड़जू कुछ भी नहीं बोला। कई घंटों तक बेसुध पड़ा रहा। कुछेक दिनों में थोड़ी-सी हिम्मत बटोर पाया तो उसे रिहा किया गया पर हर रोज़ पुलिस थाने में रपट कराने की आज्ञा के साथ।

गीदड़जू के रिहा होने की सूचना हिटमैन भेड़िया को मिल गई और उसने एक नवसिखिये बंदूकधारी को उस का पिछलग्गू बना दिया। ताकि जाना जाए कि सियार-गीदड़ बरादरी के क्या प्रोग्राम हो सकते हैं। एक दिन सायंकाल से पहले जब गीदड़जू पुलिस चौकी के बाहर आ रहा था तो वानरी ने उसके सामने भिक्षा का हाथ फैलाया। 'उसके नाम पर दो एक रूपैया, पांच रूपैया... दस रूपैया, जिसने क्यूज़ाइन और कल्चर साथ-साथ चलाया'... मसालेदार मुरदा मांस पका कर खिलाया, नाच-गाने, गीत-संगीत के साथ'।

'अरी वानरी तू। कब दारोगा और पुलिस के गुप्त चंगुल से छूटी?' गीदड़जू ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

'सब खत्म। कोल्हू नचाना, गीत गा गाकर कोठे पर दाद-संवाद नकद प्रसाद प्राप्त करना। अब सिनेमाघर बंद, शराब की दुकान बंद, कबाव पकवान

सांयकाल से पहले पहले नहीं तो शूं शूं शूं। हा..... हा..... दे ना एक रूपैया....।' वानरी नटनी भिखारिन की भांति आर्द्र लहजे में बोली।

'अरी तेरी जात के वानर वनांचल छोड़ कर चले गए। चल... किसी वानर गली के छोर' गीदड़ ने सहानुभूतिपूर्ण कहा।

'हर गली में शूं... शूं... शूं...। अच्छा हुआ चले गए वानर। राज करेगी अकेली वानरी। वानर गली और वनांचल पर।' ऐसे बोली वानरी जैसे कोई मलंग बोल रहा हो।

'चल कोई समझ लेगा शराब पी रखी है। लोग इक्ट्ठे हो जाएंगे।' गीदड़जू ने कहा।

'हो गई नायाब.... सारी शराब.... बाकी रह गया मांसल शरीर.. और यह सुंदरवन.... लग गई इसको भी आदम नजर.... खा जाएगा उसको तेल जगत का पैसा.... गांजे चरस का पैसा.... सब बनकर आएगा बंदूक, ग्रेनेड, गोला-बारूद.... मचल उठेगा तू.... तेरा वंशज... वनांचल का प्राणी.. धन का लोभी.... कठमुल्ला बन जाएगा हर प्राणी.... अपने पराये की नहीं रहेगी पहचान.... क्या जानवर क्या इनसान...दे? दे ना? कुछ नक़द करूं मैं कुछ आहार।' सचमुच में लगता था कि वानरी जैसे पीर फकीर की भांति बोल रही है। गीदड़जू उसे कुछ देर ताकता ही रहा और वह हाथ पसार कर एक टक निहारती रही।

'चल तुझे फलाहार कराऊंगा।'

'तेरी सरकारी कोठी पर। या सरोवर के किनारे तेरे बंगले पर।... बोल... तेरी गीदड़ी नोच लेगी तेरी चमड़ी और मेरे बाल... फलाहार करायेगा. नेतागिरी करता है.... नेतागिरी करता है.... लोगों को उकसाता है, भड़काता है। अपना कमिशन खाता है।.... हर धंधे में टांग अड़ाता है। सर पर पट्टियां बांध कर घायल का ढोंग रचा कर सरकारी माउज़ा पाता है... चम और जम मवालियों.... को भले लोगों के पीछे दौड़ाता है। चालबाज़ और जालसाज़ बनता फिरता है। राजनीति का दम भरता है.... आज भी हाजिरी देने गया था थाने में' वानरी के यह शब्द कहते-कहते भीड़ जमा हो गई और गीदड़जू कुछ आगे कहे सुने दुम दबाकर भाग गया।

'भाग गया नेतागिरी का दम भरने वाला जालसाज़। मुर्गीचोर।' वानरी पूरी सड़क के बीच बोल रही थी और हर राहगीर उसकी ओर देख कर सुनता रहा, " यहां के सब नेता चोर, ढोंगी के ढोंगी, साले कुर्सी के लोभी, चालबाज और जालसाज़.... थू थू..." यह कह कर वह उन सब पर बरस पड़ी जो भी वहां अटक गया था, "क्या देख रहे हो.... झूठ बोल रही हूं? अरे अभी आएगा कोई नकाबपोश और स्वागत करोगे उसका फिर.... हा हा हा.... मार देगा वह किसी को तो रो पड़ोगे हाय हाय करके.... आज बंदूक ताकत की चीज़ है तो बोलोगे 'बंदूक ज़िंदाबाद' और फिर धन का ज़ोर होगा तो बोलेगे ... नारे बुलंद करोगे. .... विकास के नाम पर धन दो..... गन-कल्चर समाप्त करने के लिए धन दो. ..... बेरोज़गारी की समाप्ति के लिए धन दो.... तालीम के फैलाव के लिए धन दो.... हा.... हा... हा... मेरी तरह हाथ फैलाते- फैलाते जीवन समाप्त हो जाएगा.... हा.... हा... देश-भिखारी, जग भिखारी" पगली की भांति बोलती, उछलती वानरी भीड़ में खो गई।

थोड़ी देर में ही धमाका हुआ और ग्रनेड के फटने की आवाज चहुं ओर फैल गई। कुछ देर बाद पाया गया कि वानरी के शरीर के टुकड़े सड़क पर फैले पड़े थे।

☆☆☆

जब से आतंकवाद ने अपने प्रभाव में वनांचल को घेरना शुरू किया सियार ने अपने लिये करीब बीस गज़ की दूरी से एक ऐसे स्थल में कन्दरा खोदना आरम्भ किया था जिसका अनुमान कोई नहीं लगा सकता था। दरअसल एक मकबरा था उस आखरी शेर का जो सुन्दर वन के वनांचल का नामी नेता हुआ करता था। यह मकबरा एक सरोवर के किनारे था जिस पर निगरानी के लिये पुलिस का पहरा भी था। पर सब की नज़रें बचाकर सरोवर का कुछ हिस्सा तैर कर सियार कन्दरा रात भर खोदता रहता और मिट्टी को पंजों से निकाल कर पानी में मिलाता जाता था ताकि कोई निशान न रहे। दिन भर कहीं बेसुध पड़ा रहता था सब से बच कर। सारे काम छोड़ कर। गीदड़जू ने बड़ी कोशिश की सियार-यार को ढूंढने की। पर सब बेकार।

हथ गोलों का फटना, गोली बारी, क्रास फायरिंग अब सारे वनांचल की

ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुका था। पशु पक्षी और प्राणी सभी इस माहौल के आदी बन चुके थे। समाचार-पत्र मौतनामे बन चुके थे। लूट-खसूट, चोरी, वन सम्पदा का नाश, पर्यावरण में प्रदूषण, बलात्कार और कभी इधर चीत्कार और कभी उधर जन-पुकार एवं हाहाकार। नदी नाले गंदे पानी के ज़हरीले दलदली स्थल बन गये थे। पेड़ों से हरियाली निराली शुष्क शोभा दर्शा रही थी। पर्वत शिख़र हिम की कमी के कारण नंगे हो गये थे। पोखर, चश्मे और सरोवर निर्जल होने लगे। हर गली में सूनापन। दिन को थोड़ी बहुत हलचल पर प्रातः शाम सुनसान। केवल कुत्तों का भौंकना और भेड़ियों की मौज-मस्ती। इस सारे माहौल के पीछे विदेशी धन, रणनीति और गोली-बारूद। नतीजा, रोज़ स्वदेशी खून सड़कों-गलियों में बहता रहे। सुरक्षा और आतंकवाद का नंगा तांडव। नकाब-पोश और वर्दीपोश किस का दोस्त किस का दुशमन। एक है रक्षक दूसरा भक्षक। रोज़ हत्यायें। पीठ के पीछे वार करने की रणनीति का नंगा नाच। मासूम जन-मानस आत्मधाती भेड़ियों के चंगुल में और सूफ़ीवाद-शांति के प्रतीक श्वेत कबूतर को जैसे बाज़ पंजों तले जकड़ कर नोच रहा हो। फिर भी जीवन यापन हो रहा है। सरकार है। वाहन हैं। लोग हैं। पशु हैं और भौतिकवादी साम्राज्य कायम है। एक लूटता है दूसर लूटा जाता है। और एक मरता है दूसरा मारा जाता है। दो दो हुकुम राइज होते हैं और दोनों का पालन होता है। एक का हुकुम घर में बैठो, शांति रखो दूसरे का ऐलान बाहर आओ और हुडदंग मचाओ, ऐसे आरोप गढ़ो और शोर मचाओ-ह्यूमन राइटस की अवहेलना हो रही है।

हिरन-हांगुल जाति के दो एक झुण्ड अभी वनांचल में ही रह रहे थे और सरकार ने उनको सुरक्षित स्थान पर लेकर रक्षा कर्मियों की देख रेख में रखा। वह इसलिये कि कहीं इस प्राणी जात का नामो निशान ही न मिट जाये। खान पान तो उनको मिलता रहा पर घूमना फिरना इजाज़त के बाद। जीवन यापन पर पाबन्दी। किसी प्रकार सांस लेना, खाना पीना और दुनिया को दर्शाना कि हिरन-हांगुल जाति ज़िन्दा है। सरकारी पत्रिकायें बड़े बड़े चित्र छपवा कर मुफ्त बंटती थीं और हर पत्रिका में इस पशुजात की खुशहाली के रंगदार चित्र हुआ करते थे। इस प्रकार सरकार यह कहते नही थकती थी कि "सब ठीक है" और दूसरी ओर आंतकवादी हत्याओं की खबरें! किस पर भरोसा किया जाये। सब परेशान। हाले हैरान।

डेंजर गली में शराब-कबाब की दुकानों पर पहली जैसी गहमा गहमी नहीं थी। न नारे बाज़ी न जलसा जलूस। गली के दोनों छोरों पर सुरक्षा कर्मियों के कैम्प लगे थे जो दूर से ही हर नक़ल-ओ-हरकत पर नज़र रखे हुए थे। भेड़िये भी आपस में कई जमातों में बंटते जाते थे और हर जमात का नया नाम रखा जाता था। अब कूल या हिटमैन ही उनके सरगना नहीं थे अपितु रोज़ किसी भी हत्या की ज़िम्मेवारी नये से नया गुट लेता था। पुलिस की परेशानी बढ़ती ही रहती थी। मुखबिर नाम देकर किसी की भी हत्या की जाती थी, विशेषकर व्यवस्था में साथ देने वाले सरकारी मुलाज़िम की। वानर गली और हांगुल-हिरन वन-छोर वीरान लगता था। जले हुए निर्जीव स्थल खण्डहर लगते थे। पुल जलाये गये और असुविधाओं को बढ़ावा मिला। नकली नोट असली नोटों के साथ चलने लगे। असली चीज़ों के दाम घटने लगे और नकली चीज़ों के दाम बढ़ने लगे। कई एक सरगना भेड़िये पुलिस की गिरफ्त में आ चुके थे पर किसी पर भी मुकदमा नहीं चलाया गया। उन्होंने अपना जुर्म इकबाल किया पर सज़ा किसी को नहीं मिली। उनको राह-भटके नागरिक कहा गया। नये वन-प्रमुख ने जंगजू की संज्ञा दी। गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले आतंकवादी भेड़ियों ने हर समय अपनी नीति बदलनी शुरू की। नये नये उग्रवादी गुट बनने में देर नहीं लगती थी। यहां तक कि राकेट भी चलने लगे और बड़े सुरक्षा कर्मियों को अपने दफ्तरों में ही गोली, बम या राकेट का निशाना बनाया गया और कर्त्ता विदेशी हाथ ज़ोरदार बनता गया।

उधर करामाती ढाबा की समाधी की रोनक इतनी बढ़ गई कि दूर से ही हरी और लाल-गेरूवा रंग की झंडियों की शोभा देखते ही बनती थी। करामाती ढाबा पर लोगों की भीड़ लगी रहती थी। समाधी पर चादरें चढ़ाना, झंडियां लगाना, खीर, हलुआ और अन्य पकवान बांटना और लोगों का जमाव रोज़-ब-रोज़ बढ़ता ही गया। इस तरह दो ग्रुप आपस में बंट गये। हरी झंडी दल और लाल झंडी दल। दोनों दल इस स्थान को अपने धर्म के अनुकूल पवित्र मानते थे। ढाबा के मालिक को एक तरफा छोड़ दोनों इस पर अपना अधिकार जतला रहे थे। इस कारण कभी स्थिति तनावपूर्ण होती थी विशेषकर चढ़ावे के बटवारे को लेकर। यहां तक कि नोबत मुकदमे-बाज़ी पर आ गई।

लाल झंडी दल का दावा था कि बाबा हिमालय की कंदराओं में घोर

तपस्या के बाद यहां पर समाधिस्थ हुआ और कारामाती पत्थर ठीकेरी से नीचे आकर समाधी के साथ सटक गया। यह सारा उनकी तपस्या का प्रभाव था। हरी झंडी दल का मंतव्य था कि बाबा बड़े बुजुर्ग और पीर-मर्द थे। जीवन भर अंडा मांस नहीं खाया केवल दूध पीकर निर्वाह किया और काली लोंगी पहन कर घूमा करते थे। सद्भावना और रवादारी का दरस देते रहे। हर चोपाये को अपने हाथों से पत्ते, घास और फल खिलाते थे। उनके पास मिट्टी का एक बरतन था, दूध पीने के लिये। वही उनकी सम्पत्ति थी।

ढाबे का मालिक इस सब पर चुप था। वह हर महीने अपना सेफ खोल कर धन बटोरता था और जो दो दलों के बीच झगड़ा था वह उस चढ़ावे पर था जो चादरों पर चढ़ाया जाता था।

दोनों ओर से अदालत में शहादतों के बयान कलमबंद हुए। नये नये इनकिशाफात सामने आये। किसी ने बाबा को लम्बी दाढ़ी वाला कहा तो किसी ने सरमुंडा देखा था। किसी ने रूद्राक्ष की माला पहन कर देखा तो किसी ने काली कमली पहनने वाला कहा। किसी ने रोज़ बाज़ारों में भिक्षा का पात्र लेकर मांगते-फिरते देखा था तो किसी ने उसके प्रवचन भी सुने थे।

कुछ युवा उत्तेजकों ने ढाबा के मालिक के भूमि मिलकियत के कागज़ातों पर भी शक किया अतः उनकी नकल भी मंगाई गई। यही नहीं भूमि बेचने वाले की मिलकियत को भी चलेंज किया गया। गरज़ मुक़दमा बढ़ता गया, भड़काया गया। और कभी कभी समाधी के पास हाथा पाई की नोबत भी आती थी और हिरन-हांगुल बीच बचाव करते थे।

आखिर जज ने ढाबा के मालिक को भी अदालत में बुलाया। समन मिलने के बाद भी वह अदालत में हाज़िर नहीं हुआ। बिला ज़मानत वारंट जारी करने पर वह अदालत में हाज़िर हुआ और उससे कई तरह के प्रश्न पूछे गये। जब उससे पूछा गया कि बाबा कौन थे तो उसने उत्तर दिया, "जज साहेब! वह एक चोपाया था।" सारी अदालत में हंसी फूट पड़ी "क्या कहते हो?" जज ने गरज कर कहा।

"मैंने मुक़द्दस किताब पर हाथ रख कर कसम खाई है। इसलिए सच ही कहता हूं। वह एक चोपाया था।"

"मुक़द्दस किताब पर हाथ रख कर कसम खाकर मैंने दो सौ बीस

शहादतें रिकार्ड की हैं, लेकिन किसी ने बाबा की शिनाख्त चोपाये के तौर नहीं की।"

"जज साहेब, दो सौ बीस शहादतों और मेरी शहादत में यही अन्तर है।" ढाबे के मालिक ने कहा।

"सच सच बताओ, बाबा कौन थे, उन का मज़हब क्या था," जज ने पूछा।

"वह चोपाया थे और चोपाये का मज़हब कोई नहीं जानता और यदि कोई.जानता भी होगा..... वह भी चोपाया ही होगा।"

"तुम्हारे ढाबा के साथ लगी ज़ियारत समाधि है या मकबरा?"

"एक चौपाये की क़बर। लेकिन करामाती पत्थर के साथ होने से लोगों का आस्थास्थल। पत्थर के सिवा मेरी मिलकियत। जज साहेब लोगों का विश्वास सर आंखों पर। नहीं तो मेरे काम में बहुत रूकावट है।" ढाबे के मालिक ने यूंही वजाहत की।

जब ढाबे का मालिक अदालत से बाहर आया तो संवाददताओं ने उस से पूछा, "आप से क्या पूछा गया?"

"जो नहीं पूछना चाहिये था। बाबा कौन था। भला बाबा को किस ने देखा-सो भी जीवित। आप ने देखा बाबा की समाधि का स्थल मेरी निजी मिलकियत है। इस पर हक़ जताने वाले आपस में मुक़दमा लड़ रहे हैं, लड़ने दो, मेरा क्या जाता है। बाबा चौपाया था। मेरे लिये महानतम था। कृपालू था। मैंने क़बर को पुख्ता बनाया। अपनी शक्ति से वह करामाती पत्थर को ठीकरी से नीचे लाया। मुझ पर बड़ी दया की। मुझे स्वप्न में पहले आगाह किया पर मैंने स्वप्न जान कर भरोसा नहीं किया। पर करामात हो गई एक दिन.... मुझ पर चोपाया बाबा की मेहरबानी रही, कारोबार बढ़ता ही गया। समीप में बस्ती क्या नगर बसना-बनना शुरू हुआ। अब एक अंग्रेजी माध्यम का स्कूल खोल लूंगा- बाबा के नाम, बस्ती के बच्चे क्यों अनपढ़ रहेंगे। पढ़े लिखे बेकारों को नौकरी में लूंगा. .. बस बाबा की कृपा।"

जज ने दोनों दलों से समाधी खोद कर यह देखने की अनुमति दी कि देख लिया जाये कि बाबा दोपाया था या चौपाया पर दोनों दलों ने इस कार्रवाई

को धर्म सम्मत नहीं माना अतः कई वर्षों के बाद मुकदमा बरखास्त हुआ और समाधी के साथ ही करामाती बाबा स्कूल-अंग्रेज़ी माध्यम शुरू हुआ। हिरन हांगुल जाति के पढ़े लिखे युवा युवतियों को नौकरी मिल गई। ढाबा के मालिक की आमदनी में और इज़ाफा।

इधर जमशाह को रिहा करवाने की कोशिश में लगा गीदड़जू हर दफ्तर के चक्कर काटते थक गया। हिटमैन सुरक्षाकर्मियों की गोली खाकर मारा गया और एक सप्ताह तक स्थिति तनावपूर्ण रही। वानर गली का वन-छोर जलाकर भस्म कर दिया गया। व्यवस्थापकों के परिवार जनों में से एक को अगवा कर दिया गया। फिर गोलियों से छलनी लाश को डेंजर गली के नुक्कड़ पर छोड़ दिया गया। सभी चम और जम न जाने कहां बेसुध पड़े रहे। शायद जान बचाना अपना बड़ा काम समझते थे।

जेल की दीवारों के अंदर जमशाह ढींग मारता रहा कि उसके अनुयाई उसे छुड़वाने के सभी हथकण्डे अज़मायेंगे। अतः जेल से एक दिन सात कैदी फरार हो गये जिसमें जमशाह भी एक था। फरारी कहां चले गये और फरार होने में उनकी मदद किसने की यह विडंबना अभी तक हल नहीं हुई। हां कहने वाले कहते रहे लाखों रूपये खर्च हो गये। फरारियों के लिए जेल के बाहर जीप तैयार थी। जीप किसकी थी कोई नहीं जानता। कौन लाया था, कोई नहीं जानता। आतंकवादियों का साथ कई व्यवस्थापक चोरी छुपे देते रहे इसलिए हर उस नये कदम और नीति की इत्तलाह उन्हें पहले ही मालमू हो जाती थी जो प्रबन्धक करते थे। उन के एजेन्ट कहां नहीं इसलिए अराजिकता का साम्राज्य छा गया था।

गीदड़जू ने अपनी रिहायशगाह पर अपनी सारी सम्पत्ति समेटकर, सारे चीज़ों की सूची बना डाली और सबके सब मुखौटे एक अलग झोली में डालकर गीदड़ी से कहा, "प्यारी गीदडी। मेरा इस वनांचल में रहना कठिन है। मुझे राजधानी की आरे चले जाना होगा। नहीं तो आतंकवाद का शिकार हो जाऊंगा। तू चिंता न करना। कुछ कदम संभालते ही तुझे भी ले जाऊंगा, ठोर ठिकाने लगने के बाद। मैं केवल अपने मुखौटे साथ ले जा रहा हूँ क्योंकि मेरा बहुरूपियापन वहां पर पनप उठेगा। हां रोज़ समाचार पत्र पढ़ते रहना मैं चुप नहीं बैठूंगा। यहां जो कुछ हो रहा है उसकी सही जानकारी जनता तक पहुंचाऊंगा।"

"तुम्हारा दिमाग फिर गया है। जो घर में कुछ नहीं कर सका वह राजधानी जा कर क्या करेगा?"

"रूपया लेकर लौटूंगा। धन से सब कुछ खरीदा जा सकता है। सब पशुओं को भी अपनी ओर किया जा सकता है। आगे इलेक्शन भी होगा, हरेक से पैसा ऐंठना होगा। फिर देखना इन भटके भेड़ियों को मैं ही रास्ते पर लाऊंगा। पर तू चुप रहना, किसी से कुछ न कहना। हां।" गीदड़जू संतोष के साथ अनुभवी नेता की भांति बोला।

"यदि पुलिस ढूंढने आई तो?" गीदड़ी ने संशय व्यक्त किया।

"मैं उनसे पूछ कर जाऊंगा, अनुमति ग्रहण करके जाऊंगा, चिंता न कर।"

"मैं कब तक इंतिज़ार करूंगी?" गीदड़ी ने कहा।

"मैं आता जाता रहूंगा। धन वहां प्राप्त करूंगा और यहां छुपा छुपा के खर्च करूंगा। ऐसा, समझी?" गीदड़जू ने आंखों में स्वप्न संजो कर कहा। गीदडी मुंह फेर कर अन्दर चली गई। "तुम्हारा सियासी तिकड़म। चलाओ जब तक चलता है। औरत जात पर सदा से जुलुम होता आया है, आगे भी होता रहेगा। आतंकवाद में और भी ज़्यादा।" बस इतना कह गई गीदड़ी।

मुखौटा भरा झोला उठा कर गीदड़जू घर से चल पड़ा। बाहर आकर उसके कानों में शोर सुनाई पड़ा। "आ गया जी, आ गया- पशुराज आ गया।" पशु आंचल की सभी लोमड़ियां कतार दर कतार आवाज़ें लगा रही थीं। गीदड़जू भांप गया कि कहीं से सिंहराज का आगमन हो रहा है। उसने चारों ओर नज़र घुमाई। आगे आगे शेर की चाल, गरज के बगैर, कोई जा रहा है और पीछे पीछे लोमड़ियां।

गीदजड़जू दौड़ कर पशुराज को देखने चला। उसकी चाल ढाल निहारता रहा और फिर अचम्भे में डूबा।

"अरे यह क्या रूप धर लिया है, सियार भाई?"

"नहीं जानते?" पशुराज ने आगे चलते हुए कहा।

"हां हां जान गया। क्या मक़बरे से शेर की खाल नोच कर ओड़ ली है?

नकली शेर बन बैठे हो? कहां जा रहे हो?" गीदड़ कई प्रश्न पूछ बैठा।

पशुराज ने कोई उत्तर नहीं दिया। शायद गरज उठता पर पहचान जाता। वह शहर की ओर चल दिया। "ठीक है, मैं समझ गया तुम्हारी चाल। करो राज जब तक चलता है नकली शेर बनकर। मैं राज़ अपने सीने में छुपा के ही रहूंगा।" यह कहकर वह राजधानी की ओर चल दिया और लोमड़ियों का तुमुलनाद फिर उभर उठा, "आ गया जी, आ गया- पशुराज आ गया।"

*****

मोती लाल क्यमू

जन्म : 1933, शिक्षा : बी0 ए0, 1962 से नाटय् लेखन, प्रकाशन : तीन असंगत एकांकी (हिन्दी) 1966 : कशमीरी पुस्तकें : त्रुनोव – 1969 : लल बो द्रायस लोल रे – 1972 : छाय–1972 : नाटक त्रुच–1980 : तोतु तु ऑनु – 1984 : डख येलि चलन – 1994 – नगर वुदॉस्य – 1997 : ओंक अंगी नाटक (सम्पादन एवं संकलन) – 1997 : शाप अकुनन्दुन–2000 : भाण्ड नाटय्म – 2001

सुप्रसिद्ध नाटक–कार, निर्देशक तथा रंगकशी 30 नाटय प्रयोगशालाओं का निर्देश एवं संचालन सम्मान :– साहित्य अकादमी अवार्ड–1982; संगीत नाटक अकादमी अवार्ड–1997; रामकृष्ण जयदयाल हारमनी अवार्ड– 1997; तथा जम्मू कश्मीर राज्य कला, संस्कृति अकादमी से लेखक, नाटक–कार, अभिनेता, रंग निर्देशक के तौर 18 अवार्ड प्राप्त कश्मीरी लोक रंग, नृत्य और संस्कृति के पुनरउधार के लिये काया पशु–गाथा पहले काशुर समाचार में सिलसिला वार छपती रही और अब पुस्तक रूपना।

श्री क्यमू जम्मू कश्मीर राज्य की कला संस्कृति और भाषा अकादमी से अतिरिक्त सचिव के रूप में सेवा नियुक्त हुए हैं। वे कई राष्ट्रीय और राजकीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित हुए हैं।